AmamÜ` AM©Zm

ॐ

संपादक/संकलनकर्ता

आचार्य विशदसागरजी

गुप्त दान

कृति

आराध्य अर्चना

संपादक/संकलनकर्ता

आचार्य विशदसागरजी

प्राप्ति स्थान

✻ **श्री विशदसागर माध्यमिक विद्यालय, बरौदिया कलाँ**
जिला-सागर (म.प्र.) फोन : 07581-274244

✻ **श्री दिग. जैन अग्रवाल मंदिरजी, निवाई, जिला-टोंक (राज.)**

✻ **जैन सरोवर समिति, निर्मल निकुञ्ज, 2142, रेडियो मार्केट**
मनिहारों का रास्ता, जयपुर ●फोन : 0141-2319907, 3094018

पुनः मुद्रण सहयोग राशि

31/– रुपये मात्र

संस्करण

प्रथम संस्करण : 1000 प्रतियाँ, जयपुर

द्वितीय संस्करण : 2000 प्रतियाँ, निवाई

मुद्रक

राजू ग्राफिक आर्ट, जयपुर, फोन : 0141–2313339, मो.नं. : 9829050791

AnZr ~mV

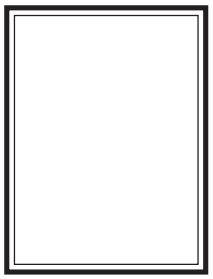

A_mcle H$s gKZ an{ÌHo$g_` BgmZ A§Ycao H$ao _|~¡R>m h| pAnhmo Vmo AmI ~ÝX aho `mIwbr, H$moB© \$H©$ Zht n‹S>Vm h¡& AmI|~ÝX hm| Vmo `r A§Y H$ma hmoJm Am¡a Iwbr hm| Vmo `r A§YH$ma ahr hmoJm {H$ÝVw à{V{Mhmo Zora gy`© H$m CX` hmo OmE Am¡a gy`© H$s ao _| AnZr api_`m| go àH$m e {~Ioa ahm hmo, nrjr H$bad H$aZo bJ| [\$a ^r BÝgmZ AmI o~ÝX {H$E ~¡R>m aho Vmo Ad{ì`hr \$H©$ nS>Vm h¡& aV H$s A§YH$ma _|Bgmz H$s H$moB© {Ch_om ar Zht Ìw Šmo {H$ A§YH$ma y©dìVcaUm {H$ÝVw àH$me hmoZo na ^r AmI|Z Imo bo Vmo `hCg H$r AkmZVm h¡& ch AmI Imo H$a àH$me H$mo nmg H$Vm h¡& ew H$m Ord Vmo A§Ycar aV Ho$ gmZ h¡, AmË_H$s g§^modZm Zht {H$ÝVw Bgmz hmo H$a ^r AmË_Om J¥{VZ H$a|Vmo `h Xwm©½`h¡& h_Bgmz h¢ Vmo h_|Om Zm h¡ Am¡a M¡VÝ` H$m {MÝVZ H$a "{dX' MoVZm H$s AZw^y{V _|a_U H$aZm h¡& ch Om J¥{V AmaU` A©Zm go hr gå^d h¡& AmMm`© g_§V^ÐñdmrOr Zo H$hm h¡••

देवाधिदेव चरणे, परिचरणं सर्व दुःख निर्हरणम्।
कामदुहि कामदाहिनी, परिचिनुयादादृतो नित्यम्।।

*भक्ति*Bp\Ìm>V \$bXoZo dmbo, {dF`dmgZm H$moZ ì>H$aZo dmbo Xodm| Ho$Xod A[a §V/XoHo$ Maun| H$s nyOmg~Xw.Im| H$mo Zme H$aZo dmbr h¡ Bg{bE AmXa ^md g{hV à{V{XZ nyOZ H$aZm Mm{hE Ÿ& Cg Ho$ {bE `h- ""AmamU` A©Zm'' Ho$g§H$bZ H$aZo H$m bKw à`mg {H$ `m h¡; Omo Ad{ì`hr AkmZ Ho$ AÝYH$ma _|kmZ Ho$ àH$me H$mH$m_H$aoJm Ÿ&

हह आचार्य विशदसागर

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पृष्ठ
1	दर्शन पाठ	5
2	गुरु भक्ति	6
3	मंगलाष्टकम्	7
4	जिनेन्द्र-स्नपन-विधि	9
5	अभिषेक पाठ	12
6	शान्ति धारा	16
7	विनय पाठ	20
8	पूजन प्रारम्भ	23
9	श्री देव शोस्त्र गुरु पूजन (समुच्चय पूजा)	27
10	देव-शास्त्र-गुरु पूजन	32
11	अर्घावली	36
12	शांतिपाठ (भाषा)	44
13	श्री बीस तीर्थंकर पूजा भाषा	46
14	श्री सिद्ध पूजा	50
15	समुच्चय चौबीसी जिनपूजा -आचार्यश्री	55
16	श्री आदिनाथ जिनपूजन	58
17	श्री पद्मप्रभ पूजा (बाड़ा-पदमपुरा)	62
18	श्री चंद्रप्रभ जिनपूजन	66
19	श्री शान्तिनाथ जिनपूजन	70
20	श्री नेमिनाथ जिनपूजा	74
21	श्री पार्श्वनाथ जिन पूजा	78
22	श्री महावीर जिन पूजा	83
23	नव देवता पूजा -आचार्यश्री	87
24	निर्वाण क्षेत्र पूजा	93
25	सोलहकारण पूजा	96
26	पंचमेरु पूजन	99
27	समाधि भावना	101
28	नन्दीश्वर द्वीप पूजा	102
29	दशलक्षण धर्म पूजा	105
30	रत्नत्रय पूजन	111
31	इष्ट प्रार्थना	112
32	सम्यग्दर्शन पूजन	113
33	सम्यग्ज्ञान पूजन	115
34	सम्यक्चारित्र पूजन	117
35	आ. विशदसागरजी महाराज की पूजन	120
36	आ. विशदसागरजी महाराज की आरती	124
37	निर्वाण काण्ड भाषा	126
38	सामायिक - ध्यान विधि	128
39	आलोचना पाठ	130
40	सामायिक पाठ	133
41	तीर्थंकर पद के सोपान -आचार्यश्री (सोलहकारण भावना)	136
42	बारह भावना	142
43	वैराग्य भावना	147
44	मेरी भावना	150
45	श्रावक प्रतिक्रमण	152
46	क्षमा वंदना	160
47	तत्त्वार्थसूत्रम्	161
48	भक्तामरस्तोत्रम्	174
49	श्री भक्तामर भाषा पाठ	182
50	श्री भक्तामर स्तोत्र - आचार्यश्री	190
51	सुप्रभात-स्तोत्रम्	195
52	श्री महावीराष्टक स्तोत्रम्	199
53	श्री वर्धमानाष्टक स्तोत्र	201
54	सरस्वतीस्तोत्रम्	200
55	गोम्मटेस-थुदि	208
56	श्री पार्श्वनाथस्तोत्रम्	210
57	24 तीर्थंकर स्तवन -आचार्यश्री	211
58	करुणाष्टक	214
59	श्री आदिनाथ चालीसा	216
60	श्री पद्मप्रभु चालीसा	218
61	श्री चन्द्रप्रभु चालीसा	220
62	श्री पार्श्वनाथ चालीसा	222
63	श्री महावीर चालीसा	224
64	आरती संग्रह	226
65	देव स्तुति	230
66	व्रतों की जापें	231
67	भक्ष- अभक्ष्य एवं भक्ष पदार्थों की मर्यादा	236
68	श्री चौबीस तीर्थंकरों का विविध परिचय	

दर्शन पाठ

(तर्ज : दिन रात मेरे स्वामी...)

यह भावना हमारी, प्रभु दर्श तेरे पाऊँ।
पल-पल प्रसन्न मन से, नवकार मंत्र ध्यायूँ।।
चउ घातिया करम का, जिसने किया सफाया।
अपने हृदय कमल पर, अर्हंत को बसाऊँ।। यह भावना...

नो कर्म भाव द्रव से, जो मुक्त हो गये हैं।
उन शुद्ध सिद्ध जिन को, मैं शीष पर बिठाऊँ।। यह भावना...

आचार पाँच पालें, पालन कराएँ सबको।
आचार्य परम गुरु को, मैं कंठ में सजाऊँ।। यह भावना...

जो अंग पूर्वधारी, पढ़ते मुनि पढ़ाते।
मुख के कमल बिठाकर, उनके गुणों को गाऊँ।। यह भावना...

सद्ज्ञान ध्यान तप में, खोये सदैव रहते।
उन सर्वसाधुओं को, नाभि कमल में ध्यायूँ।। यह भावना...

श्रद्धान, ज्ञान, चारित, सद्धर्म ये रतन हैं।
अहिंसा मयी धरम के, धारण में लौ लगाऊँ।। यह भावना...

वाणी जिनेन्द्र की शुभ, हितकारणी कही है।
जिनदेव की सुवाणी करके, श्रवण कराऊँ।। यह भावना...

जिन का स्वरूप जिनके, प्रतिबिम्ब में झलकता।
जिन तीर्थ वंदना कर, नित चैत्य दर्श पाऊँ।। यह भावना...

त्रैलोक्य में विराजित, जिन चैत्य अरु जिनालय।
तन, मन 'विशद' वचन से, मैं वंदना को जाऊँ।। यह भावना...

इत्याशीर्वादः

गुरु भक्ति

गुरुवर तुम दया करके, भव दुःख से छुड़ा देना।
पा जाऊँ शिव सुख को, वो राह बता देना ।।1।।

लख चौरासी घूमा, कण-कण जी भर देखना।
किन्तु न मिली मुझको, अब तक सुख की रेखा।
अक्षय सुख धाम जहाँ, उस पथ को बता देना।
पा जाऊँ शिव सुख को, वो राह बता देना ।।2।।

भव वन जी भर घूमा, चारों गति दुःख सहे।
नहिं शान्ति मिली हमको, नर तन में अटक रहे।।
मुझ भटके राही को, सन्मार्ग बता देना।
पा जाऊँ शिव सुख को, वो राह बता देना ।।3।।

आतम अविनाशी है, जिन ग्रंथों में गाया।
यह सिद्ध स्वभावी है, अब तक न जान पाया।।
निज पद को पाने का, मुझे मार्ग बता देना।
पा जाऊँ शिव सुख को, वो राह बता देना ।।4।।

सब सुख के साथी हैं, दुःख में न काम आये।
जीव आता अकेला है, कोई न संग जाये।।
जिन धर्म ही शरणा है, ये भाव जगा देगा।
पा जाऊँ शिव सुख को, वो राह बता देना।।5।।

मैं आशा लेकर के, गुरुदेव चरण आया।
पा जाऊँ शरण गुरु की, भव दुःख से घबराया।।
भव सिंधु पार करने, शुभ धर्म नाव देना।
पा जाऊँ शिव सुख को, वो राह बता देना।।6।।

इत्याशीर्वादः

मंगलाष्टकम्

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र-महिता: सिद्धाश्च सिद्धीश्वरा:।
आचार्या जिनशासनोन्नतिकरा: पूज्या उपाध्यायका:।।
श्रीसिद्धान्त-सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधका:।
पञ्चैते परमेष्ठिन: प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम्।।

श्रीमन्नम्र-सुरा-सुरेन्द्र-मुकुट, प्रद्योत-रत्नप्रभा-
भास्वत्पाद-नखेन्दव: प्रवचनाऽम्भोधीन्दव: स्थायिन:।
ये सर्वे जिन-सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठका: साधव:,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरूव: कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम्।।1।।

सम्यग्दर्शन-बोध-वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति-श्री-नगराऽधिनाथ-जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रद:।
धर्म: सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम्।।2।।

नाभेयादिजिन:प्रशस्त-वदना, ख्याताश्चतुर्विंशति:,
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लांगलधरा: सप्तोत्तरा विंशति-
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषा: कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम्।।3।।

ये सर्वौषधऋद्धय: सुतपसो वृद्धिंगता: पञ्च ये,
ये चाष्टांग-महानिमित्त-कुशलाश्, चाष्टौ वियच्चारिण:।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वरा:,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृत: कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम्।।4।।

ज्योतिर्व्यन्तर-भावनाऽमरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिता:,
जम्बू शाल्मलि-चैत्य-शाखिषुतथा वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहा: कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम्।।5।।

कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपते: सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणाऽवनय: प्रसिद्धविभवा: कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम्।।6।।

देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवता,
श्रीतीर्थंकरमातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा।
द्वात्रिंशत् त्रिदशाऽधिपास्तिथिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा,
दिक्पाला दश चैत्यमी सुरगणा: कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम्।।7।।

यो गर्भाऽवतरोत्सवो भगवतां जन्माऽभिषेकोत्सवो,
यो जात: परिनिष्क्रमेण विभवो य: केवलज्ञानभाक्।
य: कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संभावित: स्वर्गिभि:,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम्।।8।।

इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्य-संपत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुष:।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यापायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि।।9।।

।। इति मंगलाष्टकम्।।

जिनेन्द्र-स्नपन-विधि (अभिषेक पाठ)

(हाथ में जल लेकर शुद्धि करें)

शोद्यये सर्वपात्राणि पूजार्थानऽपि वारिभि:।
समाहितौ यथाम्नाय करोमि सकली क्रियाम्।।

(नीचे लिखा श्लोक पढ़कर जिनेन्द्रदेव के चरणों में पुष्पांजलि क्षेपण करना।)

श्रीमज् जिनेन्द्र- मभि- वन्द्य जगत् त्रयेशं,
स्याद्वाद- नायक- मनन्त- चतुष्टयार्हम्।
श्री- मूलसंघ- सुदृशां सुकृतैक- हेतुर्,
जैनेन्द्र- यज्ञ- विधि- रेष मयाभ्य- धायि।।1।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा स्नपन प्रस्तावनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर यज्ञोपवीत, माला, मुदरी, कंगन और मुकुट धारण करना।)

श्रीमन्मन्दर-सुन्दरे शुचि- जलै- र्धौतैः सदर्भाक्षतैः,
पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितं त्वत् पाद- पद्म- स्रजः।
इन्द्रोऽहं निज- भूषणार्थक- मिदं यज्ञोपवीतं दधे,
मुद्रा-कङ्कण-शेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे।।2।।

ॐ नमो परम शान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकृतायाहं रत्नत्रय- स्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि। मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

(अग्रलिखित श्लोक पढ़कर अनामिका अंगुली से नौ स्थानों (मस्तक, ललाट, कर्ण, कण्ठ, हृदय, नाभि, भुजा, कलाई और पीठ) पर तिलक करें।)

सौगन्ध्य- संगत- मधुव्रत- झङ्कृतेन,
संवर्ण्य- मान- मिव गंध- मनिन्द्य- मादौ।
आरोप- यामि विबु- धेश्वर- वृन्द- वन्द्य-
पादारविन्द- मभिवन्द्य जिनोत्- तमानाम्।।3।।

ॐ ह्रीं परम-पवित्राय नमः नवांगेषु चन्दनानुलेपनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखि श्लोक पढ़कर भूमि शुद्धि करें)

ये सन्ति केचि- दिह दिव्य कुल प्रसूता,
नागाः प्रभूत- बल- दर्पयुता विबोधाः।
संरक्ष णार्थ- ममृतेन शुभेन तेषां,
प्रक्षाल- यामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम्।।4।।

ॐ ह्रीं जलेन भूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पीठ/सिंहासन का प्रक्षालन करना।)

क्षीरार्णवस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः,
प्रक्षालितं सुरवरैर्-यदनेक- वारम्।
अत्युद्ध- मुद्यत- महं जिन- पादपीठं,
प्रक्षाल- यामि भव-सम्भव- तापहारि।।5।।

ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पीठ-प्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर सिंहासन पर श्री लिखें।)

श्री- शारदा- सुमुख- निर्गत बीजवर्णं,
श्रीमङ्गलीक- वर- सर्व जनस्य नित्यम्।
श्रीमत् स्वयं क्षयति तस्य विनाश्य- विघ्नं,
श्रीकार- वर्ण- लिखितं जिन- भद्रपीठे।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार- लेखनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पीठिका पर श्रीजी विराजमान करें।)

यं पाण्डुकामल- शिलागत- मादिदेव-
मस्नापयन् सुरवराः सुर- शैल- मूर्ध्नि।
कल्याण- मीप्सु- रह- मक्षत- तोय- पुष्पैः,
सम्भावयामि पुर एव तदीय बिम्बम्।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री धर्मतीर्थाधिनाथ! भगवन्निह पाण्डुक शिला-पीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा। जगतः सर्वशान्तिं करोतु।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पल्लवों से सुशोभित मुखवाले स्वस्तिक सहित चार सुन्दर कलश सिंहासन के चारों कोनों पर स्थापित करें।)

सत्पल्ल- वार्चित- मुखान् कलधौत- रौप्य-
ताम्रार- कूट- घटितान् पयसा सुपूर्णान्।
संवाह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान्,
संस्थापयामि कलशाज्जिन- वेदिकांते ।।8 ।।

ॐ ह्रीं स्वस्तये पूर्ण- कलशोद्धरणं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर अभिषेक करें।)

दूरावनम्र सुरनाथ किरीट कोटी-
संलग्न- रत्न- किरणच्छवि- धूस- राघ्रिम्।
प्रस्वेद- ताप- मल- मुक्तमपि प्रकृष्टैर्-
भक्त्या जलै- र्जिनपतिं बहुधाभिषिञ्चे ।।9 ।।

(चारो कलशों से अभिषेक करें।)

इष्टै- र्मनोरथ- शतैरिव भव्य- पुंसां,
पूर्णैः सुवर्ण- कलशै- र्निखिला- वसानैः।
संसार- सागर- विलंघन- हेतु- सेतु-
माप्लावये त्रिभुवनैक- पतिं जिनेन्द्रम् ।।10 ।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं वृषभादि- वर्धमानपर्यन्तं- चतुर्विंशति- तीर्थंकर- परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे..... देशे... प्रान्ते..... नाम्नि नगरे श्री 1008 ..... जिन चैत्यालयमध्ये वीर निर्वाण सं. ... मासोत्तममासे.... पक्षे... तिथौ... वासरे.. पौर्वाह्निक समये मुन्यार्यिका- श्रावक- श्राविकानां सकल- कर्म- क्षयार्थं जलेनाभिषिञ्चे नमः।

द्रव्यै- रनल्प- घनसार- चतुः समाद्यै-
रामोद- वासित- समस्त- दिगन्तरालैः।
मिश्री-कृतेन पयसा जिन-पुङ्गवानां,
त्रैलोक्य पावनमहं स्नपनं करोमि ।।11 ।।

इत्याशीर्वादः

अभिषेक पाठ

श्रीमन्नतामर शिरस्तट रत्नदीप्ति-
तोयावभासि चरणाम्बुज युग्म-मीशम्।
अर्हंत मुन्नत पद प्रदमाभिनम्य,
तन्मूर्तिषूद्य दभिषेक विधिं करिष्ये ।।1 ।।

अथ पौर्वाह्निक / माध्याह्निक / अपराह्निक देववंदनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल कर्म क्षयार्थं भाव पूजा वंदना स्तव समेतम् श्री पञ्चमहागुरु भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

याः कृत्रिमास्तदितरा प्रतिमा जिनस्य
संस्नापयन्ति पुरुहूत मुखादयस्ताः
सद्भाव लब्धि समयादि निमित्त योगात्-
तत्रैव मुज्जवलधिया कुसुमम् क्षिपामि ।।2 ।।

इति अभिषेक प्रतिज्ञाये पुष्पांजलि क्षिपामि।

श्री पीठक्लृप्ते विशदाक्षतोघैः, श्रीप्रस्तरे पूर्णशशाङ्ककल्पे।
श्रीवर्तके चंद्रमसीति वार्तां, सत्यापयन्तीं श्रियमालिखामि ।।3 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री लेखनं करोमि।

(पाषाण शिला या चौकी पर श्री लिखें)

कनकादिनिभं कम्रम् पावनं पुण्य कारणम्।
स्थापयामि परं पीठं जिनस्नपनाय भक्तितः ।।4 ।।

ॐ ह्रीं श्री पीठ स्थापनं करोमि।

(चौकी पर बड़ी व ऊँची किनार की थाली रखकर उसमें सिंहासन स्थापित करें।)

भृङ्गार चामर सुदर्पण पीठ कुं भ-
तालध्वजातप निवारक भूषिताग्रे।
वर्धस्व नंद जय पाठ पदावलीभिः,
सिंहासने जिन भवंत-महं श्रयामि ।।5 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मतीर्थधिनाथ, भगवन्निह पाण्डुक शिला पीठे (सिंहासने) तिष्ठ तिष्ठ।
(घंटा नाद पूर्वक जय जय शब्द बोलते हुए वेदी में से सर्वधातु या चाँदी की प्रतिमाजी लाकर सिंहासन पर विराजमान करें।)

श्री तीर्थकृत्स्नपन वर्य विधौ सुरेन्द्रः
क्षीराब्धि-वारिभि-रपूरय-दर्थ कुम्भान्।
तास्तादृशानिव विभाव्य यथार्हणीयान्,
संस्थापये कुसुम-चंदन-भूषिताग्रान ।।6 ।।

ॐ ह्रीं स्वस्त्ये चतुः कोणेषु चतुः कलश स्थापनं करोमि।

(चौकी पर चार दिशा में चार कलश स्थापित करें।)

आनंद- निर्भर- सुर- प्रमदादि- गानैर्-
वादित्र पूर जयशब्द कल प्रशस्तैः।
उद्गीयमान जगतीपति कीर्ति मेनां,
पीठ स्थलीं वसुविधार्चन योल्लसामि।।7।।

ॐ ह्रीं श्री स्नपन पीठस्थिताय जिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म प्रबंध निगडैरपि हीनताप्तं,
ज्ञात्वापि भक्तिवशतः परमादि देवं।
त्वां स्वीयकल्मष गणोन्मथनाय देव,
शुद्धोदकैरभि नयामि नयार्थतत्वम्।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं क्षीं क्षीं इवीं इवीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा। (यह पढ़कर अभिषेक करें।)

तीर्थोत्तम भवैः नीरैः क्षीर वारिधि रूपकैः।
स्नपयामि जन्माप्तान् जिनान् सर्वार्थ सिद्धिदान्।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीं वृषभादि वीरान्तान जलेन स्नपयामि स्वाहा।

(यह मंत्र 9 बार बोलना चाहिए)

सकल-भुवन-नाथं तं जिनेन्द्रं सुरेन्द्रै-
रभिषव-विधि-माप्तं स्नातकं स्नापयामः।
यदभिषवन-वारां बिन्दु रेकोऽपिनृणां
प्रभवतिविदधातुं भुक्ति-सन्मुक्तिलक्ष्मीम्।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं झं क्ष्वीं क्ष्वीं ह सः झं वं ह्रः यः सः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं हां हीं हूं हें हैं ह्रः हौं हं ह्रः हीं द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति बृहच्छान्तिमन्त्रेणाभिषेकं करोमि।

(चार कलश से अभिषेक)

पानीय- चंदन - सदक्षत - पुष्प पुन्ज-
नैवेद्य - दीपक - सुधूप - फल - व्रजेन।
कर्माष्टक - क्रथन - वीर - मनंत - शक्तिं
संपूजयामि महसा महसां निधानम्।।11।।

ॐ ह्रीं अभिषेक अन्ते वृषभादि वीरान्तेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे तीर्थपा निज-यशो-धवली-कृताशाः
सिद्धौष-धाश्च भव दुःख-महा-गदा-नाम्।
सद्भव्य-हृज्जनित-पंङ्क-कबंध कल्पा
यूयं जिनाः सतत्-शांतिकरा भवन्तु।।12।।

(शान्त्यर्थ पुष्पांजलि क्षिपामि।)

नत्वा मुहु-र्निज करै- रमृतोप- मेयैः
स्वच्छै-र्जिनेन्द्र तव चंद्र-करा-वदातैः।
शुद्धांशुकेन विमलेन नितांत-रम्ये
देहे स्थितान् जलकणान् परिमार्जयामि।।13।।

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्बमार्जनं करोमि।

स्नानं विधाय भवतोऽष्ट सहस्र-नाम्ना-
मुच्चारणेन मनसो वचसो विशुद्धिम् ।
जिघृक्षु-रिष्टि-मिन तेऽष्ट तयीं विधातुम्
सिंहासने विधि-वदत्र निवेशयामि ।।14 ।।

(यह छंद पढ़कर श्री जिनबिम्ब को वेदी में विराजमान करें।)

जल-गंधाक्षतैः पुष्पैश्चरु-दीप-सुधूपकैः ।
फलैरर्घै-र्जिनमर्चे,जन्मदुःखापहानये ।।15 ।।

ॐ ह्रीं श्री सिंहासने स्थित जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

गन्धोदक लेने का मंत्र

निर्मल निर्मलीकरणं पवित्रम् पाप नाशकम् ।
जिन गंधोदक वंदे अष्टकर्म विनाशकम् ।।

निर्मल से निर्मल अति अघनाशक सुखसीर ।
बंदू जिन अभिषेक कृत जिन गंधोदक नीर ।।

(गंधोदक पहले (बड़ों को) मुनिराज आदि को देना चाहिए।)

नत्वा परीत्य निज-नेत्र-ललाट-योश्च
व्यातु-क्षणेन हरता-दघ संचयं मे ।
शुद्धो-दकं जिनपते तवपाद-योगाद्
भूयाद्-भवातपहरं धृत-मादरेण ।।16 ।।

मुक्ति-श्रीवनिता-करोदक-मिंद, पुण्यांङ्-कुरोत्पादकं
नागेन्द्र-त्रिदशेन्द्र-चक्रपदवी, राज्याभि-षेकोदकम् ।
सम्यग्ज्ञान- चरित्र- दर्शन- लता, - संवृद्धि-संपादकं
कीर्ति- श्रीजयसाधकं तव जिनस्नानस्य गंधोदकम् ।।17 ।।

(यह पढ़कर स्वयं जिन चरणोदक लेकर दूसरों को देवें।)

शांति धारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री वीतरागाय नमः

ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोएसव्वसाहूणं ।

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णतो धम्मो लोगत्तमो।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि अरिहंते सरणं पव्वज्जामि सिद्धेसरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि। ॐ ह्रीं अनादि मूल मंत्रेभ्यो नमः सर्व शान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ नमोर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्य तेजो मूर्तये नमः श्री शान्तिनाथ शान्ति कराय सर्व विघ्न प्रणाशनाय सर्व रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्व पर कृच्छ्रोपद्र विनाशनाय सर्व क्षामडामर विघ्न विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्व शान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ ह्रूं क्ष्रूं किरिटिं किरिटिं घातय घातय पर विघ्नान स्फोटय स्फोटय सहस्र खण्डान् कुरु कुरु पर मुद्रां छिन्द छिन्द पर मंत्रान् भिन्द भिन्द क्षाः क्षः वाः वः ह्रूं फट् सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहत विद्यायै णमो अरिहन्ताणं ह्रौं सर्व विघ्न शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदातप विनाशाय ह्रीं शान्तिनाथाय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय अशोक तरु सत्प्रातिहार्य मंडिताय अशोकतरु सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय ह्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय सुर पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य मंडिताय सुर पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय भ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्य मंडिताय दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय म्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय चामरोज्ज्वल सत्प्रातिहार्य मंडिताय चामरोज्ज्वल सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय र्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय सिंहासन सत्प्रातिहार्य मंडिताय सिंहासन सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय घ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय दुन्दुभि सत्प्रातिहार्य मंडिताय दुन्दुभि सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय झ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य मंडिताय छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय स्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय भामंडल सत्प्रातिहार्य मंडिताय भामंडल सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय ख्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय प्रतिहार्याष्ट सहिताय बीजाष्ट मंडन मंडिताय सर्व विघ्न शान्तिकराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

तव भक्ति प्रसादालक्ष्मीपुर राज्यगेह पदभ्रष्टोपद्रव दारिद्र्योद्भवोपद्रव स्वचक्र परचक्रोद्भयोपद्रव प्रचंड पवनालन जलोद्भयोपद्रव शाकिनी डाकिनी भूत पिशाच कृतोपद्रव दुर्भिक्षव्यापार वृद्धिरहितोपद्रवाणां विनाशनं भवतु।

श्री शान्तिरस्तु शिवमस्तु जयोस्तु नित्यमारोग्यमस्तु सर्वेषां पुष्टिरस्तु तुष्टिरस्तु समृद्धिरस्तु कल्याणमस्तु सुखमस्तु अभिवृद्धिरस्तु कुलगोत्रधनधान्यं सदास्तु श्री सद्धर्मवलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धि रस्तु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो संपूर्ण कल्याण मंगल रूप मोक्ष पुरुषार्थश्च भवतु।

इत्याशीर्वादः

लघु शान्ति धारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः। ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्वतीर्थङ्कराय द्वादशगणपरिवेष्टिकाय, शुक्ल ध्यान पवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयं भुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परम सुखाय, त्रैलोक्य महीव्याप्ताय, अनन्त संसार चक्रपरिमर्दनाय, अनन्त दर्शनाय, अनन्त ज्ञानाय, अनन्त वीर्याय, अनन्त सुखाय, सिद्धाय, बुद्धाय, त्रैलोक्यवशङ्कराय, सत्यज्ञानाय, सत्यब्रह्मणे, धरणेन्द्र फणामंडल मण्डिताय, ऋष्यार्यिका–श्रावक–श्राविका प्रमुख चतुस्संघोपसर्ग विनाशनाय, घातिकर्म विनाशनाय, अघातिकर्म विनाशनाय, **अपवायं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद।**मृत्युं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **अतिकामं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **रतिकामं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **क्रोधं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **अग्निभयं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्वशत्रुं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्वोपसर्गं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्वविघ्नं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्वभयं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्वराजभयं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्वचौरभयं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्वदुष्टभयं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्वमृगभयं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्वात्मचक्रभयं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्वपरमंत्र** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्वशूल रोगं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्वक्षय रोगं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्वकुष्ठ रोगं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्वक्रूर रोगं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्वनरमारीं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्वगजमारीं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्वाश्वमारीं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्वगोमारीं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्वमहिषमारीं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्वधान्यमारीं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्ववृक्षमारीं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्वगुल्ममारीं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्वपत्रमारीं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्वपुष्पमारीं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्वफलमारीं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्वराष्ट्र मारीं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्व देशमारीं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्व विषमारीं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्ववेताल शाकिनी भयं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्ववेदनीयं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्वमोहनीयं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद। **सर्वकर्माष्टकं** छिंद–छिंद भिंद–भिंद।

ॐ सुदर्शन–महाराज–मम–चक्र विक्रम–तेजो–बल शौर्य–वीर्य शान्तिं कुरु–कुरु। **सर्व जनानन्दनं** कुरु–कुरु। **सर्व भव्यानंदनं** कुरु–कुरु। **सर्व गोकुलानन्दनं** कुरु–कुरु। **सर्व ग्राम नगर खेट कर्वट मटंब पत्तन द्रोणमुख**

संवाहनन्नं कुरु-कुरु। सर्व **लोकानन्दनं** कुरु-कुरु। **सर्व देशानंदनं** कुरु-कुरु। **सर्व यजमानन्दनं** कुरु-कुरु। सर्व दु:ख हन-हन, दह-दह, पच-पच, कुट-कुट, शीघ्रं-शीघ्रं।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधि-व्यसन-वर्जितं।
अभयं क्षेम-मारोग्यं स्वस्ति-रस्तु विधीयते।।

श्री शांति-मस्तु! कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। चन्द्रप्रभ-वासुपूज्य-मल्लि-वर्द्धमान-पुष्पदंत-शीतल-मुनिसुव्रतस्त-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-इत्येभ्यो नम:।

शांति: शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां।
शांति निरन्तर तपोभव भावितानां।।
शांति: कषाय जय जृम्भित वैभवानां।
शांति: स्वभाव महिमान मुपागतानां।।

इत्यनेन मंत्रेण नवग्रहाणां शान्त्यर्थं गंधोदक धारा-वर्षणम्।
संपूजकांनां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामन्य तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञ: करोतु शांतिं भगवान जिनेन्द्र:।।
अर्घह्रह्र उदक चन्दन..... जिन-नथ-महं यजे।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपते शान्तिधारां करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

(नीचे लिखे श्लोक पढ़कर गन्धोकद ग्रहण करें।)

गंधोदक लेने का मंत्र

निर्मलं निर्मली-करणं पवित्रं पाप-नाशनम्।
जिन-गन्धोदकं वन्दे कर्माष्टक-निवारणम्।।

भुजंग प्रयात

पावन है उत्तम है कल्याणकारी, हरे विघ्न सारे और पुण्याधिकारी।
जिनवर का अभिषेक सर्वंग लगाऊँ, नशे कर्म सारे यही भाव भाऊँ।।

ॐ नमोऽर्हत्परमेष्ठिभ्य: मम सर्व शान्तिर्भवतु स्वाहा।

(इस मंत्रोच्चार द्वारा गंधोदक को सिर, ललाट, गला, वक्षस्थल, नेत्रों आदि पर लगाएँ।)

।। इति शांतिधारा पाठ।।

विनय पाठ

दोहा

इह विधि ठाडो होयके, प्रथम पढ़ै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ।।1।।

अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्ति-वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज।।2।।

तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिव सुख के करतार।।3।।

हरता अघ-अंधियार के करता धर्म प्रकाश।
थिरता पद दातार हो, धरता निज गुण राश।।4।।

धर्मामृत उर जलधि सो, ज्ञान भानु तुम रूप।
तुमरे चरण सरोज को, नावत तिहुँ जग भूप।।5।।

मैं वन्दौं जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्मबंध के छेदने, और न कछू उपाय।।6।।

भविजन को भवकूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण भंडार।।7।।

चिदानंद निर्मल कियो, धोय कर्म रज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव गैल।।8।।

तुम पद पङ्कज पूजते, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरै, विष निरविषता थाय।।9।।

चक्री खगधर इन्द्रपद, मिलै आपतै आप।
अनुक्रम कर शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप।।10।।

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन।।11।।

पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेय।
अंजन से तारे प्रभु, जय जय जय जिनदेव।।12।।

थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करे।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव।।13।।

राग सहित जगमें रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेट्यो अबै, मेटो राग कुटेव।।14।।

कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान।।15।।

तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव।।16।।

अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिंधु में, खेय लगाओ पार।।17।।

इन्द्रादिक गणपति थकी, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारके, कीजे आप समान।।18।।

तुमरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत हैं पार।
हा हा डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार।।19।।

जो मैं कह हूँ और सों, तो न मिटे उरझार।
मेरी तो तोसौं बनी, तातैं करौं पुकार।।20।।

वन्दौं पांचों परम गुरु, सुर गुरु वन्दत जास।
विघन हरन मंगल करण, पूरन परम प्रकाश।।21।।

चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय।।22।।

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरौं नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान।।23।।

मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अर्हंत देव।
मंगलकारी सिद्धपद, सो वंदौं स्वयमेव।।24।।

मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वंदौं मन वच काय।।25।।

मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगल करों, हरों असाता कर्म।।26।।

या विधि मंगल करन से, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भव सागर दृढ़ पोत।।27।।

अथ् अर्हत पूजा प्रतिज्ञायां... *।। पुष्पांजलि क्षिपामि।।*

(यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना एवं पूजन की प्रतिज्ञा करनी चाहिए।)

(जो शरीर पर वस्त्र एवं आभूषण हैं या जो भी परिग्रह है, इसके अलावा परिग्रह का त्याग एवं मंदिर से बाहर जाने का त्याग जब तक पूजन करेंगे तब तक के लिए करें।)

इत्याशीर्वाद :

पूजन प्रारम्भ

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।।1 ।।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलि क्षेपण करना)

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्ञामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि-पण्णतं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पांजलि)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंचनमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते ।।1 ।।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः।।2।।

अपराजित-मंत्रोऽयं सर्वविघ्न-विनाशनः।
मङ्गलेषु च सर्वेषु प्रथमं मङ्गलम् मतः।।3।।

एसो पञ्च णमोयारो सव्वपावप्पणासणो।
मङ्गलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं।।4।।

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं।।5।।

कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं।।6।।

विघ्नौघाः प्रलयम् यान्ति शाकिनी-भूतपन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे।।7।।

(यहां पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये)

(यदि अवकाश हो तो यहां पर सहस्रनाम पढ़कर दश अर्घ देना चाहिये नहीं तो नीचे लिखा श्लोक पढ़कर एक अर्घ चढ़ावें।)

पंचकल्याणक अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे।।

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाम यजामहे।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि तत्वार्थसूत्रदशाध्याय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वादः

स्वस्ति मंगल

श्री मज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं, स्याद्वाद-नायक मनंत चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसङ्घ-सुदृशां-सुकृतैकहेतु-जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि।।
स्वस्ति त्रिलोकगुरुवे जिनपुङ्गवाय, स्वस्ति-स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जितदृङ् मयाय, स्वस्तिप्रसन्न-ललिताद्भुत वैभवाय।।
स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधाप्लवाय; स्वस्ति स्वभाव-परभावविभासकाय;
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक चिदुद्गमाय, स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत विस्तृताय।।
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्ययथानुरूपं; भावस्य शुद्धि मधिकामधिगंतुकामः।
आलंबनानि विविधान्यवलंब्यवल्गन्; भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं।।
अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम पावनानि, वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवल-बोधवह्नौ; पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपेत्।

श्री वृषभो नः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति; स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।
श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयांसः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अनन्तः।
श्री धर्मः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शान्तिः।
श्री कुन्थुः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अरहनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वर्धमानः।

(पुष्पांजलि क्षेपण करें)

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः स्फुरन्मनः पर्यय शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।1।।

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये।)

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं संभिन्न-संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।2।।

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादना-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञानबलाद्बृहंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।3।।

प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।4।।

जङ्घावलि-श्रेणि -फलाम्बु-तंतु-प्रसून-बीजांकुर चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।5।।

अणिम्नि दक्षाःकुशला महिम्नि, लघिम्निशक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।6।।

सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं प्राकाम्य मंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतिघातगुण प्रधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।7।।

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।8।।

आमर्षसर्वौषधयस्तथाशीर्विषा विषा दृष्टिविषंविषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्लमलौषधीशाः,स्वस्तिक्रियासुपरमर्षयो नः।।9।।

क्षीरं स्रवन्तोऽत्रघृतं स्रवन्तो मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवन्तः।
अक्षीणसंवास महानसाश्चं स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।10।।

(इति पुष्पांजलि क्षिपेत्)

(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्)

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन (समुच्चय)

- AmMm`©{deXgmJa

स्थापना

श्री देव शास्त्र गुरु के चरणों हम, सादर शीष झुकाते हैं।
जिन कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, श्री सिद्ध प्रभु को ध्याते हैं।
श्री बीस जिनेन्द्र विदेहों के, अरु सिद्ध क्षेत्र जग के सारे।
हम 'विशद' भाव से गुण गाते, ये मंगलमय तारण हारे।
हमने प्रमुदित शुभ भावों से, तुमको हे नाथ ! पुकारा है।
मम् डूब रही भव नौका को, जग में वश एक सहारा है।
हे करुणा कर ! करुणा करके, भव सागर से अब पार करो।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, बस इतना सा उपकार करो।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय समूह श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी समूह श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर समूह श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानन।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय समूह श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी समूह श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर समूह श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरु समूह कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय समूह श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी समूह श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर समूह श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

हम प्रासुक जल लेकर आये, निज अन्तर्मन निर्मल करने।
अपने अन्तर के भावों को, शुभ सरल भावना से भरने।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! शरण में आये हैं, भव के सन्ताप सताए हैं।
हम परम सुगन्धित चंदन ले, प्रभु चरण शरण में आये हैं।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह भव ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्षय निधि को भूल रहे, प्रभु अक्षय निधी प्रदान करो।
हम अक्षत लाए श्री चरणों में, प्रभु अक्षय निधि का दान करो।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यद्यपि पंकज की शोभा भी, मानस मधुकर को हर्षाए।
हम काम कलंक नशाने को, मनहर कुसुमांजलि ले लाए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ये षट् रस व्यंजन नाथ हमें, सन्तुष्ट पूर्ण न कर पाये।
चेतन की क्षुधा मिटाने को, नैवेद्य चरण में हम लाए।।

श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक के विविध समूहों से, अज्ञान तिमिर न मिट पाए।
अब मोह तिमिर के नाश हेतु, हम दीप जलाकर ले आए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये परम सुगंधित धूप प्रभु, चेतन के गुण न महकाए।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, हम धूप जलाने को आए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन तरु में फल खाए कई, लेकिन वे सब निष्फल पाए।
अब विशद मोक्ष फल पाने को, श्री चरणों में श्री फल लाए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट कर्म आवरणों के, आतंक से बहुत सताए हैं।
वसु कर्मों का हो नाश प्रभु, वसु द्रव्य संजोकर लाए हैं।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

श्री देव शास्त्र गुरु मंगलमय हैं, अरु मंगल श्री सिद्ध महन्त।
बीस विदेह के जिनवर मंगल, मंगलमय हैं तीर्थ अनन्त।।

छन्द तोटक

जय अरि नाशक अरिहंत जिनं, श्री जिनवर छ्यिालीस मूल गुणं।
जय महा मदन मद मान हनं, भवि भ्रमर सरोजन कुंज वनं।।
जय कर्म चतुष्टय चूर करं, दृग ज्ञान वीर्य सुख नन्त वरं।
जय मोह महारिपु नाशकरं, जय केवल ज्ञान प्रकाश करं।।1 ।।
जय कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनं, जय अकृत्रिम शुभ चैत्य वनं।
जय ऊर्ध्व अधो के जिन चैत्यं, इनको हम ध्याते हैं नित्यं।।
जय स्वर्ग लोक के सर्व देव, जय भावन व्यन्तर ज्योतिषेव।
जय भाव सहित पूजे सु एव, हम पूज रहे जिन को स्वयमेव।।2।।
श्री जिनवाणी ओंकार रूप, शुभ मंगलमय पावन अनूप।
जो अनेकान्तमय गुणधारी, अरु स्याद्वाद शैली प्यारी।।
है सम्यक् ज्ञान प्रमाण युक्त, एकान्तवाद से पूर्ण मुक्त।
जो नयावली युत सजल विमल, श्री जैनागम है पूर्ण अमल।। 3।।
जय रत्नत्रय युत गुरूवरं, जय ज्ञान दिवाकर सूरि परं।
जय गुप्ति समीती शील धरं, जय शिष्य अनुग्रह पूर्ण करं।।

गुरु पञ्चाचार के धारी हो, तुम जग-जन के उपकारी हो।
गुरु आतम बह्म विहारी हो, तुम मोह रहित अविकारी हो।।4।।
जय सर्व कर्म विध्वंस करं, जय सिद्ध सिला पे वास करं।
जिनके प्रगटे है आठ गुणं, जय द्रव्य भाव नो कर्महनं।।
जय नित्य निरंजन विमल अमल, जय लीन सुखामृत अटल अचल।
जय शुद्ध बुद्ध अविकार परं, जय चित् चैतन्य सु देह हरं।।5।।
जय विद्यमान जिनराज परं, सीमंधर आदी ज्ञान करं।
जिन कोटि पूर्व सब आयु वरं, जिन धनुष पांच सौ देह परं।।
जो पंच विदेहों में राजे, जय बीस जिनेश्वर सुख साजे।
जिनको शत् इन्द सदा ध्यावें, उनका यश मंगलमय गावें।।6।।
जय अष्टापद आदीश जिनं, जय उर्जयन्त श्री नेमि जिनं।
जय वासुपूज्य चम्पापुर जी, श्री वीर प्रभु पावापुरजी।।
श्री बीस जिनेश सम्मेदगिरी, अरु सिद्ध क्षेत्र भूमि सगरी।
इनकी रज को सिर नावत हैं, इनको यश मंगल गावत हैं।।7।।

पूर्वाचार्य कथित देवों को, सम्यक् वन्दन करें त्रिकाल।
पञ्च गुरु जिन धर्म चैत्य श्रुत, चैत्यालय को है नत भाल।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो: श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तान्त श्री सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तीन लोक तिहुँ काल के, नमू सर्व अरहंत।
अष्ट द्रव्य से पूजकर, पाऊँ भव का अन्त।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोक एवं त्रिकाल वर्ती तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पांजलि क्षिपेत्

कायोत्सर्गं कुरु...

देव-शास्त्र-गुरु पूजन

प्रथम देव अरहंत सुश्रुत सिद्धान्त जू।
गुरु निर्ग्रन्थ महंत मुकतिपुर-पंथ जू।
तीन रतन जगमाँहि सु ये भवि ध्याइये।
तिनकी भक्ति-प्रसाद परम-पद पाइये।।

पूजों पद अरहंत के, पूजों गुरु पद सार।
पूजों देवी सरस्वती, नित प्रति अष्ट प्रकार।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ:। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सुरपति उरग नरनाथ तिन-करि, वन्दनीक सुपदप्रभा।
अति शोभनीक सुवरण उज्ज्वल, देख छवि मोहित सभा।।
वर नीर क्षीर-समुद्र घट भरि, अग्र तसु बहु विधि नचूँ।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त, गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

मलिन वस्तु हर लेत सब, जलस्वभाव मल छीन।
जासों पूजों परमपद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो: जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जे त्रिजग-उदर मँझार प्रानी, तपत अति दुद्धर खरे।
तिन अहित-हरन सुवचन जिनके, परम शीतलता भरे।।
तसु भ्रमर-लोभित घ्राण पावन, सरस चन्दन घिसि सचूँ।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त, गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

चंदन शीतलता करै, तपत वस्तु परवीन।
जासों पूजों परमपद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो: संसार-ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह भव-समुद्र अपार तारण, के निमित सुविधि ठई।
अति दृढ़-परम-पावन जथारथ, भक्ति वर नौका सही।।

उज्ज्वल अखंडित सालि तंदुल, पुंज धरि त्रयगुण जचूँ।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त, गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

तंदुल सालि सुगंध अति, परम अखंडित बीन।
जासों पूजों परमपद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो: अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

जे विनयवंत सुभव्य-उर-अंबुज प्रकाशन भानु हैं।
जे एक मुख चारित्र भाषत, त्रिजग माहिं प्रधान हैं।
लहिकुन्द-कमलादिक पहुप, भव-भव कुवेदनसों बचूँ।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त, गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

विविधभाँति परिमल सुमन, भ्रमर जास आधीन।
जासों पूजों परमपद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो: कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अति सबल मद-कंदर्प जाको, क्षुधा-उरग अमान हैं।
दुस्सह भयानक तासु नाशन, को सुगरुड़ समान हैं।।
उत्तम छहों रस युक्त नित, नैवेद्य करि घृत में पचूँ।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त, गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

नानाविधि संयुक्तरस, व्यंजन सरस नवीन।
जासों पूजों परमपद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो: क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जे त्रिजग-उद्यम नाश कीने, मोह-तिमिर महाबली।
तिहि कर्मघाती ज्ञानदीप-प्रकाशजोति प्रभावली।।
इह भाँति दीप प्रजाल कंचन, के सुभाजन में खचूँ।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त, गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

स्वपरप्रकाशक ज्योति अति, दीपक तमकरि हीन।
जासों पूजों परमपद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो: मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कर्म-ईंधन दहन, अग्नि-समूह सम उद्धत लसै।
वर धूप तासु सुगंधिताकरि, सकल परिमलता हँसे।।
इह भाँति धूप चढ़ाय नित, भव-ज्वलन मांहि नहीं पचूँ।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त, गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

अग्निमाहिं परिमल दहन, चंदनादि गुणलीन।
जासों पूजों परमपद देव-शास्त्र-गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो: अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लोचन सुरसना घ्राण उर, उत्साह के करतार हैं।
मोपै न उपमा जाय वरणी, सकल फल गुणसार हैं।।
सो फल चढ़ावत अर्थपूरन, परम अमृतरस सचूँ।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त, गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

जे प्रधान फल-फल विषैं, पंचकरणरस-लीन।
जासों पूजों परम पद देव-शास्त्र-गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो: मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल परम उज्ज्वल गन्ध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरूँ।
वर धूप निर्मल फल विविध, बहु जनम के पातक हरूँ।।
इह भाँति अर्घ चढ़ाय नित भवि, करत शिव-पंकति मचूँ।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।
आठों दु:खदानी, आठ निशानी, तुम ढिग आन निवारन हो।
दीनन निस्तारन अघम उधारन 'द्यानत' तारन कारन हो।।
प्रभु अन्तर्यामी त्रिभुवननामी, सब के स्वामी दोष हरो।
यह अरज सुनीजे ढील न कीजे, न्याय करी जे दया करो।।

वसुविधि अर्घ संजोय कैं, अति उछाह मन कीन।
जासों पूजों परमपद, देव–शास्त्र–गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्योऽनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

देव–शास्त्र–गुरु रतन शुभ, तीन रतन करतार।
भिन्न–भिन्न कहुँ आरती, अल्प सुगुण विस्तार।।1।।
चऊ कर्म की त्रेसठ प्रकृति नाशि, जीते अष्टादश दोषराशि।
जे परम सुगुण हैं अनंतधीर, कहवत के छ्यालिस गुणगंभीर।।2।।
शुभ समवशरण शोभा अपार, शत् इन्द्र नमन् कर शीस धार।
देवाधिदेव अरहन्त देव, वन्दों मन–वच–तन कर सुसेव।।3।।
जिनकी धुनि है ओंकार रूप, निर–अक्षरमय महिमा अनूप।
दश–अष्ट महाभाषा समेत, लघु भाषा सात शतक सुचेत।।4।।
सो स्याद्वादमय सप्तभंग, गणधर गूँथे बारह सुअंग।
रवि शशि न हरै सो तम हराय, सो शास्त्र नमों बहु प्रीति ल्याय।।5।।
गुरु आचारज उवझाय साधु, तन नगन रत्नत्रयनिधि अगाध।
संसार देह वैराग्य धार, निरवांछि तपै शिव–पद निहार।।6।।
गुण छत्तिस पच्चिस आठ बीस, भव–तारनतरन जिहाज ईस।
गुरु की महिमा वरनी न जाये, गुरु नाम जपों मन वचन काय।।7।।
कीजे शक्ति प्रमान, शक्ति बिना सरधा धरै।
'द्यानत' सरधावान, अजरअमर पर भोगवै।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्योऽनर्घपद प्राप्तये महाऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यात्व दलन सिद्धान्त साधक, मुक्ति मारग जानिये।
करनी अकरनी सुगति दुर्गति, पुण्य पाप पिछानिये।।
संसार सागर तरण तारण, गुरु जिहाज विशेषिये।
जग मांहि गुरुसम कहें 'बनारसि' और न दूजो पेखिये।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

अर्घावली

विद्यमान बीस तीर्थंकरों का अर्घ

जलफल आठों दर्व अरघ कर प्रीति धरी है,
गणधर इन्द्र निहू–तैं थुति पूरी न करी है।
द्यानत सेवक जानके हो जगतें लेहु निकार,
सीमन्धर जिन आदि दे बीस विदेह मँझार।
श्री जिनराज हो भव तारण तरण जहाज।।

ॐ ह्रीं श्री समीन्धरादिविद्यमान विंशतितीर्थंकरेभ्योऽनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृतित्रम जिनबिम्बों का अर्घ

कृत्याकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान्, नित्यं त्रिलोकीगतान्,
वन्दे भावन–व्यन्तरान् द्युतिवरान्, कल्पामरा–वासगान्।।
सद्–गन्धाक्षत–पुष्पदामचरुकैः सद्दीपधूपैः फलैर्,
नीराद्यैश्च यजे प्रणम्य शिरसा, दुष्कर्मणां शान्तये।।

सात करोड़ बहत्तर लाख, सु–भवन जिन पाताल में।
मध्यलोक में चार सौ अट्ठावन, जजों अघमल टाल के।।
अब लखचौरासी सहस सत्यावन, अधिक तेईस रु कहे।
बिन संख ज्योतिष व्यन्तरालय, सब जजों मन वच ठहे।।

ॐ ह्रीं कृतित्रमाकृत्रिमजिनबिम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध भगवान का अर्घ

गन्धाद्यं सुपयो मधुव्रत–गणैः, सङ्गं वरं चन्दनं,
पुष्पौघं विमलं सदक्षत–चयं, रम्यं चरुं दीपकम्।

धूपं गन्धयुतं ददामि विविधं, श्रेष्ठं फलं लब्धये,
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं, सेनोत्तरं वाञ्छितम्।।

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ भगवान का अर्घ

शुचि निर्मल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरु ले मन हरषाय।
दीप धूप फल अर्घ सु लेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय।
श्री आदिनाथजी के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मन वच काय।
हे ! करुणानिधि भव दुःख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान का अर्घ

सजि आठों दरब पुनीत, आठों अंग नमों।
पूजों अष्टम जिन मीत, अष्टम अवनि गमों।
श्री चन्द्रनाथ दुति चन्द्र, चरनन चंद्र लगै,
मन- वच- तन जजत अमंद, आतम जोति जगै।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य भगवान का अर्घ

जल फलदरब मिलाय गाय गुन, आठों अंग नमाई।
शिवपदराज हेत हे श्रीपति! निकट धरों यह लाई।।
वासुपूज्य वसुपूज- तनुज पद, वासव सेवत आई।
बालब्रह्मचारी लखि जिनको, शिवतिय सनमुख धाई।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ भगवान का अर्घ

वसु द्रव्य सँवारी, तुम ढिंग धारी, आनंदकारी दृग प्यारी।
तुम हो भवतारी, करुणाधारी, यातै थारी शरनारी।।

श्री शान्ति जिनेशं, नुतचक्रेशं वृषचक्रेशं, चक्रेशं।
हनि अरि चक्रेशं हे ! गुणधेशं, दयामृतेशं मक्रेशं।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथजी का अर्घ

पथ की प्रत्येक विषमता को मैं, समता से स्वीकार करूँ।
जीवन विकास के प्रिय पथ की, बाधाओं का परिहार करूँ।।
मैं अष्ट कर्म आवरणों का, प्रभुवर आतंक हटाने को।
वसुद्रव्य संजोकर लाया हूँ, चरणों में नाथ चढ़ाने को।।

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर भगवान का अर्घ

जल फल वसु सजि हिम थार, तन मन मोद धरों।
गुण गाऊँ भवदधितार, पूजत पाप हरों।।
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मतिदायक हो।।

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय चौबीसी भगवान का अर्घ

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करों,
तुमको अरपों भवतार, भवतरि मोक्ष वरों।
चौबीसों श्री जिनचंद, आनंद कंद सही
पद जजत हरत भव फंद, पावत मोक्ष मही।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं नि...स्वाहा।

पंच बालयति का अर्घ

सजि वसुविधि द्रव्य मनोज्ञ, अरघ बनावत हैं।
वसुकर्म अनादि संयोग, ताहि नशावत हैं।।

श्री वासुपूज्य मलि नेम, पारस वीर यती।
नमूँ मन-वच-तन धरि प्रेम, पाँचों बालयति।।

ॐ ह्रीं श्री पंच बालयति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री बाहुबली स्वामी का अर्घ

हूँ शुद्ध निराकुल सिद्धों सम, भव लोक हमारा वासा ना।
रिपु रागरु द्वेष लगे पीछे, यातें शिवपद को पाया ना।।
निज के गुण निज में पाने को, प्रभु अर्घ संजोकर लाया हूँ।
हे ! बाहुबली तुम चरणों में, सुख सन्मति पाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलहकारण का अर्घ

जल फल आठों दरब चढ़ाय, द्यानत विरत करों मन लाय।
परम गुरु हो!, जय जय नाथ परम गुरु हो!।।
दरश विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय।
परम गुरु हो!, जय जय नाथ परम गुरु हो!।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमेरु का अर्घ

आठ दरब मय अरघ बनाय, द्यानत पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा जी को करो प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु संबंधी अशीति जिन चैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीश्वरद्वीप का अर्घ

यह अरघ कियो निज हेत, तुमको अरपतु हों।
द्यानत कीज्यो शिव खेत, भूमि समरपतु हों।।

नंदीश्वर श्री जिनधाम, बावन पुंज करों।
वसुदिन प्रतिमा अभिराम, आनंद भाव धरों।।
नंदीश्वर द्वीप महान्, चारों दिशि सोहें।
बावन जिन मंदिर जान, सुर नर मन मोहें।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिण द्विपंचाशज्-जिनालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षण का अर्घ

आठों दरब संवार, द्यानत अधिक उछाह सों।
भव-आताप निवार, दस लच्छन पूजों सदा।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माङ्गाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय का अर्घ

आठ दरब निरधार, उत्तम सो उत्तम लिये।
जनम रोग निरवार सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस्वती का अर्घ

जल चंदन अक्षत फूल चरु, दीप धूप अति फल लावै।
पूजा को ठानत जो तुम जानत, सो नर द्यानत सुख पावै।।
तीर्थंकर की ध्वनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञान मई।
सो जिनवर वानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वती देव्यै: अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तर्षि का अर्घ

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना।
फल ललित आठों द्रव्य मिश्रित, अर्घ कीजे पावना।।
मन्वादि चारण-ऋद्धि धारक, मुनिन की पूजा करूँ।
ता करें पातक हरें सारे, सकल आनंद विस्तरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री मन्वादिसप्तर्षिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चा.च. प.पू. आचार्य 108 श्री शांतिसागरजी महाराज का अर्घ

पद अनर्घ्य की प्राप्ती हेतु, अर्घ्य बनाकर लाये हैं।
गुरुवर दो सामर्थ्य हमें हम, चरण शरण में आये हैं।।
शांति सिन्धु दो शांति हमें हम शांति पाने आये हैं।
विशद भाव से पद पंकज में अपना शीष झुकाये हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चा.च. आचार्य 108 श्री शांतिसागर यतिवेरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य 108 श्री विमलसागरजी महाराज का अर्घ्य

हे ज्ञान मूर्ति ! करुणा निधान हे धर्म दिवाकर ! करुणा कर।
हे तेज पूञ्ज ! हे तपोमूर्ति ! सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर।।
विमल सिंधु के विमल चरण से करुणा के झरने झरते।
गुरु अष्ट गुणों की सिद्धि हेतु यह अर्घ्य समर्पण हम करते।।

ॐ ह्रीं श्री सन्मार्ग दिवाकर वात्सल्य रत्नाकर धर्म प्रणेता आचार्य श्री विमलसागर यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य 108 श्री विरागसागरी महाराज का अर्घ्य

जल चन्दन के कलश थाल में अक्षत पुष्प सजाये हैं।
चरुवर दीप धूप फल लेकर अर्घ चढ़ाने आये हैं।
मन मंदिर में मेरे गुरुवर हमने तुम्हें बसाया है।
विराग सिन्धु के श्री चरणों में अपना शीश झुकाया है।

ॐ ह्रीं श्री प्रज्ञा श्रमण बालयति प.पू. आचार्य श्री विरागसागगर यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य 108 श्री भरतसागरजी महाराज का अर्घ्यं

जल चन्दन के कलश मनोहर अक्षत पुष्प चरु लाये।
दीप धूप अरु फल को लेकर अर्घ्य चढ़ाने हम आये ।

हृदय कमल में राजें गुरुवर सुन्दर सुमन बिछाते है।
भरत सिंधु के श्री चरणों में सादर शीष झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री बालयोगी प्रशान्त मूर्ति आचार्य 108 श्री भरसागर यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर ले मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी मुनीद्राय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय महार्घ

मैं देव श्री अर्हंत पूजूँ सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ साधु पूजूँ भाव सों।।1।।
अर्हन्त-भाषित बैन पूजूँ द्वादशांग रची गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरुचरन शिव हेतु सब आशा हनी।।2।।
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि दया-मय पूजूँ सदा।
जजुँ भावना षोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा।।3।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूँ।
पंचमेरु नंदीश्वर जिनालय खचर सुर पूजत भजूँ।।4।।
कैलाश श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा।।5।।
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस-वसु जयि होय पति शिव गेह के।।6।।

दोहा– **जल गंधाक्षत पुष्प चरु दीप धूप फल लाय।**
सर्वपूज्य पद पूजहूँ बहुविधि भक्ति बढ़ाय।।7।।

ॐ ह्रीं श्री भावपूजा भाववंदना त्रिकालपूजा त्रिकालवंदना करै करावै भावना भावै श्री अरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः प्रथमानुयोग–करणानुयोग–चरणानुयोग–द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शन–विशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो नमः। उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन–सम्यग्ज्ञान–सम्यक्चारित्रेभयो नमः। जल के विषै, थल के विषै, आकाश के विषै, गुफा के विषै, पहाड़ के विषै, नगर–नगरी विषै, ऊर्ध्व लोक मध्य लोक पाताल लोक विषै विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पाँच भरत, पाँच ऐरावत, दश क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनबिम्बेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरु संबंधी अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाश, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनगिर, राजगृही, मथुरा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, हस्तिनापुर, चंदेरी, पपोरा, अयोध्या, शत्रुञ्जय, तारङ्गा, चमत्कारजी, महावीरजी, पदमपुरी, तिजारा, खजुराहो, श्रेयांशगिरि, मक्सी पार्श्वनाथ, चंवलेश्वर आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारण ऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसंतं श्री वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशंतितीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य खंडे ... देश... प्रान्ते... नाम्नि नगरे... मासानामुत्तमे ... मासे शुभ पक्षे ... पक्षे तिथौ ... वासरे ... मुनि आर्यिकानां श्रावक–श्राविकानां सकल कर्मक्षयार्थं अनर्घ पद प्राप्तये संपूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वादः

शांतिपाठ (भाषा)

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्प क्षेपण करते रहना चाहिये)

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शील गुणव्रत संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजै, निरखत नयन कमलदल लाजै।।1।।

पंचम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमो शांतिहित शांतिविधायक।।2।।

दिव्य विटप पहुपन की वर्षा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी।।3।।

शांति जिनेश शांति सुखदाई, जगत पूज्य पूजौं शिरनाई।
परम शांति दीजै हम सबको, पढ़ैं जिन्हें पुनि चार संघको।।4।।

वसंत तिलका

पूजैं जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके, इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शांतिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप, मेरे लिये करहि शांति सदा अनूप।।5।।

इन्द्रवज्रा

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों और यतिनायकों को।
राजा–प्रजा राष्ट्रसुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन शांति को दे।।6।।

स्रग्धरा छन्द

होवे सारी प्रजा को सुख बलयुत हो धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समै पै तिलभर न रहें व्याधियों का अन्देशा।।
होवे चोरी न जारी सुसमय वरतै हो न दुष्काल भारी।
सारे ही देश धारै जिनवर वृषको जो सदा सौख्यकारी।।7।।

दोहा – **घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।**
शांति करो सब जगत में वृषभादिक जिनराज।।8।।

अथेष्टक प्रार्थना (मन्दाक्रान्ता)

शास्त्रों का हो पठन सुखदा लाभ सत्संगति का।
सद्वृत्तों का सुजस कहके, दोष ढाकूँ सभी का।।
बोलूँ प्यारे वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ ।
तो लों सेऊँ चरण जिनके मोक्ष जौलो न पाऊँ।।1।।

आर्य्या

तब पद मेरे हियमें, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तबलौ लीन रहौ प्रभु, जबलौ न पाया मुक्ति पद मैंनें ।।10।।

अक्षर पद मात्रा से, दूषित जो कछु कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुड़ाओ भव दुःख से।।11।।

हे जगबन्धु! जिनेश्वर पाऊँ, तव चरण शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ कर्मोंका क्षय सुबोध सुखकारी।।12।।

(परिपुष्पांजलि क्षेपण)

विसर्जन

बिन जाने वा जानके, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद ते परमगुरु, सो सब पूरण होय।।1।।

पूजनविधि जानूँ नहीं, नहीं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हूँ नहीं, क्षमा करहु भगवान।।2।।

मंत्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरणकी सेव।।3।।

आये जो-जो देवगण, पूजे भक्ति प्रमान।
ते सब मेरे मन बसो,चौबीसों भगवान।।4।।

श्री जिनवर की आशिका, लीजे शीश चढ़ाय।
भव-भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाय।।

श्री बीस तीर्थंकर पूजा भाषा

दीप अढ़ाई मेरु पन, सब तीर्थंकर बीस।
तिन सबकी पूजा करूँ, मन-वच-तन धरि शीस।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशति-तीर्थंकराः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं विद्यमानविंशति-तीर्थंकराः ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं विद्यमानविंशति-तीर्थंकराः ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्। सन्निधिकरण्।

।। अथाष्टक।।

इन्द्र फणीन्द्र नरेन्द्र वंद्य, पद निर्मलधारी,
शोभनीक संसार, सारगुण हैं अविकारी।
क्षीरोदधि सम नीरसों (हो), पूजों तृषा निवार,
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार।
श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जहाज।।1।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशति-तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के जीव, पाप आताप सताये,
तिनकों साता दाता, शीतल वचन सुहाये।
बावन चंदनसों जजूं (हो), भ्रमन- तपन निरवार,
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार।
श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जहाज।।2।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यो भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह संसार अपार, महासागर जिनस्वामी,
तातैं तारे बड़ी, भक्ति नौका जग नामी।

तन्दुल अमल सुगंधसों (हो), पूजों तुम गुणसार,
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार।
श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जहाज।।3।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्योअक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भविक-सरोज-विकाश, निंद्य-तम-हर रविसे हो,
जति श्रावक आचार, कथन को, तुम ही बड़े हो।
फूलसुवास अनेकसों (हो), पूजों मदन प्रहार,
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार।
श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जहाज।।4।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काम नाग विषधाम, नाशको गरुड़ कहे हो,
क्षुधा महादव- ज्वाल, तासको मेघ लहे हो।
नेवज बहुघृत मिष्टसों (हो), पूजों भूख विडार,
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार।
श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जहाज।।5।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उद्यम होन न देत, सर्व जग मांहिं भर्‌यो है,
मोह महातम घोर, नाश परकाश कर्‌यो है।
पूजों दीप प्रकाशसों (हो), ज्ञान ज्योति करतार,
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार।
श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जहाज।।6।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म आठ सब काठ, भार विस्तार निहारा,
ध्यान अगनि कर प्रकट, सब कीनो निरवारा।
धूप अनुपम खेवतें (हो), दुःख जलैं निरधार,
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार।
श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जहाज।।7।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यावादी दुष्ट, लोभऽहंकार भरे हैं,
सबको छिन में जीत, जैन के मेरु खरे हैं।
फल अति उत्तमसों जजों (हो), वांछित फलदातार,
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार।
श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जहाज।।8।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आठों दर्व, अरघ कर प्रीति धरी है,
गणधर इन्द्रनिहू तैं, थुति पूरी न करी है।
द्यानत सेवक जानके (हो), जगतैं लेहु निकार,
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार।
श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जहाज।।9।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

सोरठा

ज्ञान सुधाकर चंद, भविक खेत हित मेघ हो,
भ्रम-तम-भान अमंद, तीर्थंकर बीसों नमों।

चौपाई 16 की मात्रा

सीमंधर सीमंधर स्वामी, जुगमंधर जुगमंधर नामी।
बाहु बाहु जिन जग जन तारे, करम सुबाहु बाहुबल दारे।1।

जात सुजातं केवलज्ञानं, स्वयंप्रभु प्रभु स्वयं प्रधानं।
बृषभानन ऋषिभानन दोषं, अनंतवीरज वीरजकोषं।2।

सौरीप्रभ सौरीगुणमालं, सुगुण विशाल विशाल दयालं।
वज्रधार भवगिरि वज्जर हैं, चंद्रानन चंद्रानन वर हैं।3।

भद्रबाहु भद्रनि के करता, श्रीभुजंग भुजंगम हरता।
ईश्वर सबके ईश्वर छाजैं, नेमिप्रभु जस नेमि विराजैं।4।

वीरसेन वीरं जग जाने, महाभद्र महाभद्र बखाने।
नमों जसोधर जसधरकारी, नमों अजितवीरज बलधारी।5।

धनुष पाँच सो काय विराजै, आयु कोडि पूरब सब छाजै।
समवशरण शोभित जिनराजा, भव जल तारनतरन जिहाजा।6।

सम्यक्रत्नत्रय निधिदानी, लोकालोकप्रकाशक ज्ञानी।
शतइन्द्रानि कर वंदित सोहैं, सुर नर पशु सबके मन मोहैं।7।

दोहा

तुमको पूजैं वंदना, करैं धन्य नर सोय।
द्यानत सरधा मन धरै, सो भी धरमीहोय।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यो महाअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वाद

श्री सिद्ध पूजा

(आचार्य पद्मनन्दी कृत)

ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिन्दु सपरं ब्रह्मा-स्वरावेष्टितं,
वर्गापूरित-दिग्गताम्बुज-दलं तत्संधि-तत्त्वान्वितम्
अंतः पत्र-तटेष्वनाहत- युतं ह्रींकार-सवेष्टितं।
देवं ध्यायति यः स मुक्ति सुभगो वैरीभ कंठी रवः।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये ! सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये ! सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये ! सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट सन्निधिकरणं।

निरस्त- कर्म- सम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम्।
वन्देऽहं परमात्मानममूर्त्तमनुपद्रवम्।।1।।

(यह पढ़कर थाली में पुष्प छोड़ना चाहिए)

सिद्धौ निवासमनुगं परमात्म-गम्यं
हान्यादि भावरहितं भव-वीत-कायम्।
रेवापगा- वर-सरो- यमुनोद्भवानां
नीरैर्यजे कलशगै-र्वरसिद्ध-चक्रम्।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिन् जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

आनन्द-कन्द-जनकं घन-कर्म-मुक्तं
सम्यकत्व-शर्म-गरिमं जननार्तिवीतम्।
सौरभ्य-वासित-भुवं हरि-चन्दानानां
गन्धैर्यजे परिमलैर्वर-सिद्ध चक्रम्।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिन् संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.स्वाहा।

सर्वावगाहन–गुणं सुसमाधि–निष्ठं
सिद्धं स्वरूप–निपुणं कमलं विशालम्।
सौगन्ध्य–शालि–वनशालि–वराक्षतानां
पुंजैर्यजे–शशिनिभैर्वरसिद्धचक्रम् ।।3 ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिन् अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि.स्वाहा।

नित्यं स्वदेह – परिमाणमनादिसंज्ञं
द्रव्यानपेक्षममृतं मरणाद्यतीतम्।
मन्दार–कुन्द–कमलादि–वनस्पतीनां
पुष्पैर्यजे शुभतमै–र्वरसिद्धचक्रम् ।।4 ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिन् कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि.स्वाहा।

ऊर्द्ध–स्वभाव–गमनं सुमनो–व्यपेतं
ब्रह्मादि–बीज–सहितं गगनावभासम्।
क्षीरान्न–साज्य–वटकै रसपूर्णगर्भै–
नित्यं यजे चरुवरैर्वरसिद्धचक्रम् ।।5 ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिन् क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.स्वाहा।

आतंङ्क–शोक–भयरोग–मद प्रशान्तं
निर्द्वन्द–भाव–धरणं महिमा–निवेशम्।
कर्पूर–वर्ति–बहुभिः कनकावदातै–
र्दीपैर्यजे रुचिवरैर्वरसिद्धचक्रम् ।।6 ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिन् मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.स्वाहा।

पश्यन्समस्त – भुवनं युगपन्नितान्तं
त्रैकाल्य–वस्तु–विषये निविड–प्रदीपम्।
सद् द्रव्यगन्ध – घनसार – विमिश्रितानां
धूपैर्यजे परिमलैर्वर–सिद्धचक्रम् ।।7 ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिन् अष्टकर्मदहनाय धूपं नि.स्वाहा।

सिद्धासुरादिपति – यक्ष – नरेन्द्रचक्रैः –
ध्येयं शिवं सकल–भव्य–जनैः सुवन्द्यम्।
नारंङ्गि– पूग– कदली– फलनारिकेलैः
सोऽहं यजे वरफलैर्वरसिद्ध चक्रम् ।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिन् मोक्षफलप्राप्तये फलं नि.स्वाहा।

गन्धाढ्यं सुपयो मधुव्रत–गणैः सङ्गं वरं चंदनं,
पुष्पौघं विमलं सदक्षत–चयं रम्यं चरुं दीपकम्।
धूपं गन्धयुतं ददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये,
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं सेनोत्तरं वाञ्छितम् ।।9 ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिन् अनर्घ्यपदप्राप्तये निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानोपयोगविमलं विशदात्मरूपं
सूक्ष्म–स्वभाव–परं यदनन्तवीर्यम्।
कर्मौघ–कक्ष–दहनं सुख–शस्यबीजं
वन्दे सदा निरुपमं वर–सिद्धचक्रम् ।।10 ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिन् महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैलोक्येश्वर–वन्दनीय–चरणाः प्रापुः श्रियं शाश्वतीं
यानाराध्य निरुद्ध–चण्ड–मनसः सन्तोऽपि तीर्थंकराः।
सत्सम्यक्त्व–विबोध–वीर्य्य–विशदाऽव्याबाधताद्यैर्गुणै–
र्युक्तांस्तानिह तोष्टवीमि सततं सिद्धान् विशुद्धोदयान् ।।11 ।।

अथ जयमाला

विराग सनातन शांत निरंश, निरामय निर्भय निर्मल हंस।
सुधाम विबोध–निधान विमोह प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध–समूह ।1।

विदूरित-संसृति-भाव निरंग, समामृत-पूरित देव विसंग।
अबंध कषाय-विहीन विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध-समूह।2।

निवारित-दुष्कृतकर्म-विपाश, सदामल-केवल-केलि-निवास।
भवोदधि-पारग शांत विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध-समूह।3।

अनंत-सुखामृत-सागर-धीर, कलंक-रजो-मल-भूरि-समीर।
विखण्डित-कामविराम-विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध-समूह।4।

विकार विवर्जित तर्जितशोक, विबोध-सुनेत्र-विलोकित-लोक।
विहार विराव विरंग विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध-समूह।5।

रजोमल-खेद विमुक्त विगात्र, निरन्तर नित्य सुखामृत-पात्र।
सुदर्शन राजित नाथ विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध-समूह।6।

नरामर-वंदित निर्मल-भाव, अनंत-मुनीश्वर पूज्य विहाव।
सदोदय विश्व महेश विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध-समूह।7।

विदंभ वितृष्ण विदोष विनिद्र, परापरशंकर सार वितेंद्र।
विकोप विरूप विशंक विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध-समूह।8।

जरा-मरणोज्झित-वीत-विहार, विचिंतित निर्मल निरहंकार।
अचिन्त्य-चरित्र विदर्प विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध-समूह।9।

विवर्ण विगंध विमान विलोभ, विमाय विकाय विशब्द विशोभ।
अनाकुल केवल सर्व विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध-समूह।10।

मालिनी

असम-समयसारं चारु-चैतन्य चिन्हं,
पर-परणति-मुक्तं पद्मनंदीन्द्र-वन्द्यम्।
निखिल-गुण-निकेतं सिद्धचक्रं विशुद्धं,
स्मरति नमति यो वा स्तौति सोऽभ्येति मुक्तिम्।1।

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल छंद

अविनाशी अविकार परम-रस-धाम हो,
समाधान सर्वज्ञ सहज अभिराम हो।
शुद्धबुद्ध अविरुद्ध अनादि अनंत हो,
जगत-शिरोमणि सिद्ध सदा जयवंत हो।1।

ध्यान अग्निकर कर्म कलंक सबै दहे,
नित्य निरंजनदेव स्वरूपी ह्वै रहे।
ज्ञायक ज्ञेयाकार ममत्व निवारकैं।
सो परमातम सिद्ध नमूँ सिर नायकैं।।2।।

दोहा

अविचल ज्ञान प्रकाशते, गुण अनन्त की खान।
ध्यान धरैं सो पाइए, परम सिद्ध भगवान।।3।।

अविनाशी आनन्द मय, गुण पूरण भगवान।
शक्ति हिये परमात्मा, सकल पदारथ ज्ञान।।4।।

इत्याशीर्वाद ।।पुष्पांजलि।।

।। विशद वाणी ।।

Jwé {eî` H$m ZmVm Hw$N>r AOr~ hmoVm h¡Ÿ&
IyZ Ho$ [aíVm| go ^r Á`mXm H$ar~ hmoVm h¡Ÿ&&
ha {H$gr H$mo `h gm¡^m½` Zht {_bVmŸ&
Cgr H$mo {_bVm {OZH$m AÀN>m Zgrµ~ hmoVm h¡Ÿ&&

– आचार्य विशदसागर

समुच्चय चौबीसी जिनपूजा

वृषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पद्म सुपार्श्वजिनराय।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजित सुरराय।।
विमल अनंत धर्मजस उज्ज्वल, शांति-कुन्थु अरह मल्लिमनाय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्वप्रभु, वर्द्धमान पद पुष्प चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि-महावीरांत-चतुर्विंशति-जिन-समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। ॐ ह्रीं श्री वृषभादि-वीरांत-चतुर्विंशतिजिनसमूह ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री वृषभादि-वीरांत-चतुर्विंशति-जिन समूह ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

मुनिमन सम उज्ज्वल नीर, प्रासुक गंध भरा।
भरि कनक कटोरी धीर, दीनी धार धरा।
चौबीसों श्रीजिनचन्द, आनन्दकन्द सही।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्ष मही।।1।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि-महावीरांतेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गोशीर कपूर मिलाय, केशर रंगभरी।
जिनचरनन देत चढ़ाय, भव आताप हरी।। चौबीसों...2।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि-महावीरांतेभ्यो भव-ताप विनाशनाय चन्दनं नि.स्वाहा।

तंदुल सित सोम समान, सुन्दर अनियारे।
मुक्ताफल की उनमान, पुंजधरौं प्यारे।। चौबीसों...3।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि-महावीरांतेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

वरकंज कदंब कुरंड, सुमन सुगंध भरे।
जिन अग्र धरौं गुणमंड, काम कलंक हरे।। चौबीसों...4।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि-महावीरांतेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मन मोहन मोदक आदि, सुन्दर सद्य बने।
रसपूरित प्रासुक स्वाद, जजत क्षुधादि हने।। चौबीसों...5।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि-महावीरांतेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तमखंडन दीप जगाय, धारों तुम आगे।
सब तिमिर मोह क्षय जाय, ज्ञानकला जागै।। चौबीसों...6।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि-महावीरांतेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध हुताशन मांहि, हे प्रभु खेवत हों।
मिस धूम करम जरि जाहिं, तुम पद सेवत हों।। चौबीसों...7।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि-महावीरांतेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुचि पक्व सुरस फल सार, सब ऋतु के ल्यायो।
देखत दृग मन को प्यार, पूजत सुख पायो।। चौबीसों...8।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि-महावीरांतेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आठों शुचि सार, ताको अर्घ करो।
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों।। चौबीसों...9।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि-महावीरांतेभ्यो चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्योऽनर्घ-पदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **श्रीमत तीरथनाथपद; माथ नाय हित हेत।**
गाऊँ गुणमाला अबै; अजर अमरपद देत।।1।।

धत्ता

जय भवतम भंजन जनमनकंजन, रंजन दिनमनि स्वच्छ करा।
शिव मग परकाशक अरिगन नाशक, चौबीसों जिनराज वरा।।2।।

।। पद्धरि छन्द।।

जय ऋषभदेव ऋषिगण नमंत, जय अजित जीत वसु अरि तुरन्त।
जय संभव भव भय करत चूर, जय अभिनन्दन आनन्दपूर।।3।।

जय सुमति सुमतिदायक दयाल, जय पद्म पद्मदुति तन रसाल।
जय जय सुपार्श्व भवपास नाश, जय चंद चंदतनदुति प्रकाश।।4।।

जय पुष्पदंत दुतिदंत सेत, जय शीतल शीतल गुण निकेत।
जय श्रेयनाथ नुतसहस भुज्ञ, जय वासवपूजित वासुपुज्ज।।5।।

जय विमल विमलपद देनहार, जय जय अनंत गुणगण अपार।
जय धर्म धर्म शिवशर्म देत, जय शांति शांति पुष्टि करेत।।6।।

जय कुन्थु कुन्थुआदित रखेय, जय अर जिन वसुअरि क्षय करेय।
जय मल्लि मल्ल हतमोह मल्ल, जय मुनिसुव्रत व्रतशल्ल दल्ल।।7।।

जय नमि नित वासव नुत सपेम, जय नेमिनाथ वृषचक्रनेम।
जय पारसनाथ अनाथनाथ, जय वर्द्धमान शिवनगर साथ।।

घत्ता– **चौबीस जिनंदा, आनंदकंदा–पापनिकंदा सुखकारी।**
तिनपद जुगचंदा उदय अमंदा, वासव वंदा हितकारी।।

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्योः महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा – **भुक्ति मुक्ति दातार, चौबीसों जिनराज वर।**
तिन पद मन वच धार, जो पूजै सो शिव लहै।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्

श्री आदिनाथ जिनपूजन

नाभिराय मरुदेवि के नन्दन, आदिनाथ स्वामी महाराज।
सर्वार्थसिद्धितै आप पधारे, मध्यलोक मांहि जिनराज।।
इन्द्रदेव सब मिलकर आये, जन्म महोत्सव करने काज।
आह्वानन सब विधि मिल करके, अपने कर पूजैं प्रभु पाय।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सान्निधिकरणं।

क्षीरोदधिको उज्जवल जल ले, श्रीजिनवर पद पूजन जाय।
जन्म–जरा दुःख मेटन कारन, ल्याय चढ़ाऊं प्रभुजी के पांय।।
श्रीआदिनाथजी के चरण–कमल पर, बलि–बलि जाऊँ मनवचकाय।
हो करुनानिधि भवदुःख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरी चंदन दाह निकन्दन, कंचनझारी में भर ल्याय।
श्रीजी के चरण चढ़ावो भविजन, भव आताप तुरत मिट जाय।।
श्री आदि... ।।चंदनं।।

शुभशालि अखंडित सौरभ–मंडित, प्रासुकजलसौं धोकर ल्याय।
श्रीजी के चरण चढ़ावो भविजन, अक्षय पद को तुरत उपाय।।
श्री आदि... ।।अक्षतान्।।

कमल केतकी बेल चमेली, श्रीगुलाब के पुष्प मंगाय।
श्रीजी के चरण चढ़ावो भविजन, कामबाण तुरत नसि जाय।।
श्री आदि... ।।पुष्पं।।

नेवज लीना षट् रस भीना श्रीजिनवर आगे धरवाय।
थाल भराऊँ क्षुधा नशाऊँ, जिन गुण गावत मन हरषाय ।।
श्री आदि... ।।नैवेद्यं।।

जगमग जगमग होत दशो दिश, ज्योति रही मंदिर में छाय।
श्रीजीके सन्मुख करत आरती, मोह तिमिर नासै दुःखदाय।।
श्री आदि... ।।दीपं।।

अगर कपूर सुगन्ध मनोहर, चंदन कूट सुगन्ध मिलाय।
श्रीजीके सन्मुख खेय धुपायन, कर्म जरे चहूँ गति मिट जाय।।
श्री आदि... ।।धूपं.।।

श्रीफल और बादाम सुपारी, केला आदि छुहारा ल्याय।
महामोक्ष–फल पावन कारन, ल्याय चढ़ाऊँ प्रभुजी के पाँय।।
श्री आदि...।।फलं.।।

शुचि निरमल नीरं गंध सुअक्षत पुष्प चरु ले मन हरषाय।
दीप धूप फल अर्घ सु लेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय।।
श्री आदि... ।।अर्घं.।।

पंचकल्याणक

सर्वार्थसिद्धितैं चये, मरु देवी उर आय।
दोज असित आषाढ़ की, जजूँ तिहारे पाय।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाद्वितीयायां गर्भ कल्याणक प्राप्ताय श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र वदी नौमी दिना, जन्म्या श्री भगवान।
सुरपति उत्सव अति करा, मैं पूजो धरि ध्यान।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवम्यां जन्म कल्याणक...अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृणव्रत ऋद्धि सब छांडिके तप धारयो बन जाय।
नौमी चैत्र असेत की, जजूँ तिहारे पांय।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवम्यां तप कल्याणक...अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदि एकादशी, उपज्यो केवल ज्ञान।
इन्द्र आय पूजा करी, मैं पूजों इह थान।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां ज्ञानकल्याणक...अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ चतुर्दशि कृष्ण की, मोक्ष गये भगवान।
भवि जीवों को बोधि के, पहुँचे शिवपुर थान।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक...अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

आदीश्वर महाराज मैं विनती तुमसे करूँ।
चारो गति के मांहि मैं दुःख पायो सो सुनो।।

अष्ट कर्म मैं एकलो, यह दुष्ट महादुःख देत हो।
कबहुँ इतर निगोद में मोकूँ, पटकत करत अचेत हो।।
म्हारी दीनतणी सुन विनती।।1।।

प्रभु कबहुँक पटक्यो नरक में, जठैं जीव महादुःख पाय हो।
निष्ठुर निरदई नारकी, जठै करत परस्पर घात हो। म्हारी.

प्रभु नरकतणा दुःख अब कहु, जठै करत परस्पर घात हो।
कोइयक बांध्यो खंभसो, पापी दे मुदंगर की मार हो। म्हारी.

कोइयक काटे करोत सों, पापी अंगतणी दोय फाड़ हो।
प्रभु यह विधि दुःख भुगत्या घणा, फिर गति पाई तिरयंच हो। म्हारी.

हिरण बकरा बाछड़ा, पशु दीन गरीब अनाथ हो।
पकड़ कसाई जाल में, पापी काट काट तन खाय हो।
प्रभु मैं ऊंट बलद भैंसा भयो, ज्यापै लादियो भार अपार हो। म्हारी.

नहिं चाल्यो जब गिर परयो, पापी दे सोटन की मार हो।
प्रभु कोइयक पुण्य संजोग सु मैं तो पायो स्वर्ग निवास हो। म्हारी.

देवांगना संग रमि रह्यो, जठै भोगनि को परिताप हो।
प्रभुसंग अप्सरा रमि रह्यो, कर कर अति अनुराग हो। म्हारी.

कबहुँक नंदनवन–विषै प्रभु, कबहुँक वन गृह मांहि हो।
प्रभु यहि विधिकाल गमायकै, फिर मालागई मुरझाय हो। म्हारी.

देव थिति सब घट गई, फिर उपज्यो सोच अपार हो।
सोच करता तन खिर पड्यो, फिर उपज्यो गरभ में जाय हो। म्हारी.

प्रभु गर्भतणा दुःख अब कहूँ, जठै सकुड़ाई की ठौर हो।
हलन–चलन नहिं कर सक्यो जठै, सघनकीच घनघोर हो। म्हारी.

माता खावै चरपरो, फिर लागै तन संताप हो।
प्रभु ज्यो जननी तातो भखै, फिर उपजे तन संताप हो। म्हारी.

औंधे मुख झूल्यो रह्यो, फेक निकसन कौन उपाय हो।
कठिन–2 कर निसरयो जैसे, निसरैं जंत्रीमें तार हो। म्हारी.

प्रभु फिर निकसत ही धरत्यां पड्यो, फिर लागी भूख अपार हो।
रोय रोय बिलख्यो घणो, दुःख वेदन को नाहिं पार हो। म्हारी.

प्रभु दुःख मेटन समरथ धनी, यातैं लागूँ तिहारे पाय हो।
सेवक अरज करै प्रभु! मोकूँ, भवोदधि पार उतार हो। म्हारी.

दोहा – **श्रीजी की महिमा अगम है, कोई न पावै पार।**
मैं मति अल्प अज्ञान हूँ, कौन करै विस्तार।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **विनती ऋषभ जिनेश की, जो पढ़सी मन लाय।**
स्वर्गों में संशय नहीं, निश्चय शिवपुरजाय।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

श्री चंद्रप्रभ जिनपूजन

चारुचरन आचरन, चरन चित्त–हरन चिह्नचर,
चन्द–चन्द–तनचरित, चंदथल चहत चतुर नर।
चतुक चण्ड–चकचूरि, चारि चिदचक्र गुनाकर,
चंचल चलित सुरेश, चूलनुत चक्र धनुरधर।।
चर अचर हितू तारन तरन, सुनत चहकि चिर नंद शुचि।
जिनचंद चरन चरच्यो चहत, चितचकोर नचि रच्चि रुचि।।
धनुष डेढ़ सौ तुंग तन, महासेन, नृपनन्द।
मातु लछमना उर जये, थापों चन्द जिनन्द।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन् । अत्र तिष्ठतिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

(छन्द अवतार)

गंगाह्रद निरमल नीर, हाटक भृंग भरा,
तुम चरन जजों वर वीर, मेटो जनम जरा।
श्रीचंद्रनाथ दुति चंद, चरनन चंद लगे,
मन वच तन जजत अमंद, आतम जोति जगै।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री खण्ड कपूर सुचंग, केशर रंग भरी।
घसि प्रासुक जल के संग,भवआताप हरी ।।श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल सित सोम समान,सो ले अनियारे।
दिय पुंज मनोहर आन, तुम पदतर प्यारे।।श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरद्रुम के सुमन सुरंग, गन्धित अलि आवै।
तासों पद पूजत चंग, कामबिथा जावै।।श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज नाना परकार, इन्द्रिय बलकारी।
सो लै पद पूजों सार, आकुलता हारी।।श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तम भंजन दीप संवार, तुम ढिग धारतु हों।
मम् तिमिरमोह निरवार, यह गुन धारतु हों।।श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध हुतासन माहिं, हे प्रभु! खेवतु हों।
मम् करम दुष्टजरि जाहिं, यातैं सेवतु हों।।श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अति उत्तम फल सुमंगाय तुम गुण गावतु हौं।
पूजों तन मन हरषाय, विघन नशावतु हौं।।श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सजि आठों दरब पुनीत, आठों अंग नमो।
पूजों अष्टम जिनमीत, अष्टमअवनी गमों।।श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक अर्घ

(तोटक छन्द)

कलि पंचम चैत सुहात अली, गरभागम मंगल मोद भरी।
हरि हर्षित पूजत मातु पिता, हम ध्यावत पावत शर्वसिता।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णपंचम्यां गर्भमंगलप्राप्ताये श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कलिपौष इकादशि जन्मलयो, तब लोकविषे सुखथोक भयो।
सुर ईश जजें गिरशीश तबै, हम पूजत हैं नुतशीश अबै।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताये श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं नि.स्वाहा।

तप दुद्धर श्रीधर आप धरा, कलिपौष ग्यारसि पर्व वरा।
निज ध्यानविषैं लवलीन भये, धनि सो दिन पूजत विघ्न गये।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपः कल्याणकप्राप्ताये श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं नि.स्वाहा।

वर केवलभानु उद्योत कियो, तिहुँ लोक तणों भ्रम मेट दियो।
कलिफाल्गुन सप्तमी इन्द्रजजे, हम पूजहिं सर्वकलंक भजे।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां केवलज्ञानप्राप्ताये श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं नि.स्वाहा।

सित फाल्गुनसप्तमि मुक्तिगये, गुणवन्त अनन्तअबाध भये।
हरि आय जजें तित मोदधरे, हम पूजत ही सब पाप हरे।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताये श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं नि.स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **हे मृगांक अंकित चरण, तुम गुण अगम अपार।**
गणधर से नहिं पार लहिं, तौ को वरनत सार।।
पै तुम भगति हिये मम्, प्रेरैं अति उमगाय।
तातैं गाऊँ सुगुण तुम, तुम ही होउ सहाय।।

(पद्धरि छन्द)

जयचन्द्र जिनेन्द्र दयानिधान, भवकानन हानन दवप्रमान।
जय गरभ जनम मंगल दिनन्द भवि जीवविकाशन शर्मकन्द।।
दशलक्ष पूर्व की आयु पाय, मनवांछित सुख भोगे जिनाय।
लखि कारण है जगतैं उदास, चिन्त्यो अनुप्रेक्षा सुख निवास।।
तितलौकांतिक बोध्योनियोग, हरिशिविका सजिधरियो अभोग।
तापै तुम चढ़ि जिन चन्दराय, ता छिनकी शोभा को कहाय।।
जित संग सेत सित चमर ढार, सितछत्र शीस गलगुल कहार।
सिररतनजड़ित भूषण विचित्र,सित चन्द्रचरण चरचैं पवित्र।।
सिततनद्युतिनाकाधीश आप, सितिशिविका काँधे धरि सुचाप।
सित सुजस सुरेश सर्व, सित चित में चिन्तन जात पर्व।।
सितचन्दनगरतैं निकसि नाथ, सितवन में पहुँचे सकल साथ।
सितशिलाशिरोमणिस्वच्छछांह, सिततपतितधार्योतुम जिनाह।।
सित पय को पारण परमसार, सित चन्द्रदत्त दीनों उदार।
सित कर में सो पयधार देत, मानो बाँधत भवसिंधु सेत।।

मानो सुपुण्यधारा प्रतच्छ, तित अचरज पनसुर किय ततच्छ।
फिर जायगहनसिततप करंत, सितकेवलज्योति जग्यो अनंत।।
लहि समवसरण रचना महान, जाके देखत सब पापहान।
जहँ तरु अशोक शौभै उतंग, सब शोकतनो चूरैं प्रसंग।।
सुर सुमनवृष्टि नभतैं सुहात, मनु मन्मथ तजि हथियार जात।
बानी जिन मुखसों खिरत सार, मनु तत्वप्रकाशन मुकुरधार।।
जहाँ चौसठ चमर अमर ढुरंत, मनु सुजसमेघ झरिलगिय तन्त।
सिंहासन है जहँ कमलजुक्त, मनु शिवसरवर को कमलशुक्त।।
दुंदुभि जित बाजत मधुर सार, मनु कमरजीत को है नगार।
सिर छत्र फिरै त्रय श्वेतवर्ण, मनु रतन तीन त्रय-ताप हर्ण।।
तन प्रभातनों मण्डल सुहात, भवि देखत निज भव सात सात।
मनुदर्पणद्युति यह जगमगाय, भविजन भवसुखदेखत सुआय।।
इत्यादि विभूति अनेक जान, बाहिज दीसत महिमा महान।
ताको वरणत नहिं लहत पार, तौ अन्तरंग को कहै सार।।
अनअन्त गुणनि जुत करि विहार, धरमोपदेश दे भव्य तार।
फिर जोगनिरोधि अघाति हान, सम्मेदथकी लिय मुकतिथान।।
'वृन्दावन' वन्दत शीश नाय, तुम जानत हो मम् उर जु भाय।
तातैं का कहों सुबार-बार, मनवांछित कारज सार-सार।।

घत्ता – **जय चन्द जिनंदा आनंदकंदा, भवभय भंजन राजैं हैं।**
रागादिक द्वन्दा हरि सब फन्दा, मुकतिमांहि थिति साजै हैं।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों दरव मिलाय गाय गुण, जो भविजन जिनचन्द जजैं।
ताकै भवभव के अघ भाजैं, मुक्ति सार सुख ताहि सजैं।।
जमके त्रास मिटें सब ताके, सकल अमंगल दूर भजें।
वृन्दावन ऐसो लखि पूजत, जातैं शिवपुर राज रजैं।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा (बाड़ा) स्थित

श्री पद्मप्रभ पूजा

श्रीधर नन्दन पद्म प्रभु, वीतराग जिन नाथ।
विघ्न हरण मङ्गल करन, नमों जोरि जुग हाथ।।
जन्म महोत्सव के लिए, मिलकर सब सुर राज।
आये कौशाम्बी नगर, पद पूजा के काज।।
पद्मपुरी में पद्मप्रभ, प्रगटे प्रतिमा रूप।
परम दिगम्बर शान्तिमय, छवि साकार अनूप।।
हम सब मिल करके यहां, प्रभु पूजा के काज।
आह्वानन करते सुखद, कृपा करो महाराज।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(अष्टक)

क्षीरोदधि उज्ज्वल नीर, प्रासुक गन्ध भरा।
कंचन झारी में लेय, दीनी धार धरा।।
बाड़ा के पद्म जिनेश, मङ्गल रूप सही।
काटो सब क्लेश महेश, मेरी अर्ज यही।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केशर कर्पूर, मिश्रित गन्ध धरो।
शीतलता के हित देव, भव आताप हरो।। बाड़ा के...।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय भवताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

ले तन्दुल अमल अखण्ड, थाली पूर्ण भरो।
अक्षय पद पावन हेतु, हे प्रभु पाप हरो।। बाड़ा के...।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

ले कमल केतकी बेल, पुष्प धरूँ आगे।
प्रभु सुनिये हमरी टेर, काम कला भागे।। बाड़ा के...।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य तुरत बनवाय, सुन्दर थाल सजा।
मम क्षुधा रोग नश जाय, गाऊँ वाद्य बजा।। बाड़ा के...।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो जगमग जगमग ज्योति, सुन्दर अनियारी।
ले दीपक श्री जिनचन्द, मोह नशे भारी।। बाड़ा के...।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ले अगर कपूर सुगन्ध, चन्दन गन्ध महा।
खेवत हों प्रभु ढिग आज, आठों कर्म दहा।। बाड़ा के...।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री फल बादाम सुलेय, केला आदि धरे।
फल पाऊँ शिव पद नाथ, अरपूँ मोद भरे।। बाड़ा के...।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत पुष्प, नेवज आदि मिला।
मैं अष्टद्रव्य से पूज, पाऊँ सिद्ध-शिला।। बाड़ा के...।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा (अर्घ चरणों का)

चरण कमल श्रीपद्म के, बन्दों मन वच काय।
अर्घ्यं चढ़ाऊँ भाव से, कर्म नष्ट हो जाय।। बाड़ा के...।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय के चरणों में अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(भूमि में विराजमान समय का अर्घ्य)

पृथ्वी में श्री पद्म की पद्मासन आकार।
परम दिगम्बर शान्तिमय, प्रतिमा भव्य अपार।
सौम्यशान्त अति कान्तिमय, निर्विकार साकार।
अष्टद्रव्य का अर्घ्यं ले, पूजों विविध प्रकार।। बाड़ा के...।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय भूमि में स्थित समय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

श्री पदम प्रभ जिनराज जी, मोहे राखो हो शरना।

दोहा – **माघ कृष्ण छट में प्रभो, आये गर्भ मंझार।**
मात सुसीमा का जनम, किया सफल करतार।। श्री पदम...।।

ॐ ह्रीं माघ कृष्णा षष्ठी दिने गर्भ मंगल प्राप्ताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक सुदी तेरस तिथि, प्रभु लियो अवतार।
देवों ने पूजा करी, हुआ मंगलाचार।। श्री पदम...।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्ला त्रयोदश्यां जन्ममंगल प्राप्ताय श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी तृणवत बन्धन तोड़।
तप धारों भगवान ने, मोह कर्म को मोड़।। श्री पदम...।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्ला त्रयोदश्यां तप कल्याणक प्राप्ताय श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

चैत्र शुक्ल की पूर्णिमा, उपज्यो केवलज्ञान।
भव सागर से पार हो, दियो भव्य जिन ज्ञान।। श्री पदम...।।

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञान प्राप्ताय श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

फाल्गुन बदी सु चौथ को, मोक्ष गये भगवान।
इन्द्र आय पूजा करी, मैं पूजौं धर ध्यान।। श्री पदम...।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्णा चतुर्थी दिने मोक्षमंगल प्राप्ताय श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

जयमाला

दोहा – **चौतीसों अतिशय सहित, बाड़ा के भगवान्।**
जयमाला श्री पद्म की, गाऊँ सुखद महान।।

पद्धरी छन्द

जय पद्मनाथ परमात्म देव, जिनकी करते सुर चरण सेव।
जय पदम पदम प्रभु तन रसाल, जय जय करते मुनिमन विशाल।।

कोशाम्बी में तुम जन्म लीन, बाड़ा में बहु अतिशय करीन।
इक जाट पुत्र ने जमीं खोद, पाया तुमको होकर समोद।।
सुनकर हर्षित हो भविक वृन्द, आकर पूजा की दुख निकन्द।
करते दुखियों का दु:ख दूर, हो नष्ट प्रेत बाधा जरूर।।
डाकिन शाकिन सब होय चूर्ण, अन्धे हो जाते नेत्र पूर्ण।
श्रीपाल सेठ अञ्जन सुचोर, तारे तुमने उनको विभोर।।
अरु नकुल सर्प सीता समेत, तारे तुमने निज भक्ति हेत।
हे सङ्कटमोचन भक्त पाल, हमको भी तारो गुण विशाल।।
बिनती करता हूँ बार-बार, होवे मेरा दु:ख क्षार क्षार।
मीना गूजर सब जाट जैन, आकर पूजे कर तृप्त नैन।।
मन वच तन से पूजे जो कोय, पावे वे नर शिव सुख जो सोय।
ऐसी महिमा तेरी दयाल, अब हम पर भी होवो कृपाल।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेडि में पद्म की पूजा रची विशाल।
हुआ रोग तब नष्ट सब, विनवे छोटेलाल।।
पूजा विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
भूलचूक सब माफ कर, दया करो भगवान्।।

जाप्य मन्त्र

सर्व सिद्धि मन्त्र : (1) ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा नम:। (2) ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नम:। (3) ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नम:। (4) ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नम:।

दुश्मन भूत निवारण मन्त्र :

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा सर्व दुष्टान् स्तम्भय स्तम्भय, मोहय मोहय अन्धय अन्धय मूकवत्कारय, करु कुरु ह्रीं दुष्टान् ठ: ठ: ठ:।

(108 बार मुट्ठी बाँधकर सुबह शाम झाड़ो, सवा लाख जप।)

श्री शान्तिनाथ जिनपूजन

या भव कानन में चतुरानन, पाप पनानन घेरी हमेरी।
आतम जानन माननठानन, वान न होन दई शठ मेरी।
ता मद भानन आपहि हो, यह छान न आन न आनन टेरी।
आन गही शरनागत को, अब श्रीपतजी पद राखहु मेरी।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं । अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

हिमगिरि गतगंगा, धार अभंगा प्रासुक संगा भरि भृंगा।
जरजनम मृतंगा, नाशि अधंगा, पूजि पदंगा मृदु हिंगा।।
श्री शान्ति जिनेशं, नुत चक्रेशं, वृष चक्रेशं, चक्रेशं।
हनि अरि चक्रेशं, हे गुनधेशं दया मृतेशं मक्रेशं।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

वर बावन चंदन, कदली नंदन, घन आनंदन सहित घसों।
भवताप निकंदन, ऐरानन्दन, वंदि अमंदन, चरन वसों।। श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हिमकर करि लज्जत, मलय सुसज्जत, अच्छत जज्जत भरी थारी।
दुखदारिद्र गज्जत, सदपदसज्जत, भवभयभज्जत अतिभारी।। श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मन्दार सरोजं कदली जोजं पुंज भरोजं मलय भरं।
भरि कंचनथारी, तुम ढिग धारी, मदनविदारी, धीर धरं।। श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पकवान नवीने पावन कीने, षट्रस भीने सुखदाई।
मनमोदन हारे, छुदा विदारे, आगै धारे गुन गाई।। श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम ज्ञान प्रकाशे, भ्रम तम नाशे, ज्ञेय विकाशे, सुखरासे।
दीपक उजियारा, यातैं धारा मोह निवारा, निज भासे।। श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन करपूरं करि वर चूरं, पावक भूरं, मांहि जुरं।
तसु धूम उड़ावे, नाचत आवै, अलि गुंजावै, मधुर स्वरं।। श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम खजूरं दाडिम पूरं, निंबुक भूरं लै आयो।
तासो पद जज्जों, शिवफल सज्जों, निज रस रज्जों, उमगायो।। श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्य सँवारी तुम ढिग धारी, आनंदकारी दृग प्यारी।
तुम हो भवतारी, करुना धारी, यातै थारी, शरनारी।। श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

असित सातव भादव जानिये, गरभ मंगल ता दिन मानिये।
सचि किया जननी पद चर्चनं, हम करैं इत ये पद अर्चनं।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णसप्तम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जनम जेठ चतुर्दशी श्याम है, सकल इन्द्र सु आगत धाम है।
गजपुरै गज साजि सबै तबै, गिरि जजे इत मैं जजि हों अबै।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भव शरीर सुभोग असार हैं, इमि विचार तबै तप धार हैं।
भ्रमर चौदस जेठ सुहावनी, धरममेह जजों गुन पावनी।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शुकल पौष दशैं सुखरास है, परम केवलज्ञान प्रकाश है।
भवसमुद्र-उधारन देवकी, हम करैं नित मंगल सेवकी।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लदशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

असित चौदशि जेठ हने अरी, गिरीसमेदथकी शिवतिय वरी।
सकल इन्द्र जजैं तित आइकैं, हम जजैं इत मस्तक नाइकैं।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

शान्ति शान्ति गुन मंडिते सदा, जाहि ध्यावत सुपंडिते सदा।
मैं तिन्हें भगत मंडिते सदा, पूजि हों कलुष हंडिते सदा।।
मोक्षहेत तुम ही दयाल हो, हे जिनेश गुन रत्नमाल हो।
मैं अबै सुगुन-दाम ही धरों, ध्यावते तुरित मुक्तितिय वरों।।
जय शान्तिनाथ चिद्रूपराज, भवसागर में अद्भुत जहाज।
तुम तजि सरवारथ सिद्ध थान, सरवारथजुत गजपुर महान।।
तित जनम लियौ आनंद धार, हरि ततछिन आयो राजद्वार।
इन्द्रानी जाय प्रसूत-थान, तुमको कर में ले हरष मान।।
हरि गोद देय सो मोदधार, सिर चमर अमर ढारत अपार।
गिरिराज जाय तित शिला पाण्डु, तापै थाप्यो अभिषेक माण्डु।।
तित पंचम उदधितनों सु-वार, सुर कर-कर करि ल्याये उदार।
तब इन्द्र सहसकर करि अनंद, तुम सिर धारा ढार्यो सुमंद।।

अघ घघ घघ घघ धुनि होत घोर, भभभभ भभ धध धध कलश शोर।
दृम दृम दृमदृम बाजत मृदंग, झन नन नन नन नन नूपुरंग।।
तन नन नन नन नन तनन तान, घन नन नन घंटा करत ध्वान।
ताथेइ थेइ थेइ थेइ सुचाल, जुत नाचत नावत तुमहिं भाल।।
चट चट चट अटपट नटत नाट, झट झट झट हट नट शट विराट।
इमि नाचत राचत भगत रंग, सुर लेत जहाँ आनंद संग।।
इत्यादि अतुल मंगल सुठाट, तित बन्यो जहाँ सुरगिरि विराट।
पुनि करि नियोग पितुसदन आय, हरि सौंप्यौ तुम तित वृद्ध थाय।।
पुनि राजमाहिं लहि चक्ररत्न, भोग्यौ छहखंड करि धरम जत्न।
पुनि तप धरि केवल ऋद्धि पाय, भविजीवन को शिवमग बताय।।
शिवपुर पहुँचे तुम हे जिनेश, गुनमंडित अतुल अनंत भेष।
मैं ध्यावतु हौं निज शीश नाय, हमरी भवबाधा हरि जिनाय।।
सेवक अपनो निज जान जान, करुना करि भौभय भान भान।
यह विघनमूल तरु खंड खंड, चितचिंतित आनंद मंड मंड।।

घत्ता

श्री शांति महंता शिवतियकंता, सुगुन अनंता भगवंता।
भव भ्रमन हनंता, सौख्य अनंता, दातारं तारन वंता।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तिनाथ जिनके पद पंकज, जो भवि पुजै मनवचकाय।
जनम जनम के पातक ताके, ततछिन तजिकैं जाय पलाय।।
मन वांछित सुख, पावै, सौ नर, बांचे भगतिभाव अतिलाय।
तातैं 'वृंदावन' नित बन्दै जातैं शिवपुर-राज कराय।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत ।।

श्री नेमिनाथ जिनपूजा

(छन्दः लक्ष्मी तथा अर्द्ध लक्ष्मीधरा)

जयति जय जयति जय जयति जय नेम की,
धर्म अवतार दातार शिव चैन की।
श्री शिवानंद भौफन्द निकन्द की,
ध्यावैं जिन्हें इन्द्र नागेन्द्र ओ मैन की।
परम कल्यान के देन हारे तुम्हीं देव हो,
एव तातें करौं ऐन की।
थापि हों बार त्रय शुद्ध उच्चारकें,
शुद्धता धार भौ पारकू लेन की।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

दाता मोक्ष के श्रीनेमिनाथ जिनराय, दाता..।।टेक।।
गंग नदी कुश प्रासुक लीनौ, कंचन भृंग भराय।
मनवचनतनतें धार देत ही, सकल कलंक नशाय।
दाता मोच्छ के श्री नेमि नाथ जिनराय।।दा.।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हरिचन्दन जुत कदलीनन्दन कुंकुम संग घसाय।
विघनताप नाशन के कारन, जजौं तिहारे पाय।।दा.।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य राशि तुम यश सम उज्ज्वल, तन्दुल शुद्ध मंगाय।
अखयसौख्यभोगन के कारण पुंजधरोंगुणगाय।।दा.।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुडरीक तृण द्रुमको आदिक , सुमन सुगधित लाय।
दर्प्पकमन्मथ भंजनकारन जजहुँ चरनलवलाय।।दा.।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर बावर खाजे साजे, ताजे तुरित मंगाय।
क्षुधावेदनी नाशकरण को, जजहुँ चरणउमगाय।।दा.।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कनक दीप नवनीत पूरकर, उज्ज्वल जोति जगाय।
तिमिर मोहनाशक तुमकोलखि, जजहुँचरन हुलसाय।।दा.।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशविध गन्ध मंगाय मनोहर, गुंजत अलिगण आय।
दशोंबन्धजारन के कारण, खेवों तुम ढिग लाय।।दा.।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरसवरण रसना मनभावन पावन फल सु मंगाय।
मोक्ष महाफल कारनपूजों, हे जिनवर तुम पाँय।।दा.।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदि साज शुचि लीने, आठों दरब मिलाय।
अष्टमछिति के राजकरन कों, जजों अंग वसुनाय।।दा.।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

(छन्द पाईता)

सित कार्तिक छट्ठि अमंदा, गरभागम आनन्दकन्दा।
शचि सेय शिवापद आई, हम पूजत मनवचकाई।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाषष्ठ्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

सित सावन छट्ठि अमंदा, जनमे त्रिभुवन के चन्दा।
पितु समुद्र महासुख पायो, हम पूजत विघन नशायो।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाषष्ठ्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

तजि राजमती व्रतलीनों, सितसज्ञावन छट्ठ प्रवीनों।
शिव नारि तबै हरषाई, हम पूजैं पद शिरनाई।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाषष्ठ्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

सित आसित एकम चूरे, चारों घाती अति कूरे।
लहि केवल महिमा सारा, हम पूजैं अष्ट प्रकारा।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाप्रतिपदायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सितषाढ़ अष्टमी चूरे, चारां घातिया कूरे।
शिव ऊर्जयन्तते पाई, हम पूजैं ध्यान लगाई।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्लाष्टम्यां मोक्षमंगलप्राप्तये श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **श्याम छबी तनु चाप दश, उन्नत गुण निधि धाम।**
शंख चिह्नपद में निरखि, पुनि पुनि करों प्रणाम।।

(पद्धरि छन्द)

जय जय जय नेमि जिनिंद चन्द, पितु समुद सेन आनंदकंद।
शिवमात कुमुदमनमोददाय, भविवृन्द चकोर सुखी कराय।।
जय देव अपूरव मारतण्ड, तुम कीन ब्रह्मसुत सहस खण्ड।
शिवतियमुख जलजविकाशनेश, नहिं रही सृष्टि में तम अशेष।।
भवि भीत कोक कीनों अशोक, शिवगम दरशायो शर्मथोक।
जयजयजयजय तुम गुणगम्भीर, तुम आगम निपुण पुनीत धीर।।
तुम केवलजोति विराजमान, जय जय जय जय करुणानिधान।
तुम समवशरण में तत्त्वभेद, दरशायो जातें नशत खेद।।
तित तुमको हरि आनन्दधार, पूजत भगतीजुत बहु प्रकार।
पुनि गद्यपद्यमय सुजस गाय, जय बल अनन्त गुणवन्तराय।।

जय शिवशंकर ब्रह्मा महेश, जय बुद्धि विधाता विष्णुवेष।
जय कुमतिमतंगनको मृगेन्द्र, जय मदनध्वांतकों रवि जिनेन्द्र।।
जय कृपासिन्धु अविरुद्ध बुद्ध, जय ऋद्धसिद्ध दाता प्रबुद्ध।
जय जगजनमनरंजन महान, जय भवसागरमहँ सुष्ठु यान।।
तुम भगति करै ते धन्य जीव, ते पावैं दिव शिवपद सदीव।
तुमरा गुण देव विविध प्रकार, गावत नित किन्नरकी जु नार।।
वर भगतिमाहिं लवलीन होय, नाचै ताथेइ थेइ थेइ बहोय।
तुम करुणासागर सृष्टिपाल, अब मोकों वेगि करो निहाल।।
मैं दुख अनन्त वसुकरमजोग, भोगे सदीव नहिं और रोग।
तुमको जगमें जान्यो दयाल, हो वीतराग गुणरतनमाल।।
तातैं शरणा अब गही आय, प्रभु करो वेगि मेरी सहाय।
यहविघनकरममखण्डखण्ड, मनवांछितकारज मण्डमण्ड।।
संसारकष्ट चकचूर चूर, सहजानन्द मम उर पूर पूर।
निज पर प्रकाशबुधि देह देह, तजिकेविलम्ब सुधि लेह लेह।।
हम जांचत हैं यह बार बार, भवसागरतें मो तार तार।
नहिं सह्यो जात यह जगत दुख, तातें विनवों हे सुगुनमुक्ख।।

(घत्तानन्द)

श्रीनेमिकुमारं जितमदमारं, शीलागारं, सुखकारं।
भवभयहरतारं, शिवकरतारं, दातारं धर्माधारं।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख, धन, जस सिद्धि, पुत्र पौत्रादिवृद्धि,
सकल मनसि सिद्धि होति है ताहि ऋद्धि।
जजत हरष धारी नेमि को जो अगारी,
अनुक्रम अरि जारी सो वरे मोच्छ नारी।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री पार्श्वनाथ जिन पूजा

(पुष्पेन्दु कृत)

हे पार्श्वनाथ! हे विश्वसैन सुत, करुणा सागर तीर्थंकर।
हे सिद्धशिला के अधिनायक, हे ज्ञान ! उजागर तीर्थंकर।।
हमने भावुकता में भरकर, तुमको हे ! नाथ पुकारा है।
प्रभुवर ! गाथा की गंगा से, तुमने कितनों को तारा है।।
हम द्वार तुम्हारे आये हैं, करुणा कर नेक निहारो तो।
मेरे उर के सिंहासन पर, पग धारो नाथ? पधारो तो।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

मैं लाया निर्मल जल धारा, मेरा अन्तर निर्मल कर दो,
मेरे अन्तर को हे ! भगवन्, शुचि सरल भावना से भर दो।
मेरे इस आकुल अन्तर को, दो शीतल सुखमय शान्ति प्रभो,
अपनी पावन अनुकम्पा से, हर लो मेरी भव-भ्रान्ति प्रभो।।1।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।

प्रभु पास तुम्हारे आया हूँ, भव का सन्ताप सताया हूँ,
तव पद वन्दन के हेतु प्रभो !, मलयागिरि चन्दन लाया हूँ।
अपने पुनीत चरणाम्बुज की, हमको कुछ रेणु प्रदान करो,
हे ! संकटमोचन तीर्थंकर, मेरे मन के सन्ताप हरो।।2।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।।

प्रभुवर क्षण भंगुर वैभव को, तुमने क्षण में ठुकराया है,
निज तेज तपस्या से तुमने, अभिनव अक्षय पद पाया है।
अक्षय हों मेरे भक्ति भाव प्रभु, पद की अक्षय प्रीति मिले,
अक्षय प्रतीति रवि किरणों से, प्रभु मेरा मानस-कुंज खिले।।3।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।

यद्यपि शतदल की सुषमा से, मानस-सर शोभा पाता है,
पर उसके रस में फंस मधुकर, अपने प्रिय प्राण गंवाता है।
हे नाथ आपके पद-पंकज, भव सागर पार लगाते हैं,
इस हेतु तुम्हारे चरणों में, श्रद्धा के सुमन चढ़ाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।

व्यंजन के विविध समूह प्रभो, तन की कुछ क्षुधा मिटाते हैं,
चेतन की क्षुधा मिटाने में प्रभु, ये असफल रह जाते हैं।
इनके आस्वादन से प्रभु मैं, सन्तुष्ट नहीं हो पाया हूँ,
इस हेतु आपके चरणों में, नैवेद्य चढ़ाने आया हूँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

प्रभु दीपक की मालाओं से, जग अन्धकार मिट जाता है,
पर अन्तर्मन का अन्धकार, इनसे न दूर हो पाता है।
यह दीप सजाकर लाए हैं, इनमें प्रभु दिव्य प्रकाश भरो,
मेरे मानस-पट पर छाए, अज्ञान तिमिर का नाश करो।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।

यह धूप सुगन्धित द्रव्यमयी, नभमण्डल को महकाती है,
पर जीवन-अघ की ज्वाला में, ईंधन बनकर जल जाती है।
प्रभुवर इसमें वह तेज भरो, जो अघ को ईंधन कर डाले,
हे वीर ! विजेता कर्मों के, हे मुक्ति-रमा ! वरने वाले।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।

यों तो ऋतुपति ऋतु में फल से, उपवन को भर जाता है,
पर अल्प अवधि का ही झोंका, उनको निष्फल कर जाता है।
दो सरस भक्ति का फल प्रभुवर, जीवनतरु तभी सफल होगा,
सहजानन्द सुख से भरा हुआ, इस जीवन का प्रतिफल होगा।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।।

पथ की प्रत्येक विषमता को मैं, समता से स्वीकार करूँ,
जीवन-विकास के प्रिय-पथ की, बाधाओं का परिहार करूँ।
मैं अष्टकर्म आवरणों का, प्रभुवर आतंक हटाने को,
वसु द्रव्य संजोकर लाया हूँ, चरणों में नाथ चढ़ाने को।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

पंचकल्याणक

शिव देवी के गर्भ में, आये दीना नाथ।
चिर अनाथ जगती हुई, सजग, समोद, सनाथ।।
अज्ञानमय इस लोक में, आलोक सा छाने लगा,
होकर मुदित सुरपति नगर में, रत्न बरसाने लगा।
गर्भस्थ बालक की प्रभा प्रतिभा, प्रकट होने लगी,
नभ से निशा की कालिमा अभिनव उषा धोने लगी।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्ण द्वितीयायां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि.स्वाहा।

द्वार द्वार पर सज उठे, तोरण बन्दनवार,
काशी नगरी में हुआ, पार्श्व प्रभु अवतार।
प्राची दिशा के अंग में, नूतन दिवाकर आ गया,
भविजन जलज विकसित हुए, जग में उजाला छा गया।
भगवान के अभिषेक को, जल क्षीर सागर ने दिया,
इन्द्रादि ने है मेरु पर, अभिषेक जिनवर का किया।।2।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्णैकादश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि.स्वाहा।

निरख अथिर संसार को, गृह कुटुम्ब सब त्याग,
वन में जा दीक्षा धरी, धारण किया विराग।
निज आत्मसुख के श्रोत में, तन्मय प्रभु रहने लगे,
उपसर्ग और परीषहों को, शान्ति से सहने लगे।

प्रभु की विहार वनस्थली, तप से पुनीता हो गई,
कपटी कमठ शठ की कुटिलता, भी विनीता हो गई।।3।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्णैकादश्यां तपोमंगलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि.स्वाहा।

आत्मज्योति से हट गये, तम के पटल महान्,
प्रकट प्रभाकर सा हुआ, निर्मल केवल ज्ञान।
देवेन्द्र द्वारा विश्वहित सम, अनुसरण निर्मित हुआ,
समभाव से सबको शरण का पंथ निर्देशित हुआ।
था शान्ति का वातावरण, उसमें न विकृत विकल्प थे,
मानों सभी तब आत्महित के, हेतु कृत-संकल्प थे।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थी दिने केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि.स्वाहा।

युग युग के भव भ्रमण से, देकर जग को त्राण,
तीर्थंकर श्री पार्श्व ने, पाया पद-निर्वाण।
निर्लिप्त आज नितान्त हैं, चैतन्य कर्म अभाव से,
है ध्यान, ध्याता, ध्येय का किंचित न भेद स्वभाव से।
तव पाद पद्मों की प्रभु, सेवा सतत पाते रहें,
अक्षय असीमानन्द का, अनुराग अपनाते रहें।।5।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि.स्वाहा।

जयमाला (वन्दनागीत)

अनादिकाल से कर्मों का मैं सताया हूँ,
इसी से आपके दरबार आज आया हूँ।
न अपनी भक्ति, न गुणगान का भरोसा है,
दयानिधान श्री भगवान का भरोसा है।
इक आस लेकर आया हूँ कर्म कटाने के लिये,
मैं भेंट में कुछ भी नहीं लाया चढ़ाने के लिये।।1।।

जल न चन्दन और अक्षत पुष्प भी लाया नहीं,
है नहीं नैवेद्य, दीप, मैं धूप फल पाया नहीं।
हृदय के टूटे हुए उद्गार केवल साथ हैं,
और कोई भेंट के हित, अर्घ सजवाया नहीं।
है यही फल फूल जो समझो चढ़ाने के लिये।
भेंट मैं कुछ भी नहीं लाया चढ़ाने के लिये।।2।।

मांगना यद्यपि बुरा समझा किया मैं उम्र भर,
किन्तु अब जब मांगने पर बांध कर आया कमर।
और फिर सौभाग्य से जब आप सा दानी मिला,
तो भला फिर मांगने में आज क्यों रक्खूँ कसर।
प्रार्थना है आप ही जैसा बनाने के लिये,
भेंट मैं कुछ भी नहीं लाया चढ़ाने के लिये।।3।।

यदि नहीं यह दान देना आपको मंजूर है,
और फिर कुछ माँगने से दास ये मजबूर है।
किन्तु मुंहमांगा मिलेगा मुझको ये विश्वास है,
क्योंकि लौटाना न इस दरबार का दस्तूर है।
प्रार्थना है कर्म बन्धन से छुड़ाने के लिए।
भेंट मैं कुछ भी नहीं लाया चढ़ाने के लिये।।4।।

हो न जब तक मांग पूरी नित्य सेवक आयेगा,
आपके पदपंकज में 'पुष्पेन्दु' शीश झुकायेगा।
है प्रयोजन आपको यद्यपि न भक्ति से मेरी,
किन्तु फिर भी नाथ मेरा तो भला हो जायेगा।
आपका क्या जायेगा बिगड़ी बनाने के लिये,
भेंट मैं कुछ भी नहीं लाया चढ़ाने के लिये।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

श्री महावीर जिन पूजा

श्रीमत वीर हरै भवपीर, भरै सुखसीर अनाकुलताई।
केहरिअंक अरीकरदंक, नये हरि पंकतिमौलि सुआई।।
मैं तुमको इत थापतु हौं प्रभु, भक्ति समेत हिये हरषाई।
हेकरुणाधनधारक देव ! इहां अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

छन्द अष्टपदी *(द्यानतरायकृत नन्दीश्वराष्टकादिक अनेक रागो में भी बनती हैं)*

क्षीरोदधिसमशुचिनीर, कंचन भृङ्ग भरों।
प्रभु वेग हरो भवपीर, यातैं धार करों।
श्रीवीर महा अतिवीर सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर सन्मति दायक हो।।1।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चन्दन सार केशर सङ्ग घसों।
प्रभु भव आताप निवार, पूजत हिय हुलसों।। श्री.।।2।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल सित शशि सम शुद्ध, लीनों थार भरी।
तसु पुंज धरों अविरुद्ध पावों शिवनगरी।। श्री.।।3।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरतरु के सुमन समेत, सुमन सुमन प्यारे।
सो मनमथ भंजन हेत, पूजों पद थारे।। श्री.।।4।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रसरज्जत सज्जत सद्य, मज्जत थार भरी।
पद जज्जत रज्जत अद्य, भज्जत भूख अरी।। श्री.।।5।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तमखण्डित मण्डित नेह, दीपक जोवत हों।
तुम पदतर हे ! सुखगेह, भ्रमतम खोवत हों।। श्री.।।6।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हरिचन्दन अगर कपूर, चूर सुगन्ध करा।
तुम पदतर खेवत भूरि आठों कर्म जरा।। श्री.।।7।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रितुफल कलवर्जित लाय, कंचन थार भरो।
शिव फलहित हे ! जिनराय, तुमढिग भेंट धरों।। श्री.।।8।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल वसु सजि हिमथार, तनमनमोद धरों।
गुण गाउँ भवदधि तार, पूजत पाप हरों।। श्री.।।9।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

मोहि राखो हो शरणा, श्रीवर्द्धमान जिनरायजी, मोहिराखो...

गरभ साढ़सित छट्ट लियो थित, त्रिशला उर अघ हरना।
सुर सुरपति तित सेव करयो नित, मैं पूजूं भवतरना।। मोहि.।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्ला षष्ठयां गर्भमंगलमंडिताय श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घं नि.स्वाहा।

जनम चैत सित तेरस के दिन, कुंडलपुर कनवरना।
सुरगिरि सुरगुरु पूज रचायो, मैं पूजों भवहरना ।। मोहि.।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगल प्राप्ताय श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घं नि.स्वाहा।

मंगसिर असित मनोहर दशमी, ता दिन तप आचरना।
नृप कुमार घर पारन कीनों मैं पूजों तुम चरना ।। मोहि.।।3।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घं नि. स्वाहा।

शुक्लदशै वैशाखदिवस अरि, घात चतुक छय करना।
केवल लहिभवि भवसरतारे, जजों चरण सुख भरना ।। मोहि.।।4।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घं नि. स्वाहा।

कार्तिक श्याम अमावस शिवतिय, पावापुरतें वरना।
गणफनिवृन्द जजैंतित बहुविधि, मैं पूजों भय हरना ।। मोहि. ।।5 ।।

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलप्राप्तये श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घं नि.स्वाहा।

जयमाला

छन्द हरि गीता

गणधर असनि धर, चक्रधर, हलधर, गदाधर, वरवदा।
अरु चापधर विद्या सुधर, तिरसूलधर सेवहिं सदा।
दु:खहरन आनन्दभरन तारन, तरन चरन रसाल हैं।
सुकुमाल गुणमनिमाल उन्नत, भाल की जयमाल हैं।।1 ।।

घत्ता छंद – जय त्रिशलानंदन हरिकृतवंदन, जगदानंदन चंदवरं।
भवतापनिकंदन तन मनकन्दन, रहित सपन्दन नयनधरं।।

छन्द तोटक

जय केवल भानु कला सदनं, भवि कोक विकाशन कंदवनं।
जगजीत महारिपु मोह हरं, रजज्ञान दृगांवर चूर करं।।1 ।।

गर्भादिक मंगल मण्डित हो, दु:खदारिद को नित खण्डित हो।
जगमांहि तुम्हीं सतपण्डित हो, तुमही भव भाव विहंडित हो।।2 ।।

हरिवंश सरोजन को रवि हो, बलवन्त महन्त तुम्ही कवि हो।
लहि केवल धर्मप्रकाश कियो, अबलों सोई मारग राजतियो।।3 ।।

पुनि आपतने गुणमाहिं सही, सुर मग्न रहैं जितने सब ही।
तिनकी वनिता गुन गावत हैं, लय माननिसों मनभावत हैं।।4 ।।

पुनि नाचत रंग उमंग भरी, तुव भक्ति विषें पग एम धरी।
झननं झननं झननं झननं, सुरलेत तहाँ तननं तननं।।5 ।।

घननं घननं घन घण्ट बजे, दृमदं दृमदं मिरदंग सजे।
गगनांगन गर्भगता सुगता, ततता ततता अतता विततता।।6 ।।

धृगतां धृगतां गति बाजत है, सुरताल रसाल जु छाजत है।
सननं सननं सननं नभमें, इकरुप अनेक जु धारि भ्रमैं।।7 ।।

कइ नारि सुबीन बजावत हैं, तुमरो जस उज्वल गावत हैं।
करताल विषै करताल धरै, सुरताल विशाल जु नाद करें।।8 ।।

इन आदि अनेक उछाह भरी, सुरभक्ति करैं प्रभुजी तुमरी।
तुम ही जगजीवन के पितु हो, तुम ही बिनकारणतें हितु हो।।9 ।।

तुम ही सब विघ्नविनाशन हो, तुमही निज आनन्द भासन हो।
तुमही चितचिंतित दायक हो, जगमाहिं तुम्हीं सब लायक हो।।10 ।।

तुमरे पन मंगल माहिं सही, जिय उत्तम पुन्य लियो सब ही।
हमको तुमरी शरणागत है, तुमरे गुनमें मन पागत है।।11 ।।

प्रभु मो हिय आप सदा बसिये, जबलों वसु कर्म नहीं नसिये।
तबलों तुम ध्यान हिये वरतो, तबलों श्रुत चिंतन चित्त रतो।।12 ।।

तबलों व्रत चारित चाहतु हों, तबलों शुभ भाव सुगाहतु हों।
तबलों सतसंगति नित्य रहौ, तबलों मम संजम चित्त गहौ।।13 ।।

जबलों नहिं नाश करों अरि को, शिवनारि वरों समता धरिको।
यह द्यो तबलों हमको जिनजी, हम जाचतु हैं इतनी सुनजी।।14 ।।

घत्तानंद

श्रीवीर जिनेशा नमितसुरेशा, नागनरेशा भगतिभरा।
'वृन्दावन' ध्यावै विघन नशावै, वांछित पावै शर्म वरा।।15 ।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – श्रीसन्मतिके जुगलपद, जो पूजै धर प्रीत।
वृन्दावन सो चतुर नर लहै मुक्ति नवनीत।।16 ।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत ।।

श्री नवदेवता पूजा

- AmMm`©{deXgmJa

स्थापना

हे! लोक पूज्य अरिहंत नमन्, हे! कर्म विनाशक सिद्ध नमन्।
आचार्य देव के चरण नमन्, अरु, उपाध्याय को शत् वन्दन।।
हे! सर्व साधु है तुम्हें नमन्, हे! जिनवाणी माँ तुम्हें नमन्।
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन।।
नव देव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
मेरा अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।

नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए ।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ।।
नवकोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो:कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल,होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।

नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महा मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलायें हैं।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

धत्ता छन्द

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।
शांतये शांति धारा करोति।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।
दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्य

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नम:।

दोहा

मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई ।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई ।।

जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

दोहा

नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।
''विशद'' भाव से कर रहे, शत्-शत् बार प्रणाम्।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें।।

इत्याशीर्वाद :

।। विशद वाणी ।।

^yH$ån AmVo h¢ Vmo _H$mZ Vmo<S> OmVo h¢Ÿ&
ZXr _| Vy\$mZ AmH$a amh _mo<S> OmVo h¢Ÿ&&
g§Vm| H$m AmJ_Z EH$ AX²^wV {_emb h¡Ÿ&
g§VZJa_| AmVo h¢ Vmo N>mN>mo<S> OmVo h¢Ÿ&&

– आचार्य विशदसागर

निर्वाण क्षेत्र पूजा

(कविवर द्यानतरायजी कृत)

सोरठा

परम पूज्य चौबीस जिहं जिहं थानक शिव गये।
सिद्धभूमि निशदीस, मन वच तन पूजा करौं ।।1 ।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर-निर्वाण क्षेत्राणि ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्राणि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर-निर्वाण क्षेत्राणि ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

गीता छन्द

शुचि क्षीरदधि सम नीर निरमल, कनक झारी में भरौ।
संसार पार उतार स्वामी, जोरकर विनती करौं।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरी कैलाश कों।
पूजों सदा चौबीस जिन निर्वाण भूमि निवास को।।1 ।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाण क्षेत्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।।1 ।।

केशर कपूर सुगन्ध चन्दन, सलिल शीतल विस्तरौ।
भवताप को सन्ताप मेटो; जोरकर विनती करौं।। सम्मेद... ।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाण क्षेत्रेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।2 ।।

मोती समान अखण्ड तन्दुल अमल आनन्द धरि तरौ।
औगुन हरो गुण करौ हमको; जोरकर विनती करौं।। सम्मेद... ।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाण क्षेत्रेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।3 ।।

शुभ फूलरास सुवासवासित, खेद सब मनकी हरौ।
दुख धाम कामविनाश मेरो, जोरकर विनती करौं।। सम्मेद... ।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाण क्षेत्रेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।4 ।।

नेवज अनेक प्रकार जोग, मनोग धरि भय परिहरौ।
मम भूख दूखन टार प्रभुजी, जोरकर विनती करौं।। सम्मेद... ।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5 ।।

दीपक प्रकाश उजास उज्ज्वल, तिमिरसेती नहिं डरौ।
संशयविमोह विभरमतमहर, जोरकर विनती करौं।। सम्मेद... ।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाण क्षेत्रेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।6 ।।

शुभ धूप परम अनूप पावन, भाव पावन आचरौ।
सब करमपुंज जलाय दीज्यो, जोरकर विनती करौं।। सम्मेद... ।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाण क्षेत्रेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।7 ।।

बहुफल मंगाय चढ़ाय उत्तम चारगतिसों निरवरौ।
निहचै मुकतिफल देहु मोकों, जोरकर विनती करौं।। सम्मेद... ।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाण क्षेत्रेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।।8 ।।

जल गंध अक्षत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरो।
द्यानत करो निरभय जगतसों, जोरकर विनती करौं।। सम्मेद... ।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाण क्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9 ।।

अथ जयमाला

सोरठा – **श्री चौबीसजिनेश, गिरिकैलाशादिक नमों।**
तीरथ महाप्रदेश, महापुरुष निरवाणतैं।।1 ।।

नमो ऋषभ कैलाशपहारं नेमिनाथ गिरनार निहारं।
वासुपूज्य चंपापुर वन्दौ, सन्मति पावापुर अभिनन्दौ।।2।।

वंदौ अजित अजित पद दाता, वंदौ संभव भवदुखघाता।
वंदौ अभिनन्दन गुणनायक, वदौं सुमति सुमति के दायक।।3।।

वंदौ पद्ममुकति पदमाधर, वंदौ सुपास आश पासाहर।
वंदौ चन्द्रप्रभ प्रभुचंदा, वंदौ सुविधि सुविधि निधिकंदा।।4।।

वंदौ शीतल अघतपशीतल, वंदौ श्रेयांस श्रेयांस महीतल।
वंदौ विमल विमल उपयोगी, वंदौ अनंत अनंत सुखभोगी।।5।।

वंदौ धर्म धर्म-विस्तारा वंदौ शांति शांति मन धारा।
वंदौ कुन्थु कुन्थु-रखवालं, वंदौ अर अरिहर गुणमालं।।6।।

वंदौ मल्लि काममलचूरन, वंदौ मुनिसुव्रत व्रतपूरन।
वंदौ नमिजिन नमितसुरासुर, वंदौ पास पास भ्रम जगहर।।7।।

वींसो सिद्ध भूमि जा ऊपर, शिखर सम्मेद महागिरि भूपर।
भावसहित वन्दै जो कोई, ताहि नरक पशुगति नहिं होई।।8।।

नरपति नृपसुरशुक्र कहावे, तिहुँजग भोग भोगि शिवपावै।
विघन विनाशन मंगलकारी, गणविलास वन्दौ भवतारी।।9।।

घत्ता

जो तीरथ जावै; पाप मिटावै ध्यावै गावै भगति करै।
ताको जस कहिये, संपत्ति लहिये, गिरिके गुणकोबुधउचरै।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाण-क्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

।। अथाशीर्वादः ।।

सोलहकारण पूजा

अडिल्ल

सोलहकारण भाय तीर्थंकर जे भये,
हरषे इन्द्र अपार मेरु पै ले गये।
पूजा करि निज धन्य लख्यो बहु चावसों,
हमहूँ, षोडशकारण भावै भावसों।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणानि अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

कंचन झारी निर्मल नीर, पूजों जिनवर गुण गंभीर।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।
दरश-विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर-पद-पाय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि 1, विनयसम्पन्नता 2, शीलव्रतेष्वनतिचार 3, अभीक्ष्णज्ञानोपयोग 4, संवेग 5, शक्तितस्त्याग 6, शक्तितस्तप 7, साधु-समाधि 8, वैयावृत्यकरण 9, अर्हद्भक्ति 10, आचार्य भक्ति 11, बहुश्रुतभक्ति 12, प्रवचनभक्ति 13, आवश्यकापरिहाणि 14, मार्ग प्रभावना 15, प्रवचन वात्सल्य 16, इति षोडश कारणेभ्योः नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।।

चंदन घसों कपूर मिलाय, पूजौं श्री जिनवर के पाय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।। दरश वि. ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल धवल अखंड अनूप पूजौं जिनवर तिहुँ जग भूप।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।। दरश वि. ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

फूल सुगन्ध मधुप गुंजार पूजौं जिनवर जग आधार।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।। दरश वि. ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सद नेवज बहुविधि पकवान, पूजौं श्रीजिनवर गुणखान।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।। दरश वि. ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपकज्योति तिमिर क्षयकार, पूजौं श्रीजिन केवल धार।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।। दरश वि. ।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर कपूर गंध शुभ खेय, श्रीजिनवर आगे महकेय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।। दरश वि. ।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि बहुत फल सार, पूजौं जिन वांछित दातार।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।। दरश वि. ।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आठों द्रव्य चढ़ाय, 'द्यानत' वरत करो मन लाय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।। दरश वि. ।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – **षोडश कारण गुण करै, हरै चतुरगति वास।**
पाप पुण्य सब नास के, ज्ञान भानु परकाश।।1।।

दरश विशुद्धि धरें जो कोई, ताको आवागमन न होई।
विनय महा धारे जो प्राणी, शिव वनिता की सखी बखानी।।2।।

शील सदा दृढ़ जो नर पाले, सो औरन की आपद टाले।
ज्ञानाभ्यास करे मन माहीं, ताके मोह महातम नाहीं।।3।।

जो संवेग-भाव विस्तारै, सुरग मुक्ति पद आप निहारै।
दान देय मन हर्ष विशेषै, इह भव यश परभव सुख देखै।।4।।

जो तप तपै खपै अभिलाषा, चूरे कर्म शिखर गुरु भाषा।
साधुसमाधि सदा मन लावै, तिहूँ जग भोग भोगि शिवजावै।।5।।

निश दिन वैयावृत्य करैया, सो निश्चय भवनीर तिरैया।
जो अरहंतभक्ति मन आनै, सो जन विषय कषाय न जाने।।6।।

जो आचारज भक्ति करैं है, सो निर्मल आचार धरै है।
बहुश्रुतवंत-भक्ति जो करई, सो नर संपूरण श्रुत धरई।।7।।

प्रवचन भक्ति करै जो ज्ञाता, लहैं ज्ञान परमानन्द-दाता।
षट् आवश्यक काल जो साधै, जो ही रत्नत्रय आराधै।।8।।

धर्म प्रभाव करे जो ज्ञानी, तिन शिव मारग रीति पिछानी।
वात्सलअंग सदा जो ध्यावै, सो तीर्थंकर पदवी पावै।।9।।

दोहा- **ये ही षोडश भावना, सहित धरै व्रत जोय।**
देव इन्द्र नर-वंद्य पद, द्यानत शिव पद होय।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सवैया इकतीसा

सुन्दर षोडशकारण भावन निर्मल चित्त सुधारक धारै।
कर्म अनेक हने अति दुर्धर जन्म जरा भय मृत्यु निवारै।।
दुःख दारिद्र विपत्ति हरै भव सागर को पर पार उतारै।
ज्ञान कहे यहि षोडशकारण, कर्म निवारण सिद्ध सुधारै।।

जाप्य

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयै नमः। ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नतायै नमः, ॐ ह्रीं शीलव्रताय नमः ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगाय नमः, ॐ ह्रीं संवेगाय नमः, ॐ ह्रीं शक्तिस्त्यागाय नमः, ॐ ह्रीं शक्तितस्तपसे नमः, ॐ ह्रीं साधुसमाध्यै नमः, ॐ ह्रीं वैयावृत्यकरणाय नमः, ॐ ह्रीं अर्हद्भक्त्यै नमः, ॐ ह्रीं आचार्यभक्त्यै नमः, ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्त्यै नमः, ॐ ह्रीं प्रवचनभक्त्यै नमः, ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाण्यै नमः, ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनायै नमः, ॐ ह्रीं प्रवचनवत्सलत्वाय नमः।।16।।

इत्याशीर्वादः।

पंचमेरु पूजन

तीर्थंकरों के न्हवन-जलतैं भये तीरथ शर्मदा।
तातैं प्रदच्छन देत सुर-गन पंच मेरुन की सदा।।
दो जलधि ढाई द्वीप में सब गनत-मूल विराजहीं।
पूजौं असी जिनधाम-प्रतिमा होहि सुख दुःख भाजहीं।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिजिन चैत्यालयस्थ जिनप्रतिमासमूह-अत्र अवतर अवतर संवौष्ट आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

शीतल-मिष्टसुवास मिलाय, जलसौं पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करों प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं सुदर्शन-विजय-अचल-मन्दर, विद्युन्मालिपंचमेरु-संबंधिजिन-चैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल केसर कर्पूर मिलाय, गंधसौं पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।। पाँचों... ।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अमल अखंड सुगंध सुहाय, अच्छतसौं पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।। पाँचों... ।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बरन अनेक रहे महकाय, फूलसौं पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।। पाँचों... ।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मनवांछित बहु तुरत बनाय, चरुसौं पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।। पाँचों... ।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तमहर उज्ज्वल ज्योति जगाय, दीपसौं पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।। पाँचों... ।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

खेऊँ अगर अमल अधिकाय, धूपसौं पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।। पाँचों... ।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरस सुवर्ण सुगंध सुभाय, फलसों पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।। पाँचों... ।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठदरबमय अरघ बनाय, द्यानत पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।। पाँचों... ।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

प्रथम सुदर्शन-स्वामि, विजय अचलमंदर कहा।
विद्युन्माली नाम, पंच मेरु जग में प्रकट।।

(बेसरी)

प्रथम सुदर्शन मेरु विराजै, भद्रशाल वन भूपर छाजै।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन वच तन वंदना हमारी।।
ऊपर पंच-शतक पर सोहै, नंदनवन देखत मन मोहै।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन वच तन वंदना हमारी।।
साढ़े बासठ सहस ऊँचाई, वन सुमनस शोभै अधिकाई।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन वच तन वंदना हमारी।।
ऊँचा जोजन सहस छत्तीसं, पांडुक वन सोहैगिरि-सीसं।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन वच तन वंदना हमारी।।
चारों मेरु समान बखानो, भूपर भद्रसाल चहुँ जानो।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन वच तन वंदना हमारी।।

साढ़े पचपन सहस उतंगा, वन सौमनस चार बहुरंगा।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन वच तन वंदना हमारी।।
उच्च अट्ठाइस सहस बताये, पांडुक चारों वन शुभ गाये।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन वच तन वंदना हमारी।।
सुर नर चारन वंदन आवैं, सोशोभा हम किहमुख गावैं।
चैत्यालय अस्सी सुखकारी, मन वच तन वंदना हमारी।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **पंच मेरु की आरती, पढ़ै सुनै जो कोय।**
द्यानत फल जानै प्रभु, तुरत महासुख होय।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

समाधि भावना

दिन रात मेरे स्वामी, मैं भावना ये भाऊँ।
देहान्त के समय में, तुमको न भूल जाऊँ।।
शत्रु अगर कोई हो, सन्तुष्ट उनको करदूँ।
समता का भाव धरकर, सबसे क्षमा कराऊँ।।
त्यागू आहार पानी, औषध विचार अवसर ।
टूटे नियम न कोई, दृढ़ता हृदय में लाऊँ।।
जागे नहीं कषायें, नहीं वेदना सतावें।
तुमसे ही लौ लगी हो, दुर्ध्यान को भगाऊँ।।
आतम-स्वरूप अथवा, आराधना विचारन।
अरहंत सिद्ध साधु, रटना यही लगाऊँ।।
धरमात्मा निकट हों, चरचा धरम सुनावें।
वह सावधान रक्खें, गाफिल न होने पाऊँ।।
जीने की हो न वाँछा, मरने की हो न इच्छा।
परिवार मित्र जन से, मैं राग को हटाऊँ।।
भोगे जो भोग पहिले, उनका न होवे सुमरन।
मैं राज्य संपदा या, पद इन्द्र का न चाहूँ।।
रत्नत्रय का पालन हो, अन्त में समाधी।
शिवराम प्रार्थना यह, जीवन सफल बनाऊँ।।

नन्दीश्वर द्वीप (अष्टाह्निका) पूजा

सरव परव में बड़ों अठाई परव हैं।
नन्दीश्वर सुर जाँहि लिये वसु दरब हैं।।
हमें शक्ति सो नांहि इहाँ करि थापना।
पूजों जिनगृह प्रतिमा है हित आपना।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशत-जिनालयस्थ-जिनप्रतिमा समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सनिहितो भव भव वषट्सन्निधिकरणं।

कंचन मणिमय भृंगार, तीरथ नीर भरा।
तिहुँ धार दई निरवार, जामन मरन जरा।।
नन्दीश्वर श्रीजिन धाम, बावन पुंज करों।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनन्दभाव धरों।।
नंदीश्वर द्वीप महान, चारों दिशि सोहे।
बावन जिन मंदिर जान, सुरनर मन मोहें।।

ॐ ह्रीं मासोत्तमे...मासे शुभे शुक्ल पक्षे अष्टाह्निकायां महामहोत्मवे नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-दक्षिण-पश्चिमोत्तरे एक अंजनगिरी चार दधिमुख आठ रतिकर, प्रतिदिशि तेरह तेरह इति बावन जिनचैत्यालयेभ्यः जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.स्वाहा।।1।।

भवतपहर शीतल वास, सो चन्दन नाहीं।
प्रभु यह गुण कीजै साँच, आयो तुम ठाहीं।। नन्दी. ।।2।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे जिनालयस्थ जिन-प्रतिमाभ्यः संसार ताप विनाशनाय चंदनं नि.स्वाहा।

उत्तम अक्षत जिनराज, पुंज धरे सो है।
सब जीते अक्षसमाज, तुम सम अरु को है।। नन्दी. ।।3।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे ... अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

तुम काम विनाशक देव, ध्याऊँ फूलनसौं।
लहुँ शील लच्छमी एव, छूटों शूलनसौं।। नन्दी. ।।4।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे ... काम बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज इन्द्रिय बलकार, सो तुमने चूरा।
चरू तुम ढिग सोहै सार, अचरज है पूरा ।। नन्दी. ।।5।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे ... क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति प्रकाश, तुम तन माँहि लसै।
टूटे करमन की राश, ज्ञानकणी दरसै ।। नन्दी. ।।6।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे ... मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरु धूप सुवास, दशदिशि नारि वरै।
अति हरषभाव परकाश, मानों नृत्य करें ।। नन्दी. ।।7।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे ... अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुविधि फल ले तिहुँकाल, आनन्द राचत हैं।
तुम शिवफल देहु दयाल सो हम जाचत हैं ।। नन्दी. ।।8।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अर्घ कियो निज हेतु, तुमको अरपतु हों।
'द्यानत' कीज्यो शिवखेत भूमि समरपतु हों ।। नन्दी. ।।9।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे ... अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। जयमाला ।।

दोहा – **कार्तिक फाल्गुन साढ़के, अन्त आठ दिन माहिं।**
नन्दीश्वर सुर जात हैं, हम पूजैं इह ठाहिं।।

एक सौ त्रेसठ कोड़ि जोजन महा
लाख चौरासिया एकदिश में लहा,
आठमों द्वीप नन्दीश्वरं भास्वरं
भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं ।।2 ।।

चार दिशि चार अंजनगिरी राजही।
सहस चौरासिया एकदिशि छाजहीं,
ढोलसम गोल ऊपर तले सुन्दरं ।। भौन. ।।3।।

एक इक चार दिशि चार शुभ बावरी ।
एक इक लाख जोजन अमल जल भरी,
चहुँदिशि चार वन लाख जोजन वरं।।भौन. ।।4।।

सोल वापीन मधि सोल गिरि दधिमुखं,
सहस दस महा जोजन लखत ही सुखं।
बावरी कोण दो मांहि दो रतिकरं। भौन. ।।5।।

शैल बत्तीस इक सहस जोजन कहे,
चार सौलै मिलैं सर्वबावन लहे
एक इक सीस पर एक जिनमंदिरं।। भौन. ।।6।।

बिंब आठ एकसौ रतनमयी सोहही।
देव देवी सरव नयन मन मोहही।
पाँचसै धनुष तन पद्मआसन परं ।। भौन. ।।7।।

लाल नख मुख नयन श्याम अरु श्वेत है।
श्याम रंग भौह शिर केश छवि देत है।
वचन बोलत मनों हँसत कालुष हरं।।भौन. ।।8।।

कोटिशशि भानुदुति तेज छिप जात है,
महावैराग परिणाम ठहरात है।
वचन नहिं कहै लखि होत सम्यक धरं ।
भौन बावन्न प्रतिमा नमो सुखकरं ।।9 ।।

सोरठा

नन्दीश्वर जिनधाम, प्रतिमा महिमा को कहै।
'द्यानत' लीनों नाम, यही भगति शिव सुख करै।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे जिनालयस्थ जिन-प्रतिमाभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

दशलक्षण धर्म पूजा

उत्तम छिमा मार्दव आर्जव भाव हैं।
सत्य शौच संयम तप त्याग उपाव हैं।
आकिंचन ब्रह्मचर्य धरम दस सार हैं।
चहुँ गति दुःखतै काढ़ि मुकति करतार हैं।।1।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दश-लक्षणधर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दश-लक्षणधर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दश-लक्षणधर्म ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्सन्निधिकरणं।

सोरठा – **हेमाचल की धार, मुनि चित सम शीतल सुरभि।**
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजों सदा।।1।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्याणि-दश-लक्षणधर्माय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं नि.स्वाहा।।1।।

चंदन केशर गार, होय सुवास दशों दिशा।
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा।।2।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दश-लक्षणधर्माय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं नि.स्वाहा।।2।।

अमल अखंडित सार, तन्दुल चन्द्र समान शुभ।
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा।।3।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दश-लक्षणधर्माय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् नि.स्वाहा।।3।।

फूल अनेक प्रकार, महकें ऊरधलोक लों।
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दश-लक्षणधर्माय कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि.स्वाहा।।4।।

नेवज विविध निहार उत्तम षट्रस संजुगत।
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा।।5।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दश-लक्षणधर्माय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.स्वाहा।।5।।

बाति कपूर सुधार, दीपक जोति सुहावनी।
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दश-लक्षणधर्माय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.स्वाहा।।6।।

अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगन्धता।
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दश-लक्षणधर्माय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि. स्वाहा।।7।।

फल की जाति अपार, घ्राण नयन मनमोहने।
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा।।8।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दश-लक्षणधर्माय मोक्ष फल प्राप्तये फलं नि.स्वाहा।।8।।

आठों दरब संवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसौं।
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा।।9।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दश-लक्षणधर्माय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं नि.स्वाहा।।9।।

अङ्ग पूजा-सोरठा

पीडैं दुष्ट अनेक, बाँध मार बहु विधि करै।
धरिये छिमा विवेक, कोप न कीजै पीतमा।।1।।

चौपाई मिश्रित (गीता छन्द)

उत्तम छिमा गहो रे भाई, इहभव जस परभव सुखदाई।
गाली सुनि मन खेद न आनो, गुनको औगुन कहै अयानो।।
कहि है अयानो वस्तु छीने, बाँध मार बहुँविधि करै।
घरतैं निकारै, तन विदारै, वैर जो न तहाँ धरैं।।
तैं करम पूरब किये खोटे, सहै क्यों नहिं जीयरा।
अतिक्रोध अगनि बुझाय प्रानी, साम्य जल ले सीयरा।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्माङ्गाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

दोहा- **मान महाविषरूप, करहि नीच गति जगत में।**
कोमल सुधा अनूप, सुख पावै प्रानी सदा।।

उत्तम मार्दव गुन मनमाना, मान करनको कौन ठिकाना।
बस्यो निगोद माँहि तैं आया, दमरी रूकन भाग विकाया।।
रूकन विकाया कर्म वशतैं, देव इक इन्द्री भया।
उत्तम मुआ चांडाल हुवा, भूप कीड़ों में गया।।
जीतव्य–जोवन–धन गुमान, कहा करे जल बुदबुदा।
करि विनय बहुँगुन बड़े जनकी ज्ञान को पावै उदा।।2।।

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्माङ्गाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

दोहा– **कपट न कीजै कोय, चोरन के पुर ना बसे।**
सरल सुभावी होय, ताके घर बहु सम्पदा।।
उत्तम आर्जव रीति बखानी, रंचक दगा बहुत दुःखदानी।
मनमें हो सो वचन उचरिये, वचन होय सो तनसौं करिये।।
करिये सरल तिहूँ जोग अपने, देख निरमल आरसी।
मुख करै जैसा लखै तैसा, कपट प्रीति अंगारसी।।
नहि लहै लछमी अधिक छलकरि, करम बंध विशेषता।
भय त्यागि दूध बिलाव पीवै, आपदा नहिं देखता।।3।।

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्माङ्गाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

दोहा– **कठिन वचन मत बोल, पर निन्दा अरु झूठ तज।**
साँच जवाहर खोल, सतवादी जगमें सुखी।।
उत्तम सत्य बरत पालीजै, पर विश्वास घात नहिं कीजै।
साँचे झूठे मानुष देखो, आपन पूत स्वपास न पेखो।।
पेखों तिहायत पुरुष साँचे, को दरब सब दीजिये।
मुनिराज श्रावक की प्रतिष्ठा, साँच गुण लख लीजिये।
ऊँचे सिंहासन बैठि वसुनृप, धरम का भूपति भया।
बच झूठ सेती नरक पहुँचा, सुरगमें नारद गया।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्माङ्गाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

दोहा– **धरि हिरदै संतोष, करहूँ तपस्या देहसों।**
शौच सदा निरदोष, धरम बड़ो संसार में।।
उत्तम शौच सर्व जग जाना, लोभ पाप को बाप बखाना।
आशा–पास महा दुःखदानी,सुख पावै संतोषी प्रानी।।
प्रानी सदा शुचि शील जप तप, ज्ञानध्यान प्रभाव तैं।
नित गंगजमुन समुद्र न्हाये अशुचि दोष स्वभावतैं।।
ऊपर अमल मल भर्यो, भीतर कौनविधि घट शुचि कहै।
बहू देह मैली सुगुन थैली, शौच गुन साधू लहै।।5।।

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्माङ्गाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

दोहा– **काय छहों प्रतिपाल, पंचेन्द्रिय मन वश करो।**
संजम रतन संभाल, विषयचोर बहु फिरत हैं।।
उत्तम संजम गहु मन मेरे, भव भव के भाजैं अघ तेरे।
सुरग नरक पशुगति में नाहीं, आलस–हरन करण सुख ठाहीं।
ठाही पृथी जल आग मारुत, रूख त्रस करूना धरो।
सपरसन रसना घ्रान नैना, कान मन सब वश करो।
जिस बिना नहिं जिनराज सीझे, तू रुल्यो जग कीच में।
इक घरी मत विसरो करो नित, आव जम–मुख बीच में।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्माङ्गाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

दोहा– **तप चाहें सुर राय, करम शिखर को वज्र है।**
द्वादशविधि सुखदाय, क्यों न करे निजसकति सम।
उत्तम तप सब माँहि बखाना, करमशैलको वज्र समाना।
बस्यो अनादि निगोद मँझारा, भू विकलत्रय पशुतन धारा।।
धारा मनुष तन महादुर्लभ, सुकुल आयु निरोगता।
श्री जैनवानी तत्त्वज्ञानी, भई विषय–पयोगिता।।

अति महादुर्लभ त्याग विषय, कषाय जो तप आदरैं।
नरभव अनूपम कनक घर पर, मणिमयी कलशा धरैं।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्माङ्गाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

दोहा– **दान चार परकार, चार संघको दीजिये।**
धन बिजुरी उनहार, नरभव लाहो लीजिये।।

उत्तम त्याग कह्यो जग सारा, औषधिशास्त्र अभय आहारा।
निहचै रागद्वेष निरवारै, ज्ञाता दोनों दान सँभारे।।
दोनों सँभारे कूप जल सम, दरब घरमें परिनया।
निज हाथ दीजे साथ लीजे, खाय खोया बह गया।।
धनि साध शास्त्र अभय दिवैया, त्याग राग विरोध को।
बिन दान श्रावक साधु दोनों, लहैं नाहीं बोध को।।8।।

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्माङ्गाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

दोहा– **परिग्रह चौबीस भेद, त्याग करें मुनिराजजी।**
तिसनाभाव उछेद, घटती जान घटाइये।।

उत्तम आकिंचन गुण जानो, परिग्रह चिंता दुःखही मानो।
फाँस तनकसी तनमें सालै, चाह लंगोटी की दुःख भालै।।
भालै न समता सुख कभी नर, बिना मुनि मुद्रा धरैं।
धनि नगन पर तन नगन ठाढ़े, सुर असुर पायनि परैं।।
धनमांहि तिसना जो घटावे, रुचि नहीं संसार सौं।
बहु धन बुरा हूँ भला कहिये, लीन पर उपगार सौं।।9।।

ॐ ह्रीं उत्तमआकिंचन्यधर्माङ्गय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

दोहा– **शील बाढ़ नौ राख, ब्रह्मभाव अन्तर लखो।**
करि दोनों अभिलाख, करहु सफल नर भव सदा।।

उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनौ, माता बहिन सुता पहिचानौ।
सहै बान वरषा बहु सूरे, टिकै न नैन–बाण लखि कूरे।।

कूरे तिया के अशुचि तन में, कामरोगी रति करें।
बहु मृतक सड़हिं मसान मांहीं, काग ज्यों चौंचें भरैं।।
संसारमें विषयाभिलाषा, तजि गये जोगीश्वरा।
'द्यानत' धरम दश पैंडि चढ़िके, शिवमहल में पगधरा।।10।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

।। जयमाला ।।

दोहा – दशलच्छन वंदौं सदा, मनवाँछित फलदाय।
कहों आरती भारती, हम पर होहु सहाय।।1।।

बेसरी छन्द

उत्तम छिमा जहाँ मन होई, अन्तर बाहिर शत्रु न कोई।
उत्तम मार्दव विनय प्रकासैं, नानाभेद ज्ञान सब भासैं।।
उत्तम आर्जव कपट मिटावैं, दुरगति त्यागि सुगति उपजावैं।
उत्तम सत्य–वचन मुख बोले, सो प्रानी संसार न डोले।।
उत्तम शौच लोभ–परिहारी, संतोषी गुण रतन भण्डारी।
उत्तम संयम पालै ज्ञाता, नरभव सफल करैं ले साता।।
उत्तम तप निरवांछित पाले, सो नर करम–शत्रु को टालै।
उत्तम त्याग करे जो कोई, भोगभूमि–सुर–शिवसुख होई।।
उत्तम आकिंचन व्रत धारैं, परम समाधि दशा विस्तारैं।
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावैं, नर–सुर सहित मुकतिफल पावैं।।

दोहा – **करै करम की निरजरा, भव पींजरा विनाश।**
अजर अमर पद को लहैं, 'द्यानत' सुखकी राशि।।

ॐ ह्री उत्तमक्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य दशलक्षण धर्मेभ्यः नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

रत्नत्रय पूजन

चहुँ गति–फनि–विष–हरन–मणि, दुःख–पावक–जल–धार।
शिव–सुख सुधा–सरोवरी, सम्यक्–त्रयी निहार।।

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयधर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

(सोरठा)

क्षीरोदधि उनहार, उज्ज्वल जल अति सोहनो।
जनम–रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन–केसर गारि, परिमल–महा–सुरंगमय।
जनम–रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल अमल चितार, वासमती–सुखदास के।
जनम–रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

महकैं फूल अपार, अलि गुजैं ज्यों थुति करैं।
जनम–रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लाडू बहु विस्तार, चीकन मिष्ट सुगन्धयुत।
जनम–रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप रतनमय सार, जोत प्रकाशै जगत में।
जनम–रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सुवास विथार, चंदन अगर कपूर की।
जनम–रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल शोभा अधिकार, लोंग छुहारे जायफल।
जनम–रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ दरब निरधार, उत्तम सो उत्तम लिए।
जनम–रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् दरशन ज्ञान, व्रत शिव–मग तीनों मयी।
पार उतारन यान, 'द्यानत' पूजों व्रत सहित।।

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वाद :

इष्ट प्रार्थना

भावना दिन रात मेरी, सब सुखी संसार हो।
सत्य संयम शील का, व्यवहार घर–घर बार हो।टेक।
धर्म का प्रचार हो, अरु देश का उद्धार हो।
और ये बिगड़ा हुआ, भारत चमन गुलजार हो।1।
ज्ञान के अभ्यास से, जीवों का पूर्ण विकास हो।
धर्म के प्रचार से, हिंसा का जग से ह्रास हो।2।
शान्ति अरु आनन्द का, हर एक घर में वास हो।
वीर वाणी पर सभी, संसार का विश्वास हो।3।
रोग अरु भय शोक होवे, दूर सब परमात्मा,
कर सके कल्याण ज्योति, सब जगत की आत्मा।4।

सम्यग्दर्शन पूजन

सिद्ध अष्ट-गुनमय प्रगट, मुक्त-जीव-सोपान।
ज्ञानचरित जिहँ बिन अफल, सम्यक्दर्श प्रधान।।

ॐ ह्रीं अष्टाङ्ग-सम्यग्दर्शन ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

नीर सुगंध अपार, तुषा हरै मल क्षय करै।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं अष्टाङ्ग-सम्यग्दर्शनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल केशर घनसार, ताप हरै सीतल करै।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं अष्टाङ्ग-सम्यग्दर्शनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं अष्टाङ्ग-सम्यग्दर्शनाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं अष्टाङ्ग-सम्यग्दर्शनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज विविध प्रकार, क्षुधा हरै थिरता करै।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं अष्टाङ्ग-सम्यग्दर्शनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप-ज्योति तमहार,घट-पट परकाशै महा।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं अष्टाङ्ग-सम्यग्दर्शनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप घ्रान-सुखकार, रोग विघन जड़ता हरै।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं अष्टाङ्ग-सम्यग्दर्शनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि विथार, निहचैं सुरशिवफल करै।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं अष्टाङ्ग-सम्यग्दर्शनाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं अष्टाङ्ग-सम्यग्दर्शनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - **आप आप निहचै लखैं, तत्व प्रीति-व्योहार।**
रहित दोष पच्चीस हैं, सहित अष्ट गुन सार।।

(चौपाई मिश्रित गीता)

सम्यक् दरशन-रतन गहीजे, जिन-वच में संदेह न कीजै।
इहभवविभव-चाहदुखदानी, पर-भवभोग चहै मत प्रानी।।
प्रानी गिलान न करि अशुचि लखि, धरम गुरु प्रभु परखिए।
पर-दोष ढकिए धरम डिगते, को सुथिर कर हरखिए।।
चहुँ संघ को वात्सल्य कीजै, धरम की परभावना।
गुन आठसों गुन आठ लहिकैं, इहाँ फेर न आवना।।

ॐ ह्रीं अष्टाङ्ग-सहितपंचविंशतिदोषरहितसम्यग्दर्शनाय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वादः

सम्यग्ज्ञान पूजन

पंच भेद जाके प्रगट, ज्ञेय प्रकाशन भान।
मोह–तपन–हर–चन्द्रमा, सोई सम्यग्ज्ञान।।

ॐ ह्रीं अष्टाङ्गसम्यग्ज्ञान ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

नीर सुगन्ध अपार, तृषा हरै मल छय करै।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं अष्टाङ्गसम्यग्ज्ञानाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल केशर घनसार, ताप हरै शीतल करै।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं अष्टाङ्गसम्यग्ज्ञानाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अछत अनूप निहार, दारिद नाशे सुख भरे।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं अष्टाङ्गसम्यग्ज्ञानाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पहुप सुवास उदार, खेद हरे मन शुचि करै।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं अष्टाङ्गसम्यग्ज्ञानाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज विविध प्रकार, क्षुधा हरैं थिरता करैं।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं अष्टाङ्गसम्यग्ज्ञानाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपजोति–तमहार, घट पट परकाशैं महा।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं अष्टाङ्गसम्यग्ज्ञानाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप घ्रान–सुखकार, रोग विघन जड़ता हरै।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं अष्टाङ्गसम्यग्ज्ञानाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुरशिवफल करै।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं अष्टाङ्गसम्यग्ज्ञानाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गन्धाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं अष्टाङ्गसम्यग्ज्ञानाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – आप आप जानैं नियत, ग्रन्थ पठन व्योहार।
संशय विभ्रम–मोह बिन, अष्ट अंग गुनकार।।

(चौपाई मिश्रित गीता)

सम्यक्ज्ञान–रतन मन भाया, आगम तीजा नैन बताया।
अक्षर शुद्ध अर्थ पहिचानो, अक्षर अरथ उभय संग जानो।।
जानो सुकाल–पठन जिनागम, नाम गुरु न छिपाइये।
तप रीति गहि बहु मौन देकैं, विनय–गुण चित्त लाइये।।
ये आठ भेदकरम उछेदक, ज्ञान–दर्पण देखना।
इस ज्ञान ही सों भरत सीझा, और सब पट पेखना।।

ॐ ह्रीं अष्टाङ्गसम्यग्ज्ञानाय अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वादः

सम्यक्चारित्र पूजन

विषयरोग औषध महा, दव-कषाय-जलधार।
तीर्थंकर जाको धरै, सम्यक्चारित्र सार।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

नीर सुगन्ध अपार, तृषा हरै मल क्षय करै।
सम्यक्चारित सार, तेरह विध पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल केशर घनसार, ताप हरै शीतल करै।
सम्यक्चारित सार, तेरह विध पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै।
सम्यक्चारित सार, तेरह विध पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै।
सम्यक्चारित सार, तेरह विध पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज विविध प्रकार, क्षुधा हरै थिरता करै।
सम्यक्चारित सार, तेरह विध पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप-जोति तमहार, घट पट परकाशै महा।
सम्यक्चारित सार, तेरह विध पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप घ्रान सुखकार, रोग विघन जड़ता हरै।
सम्यक्चारित सार, तेरह विध पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुरशिवफल करै।
सम्यक्चारित सार, तेरह विध पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गन्धाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु।
सम्यक्चारित सार, तेरह विध पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **आप आप थिर नियत नय, तप संजम व्योहार।**
स्वपर दया दोनों लिये, तेरहविध दुःखहार।

(चौपाई मिश्रित गीता)

सम्यक्चारित रतन संभालो, पाँच पाप तजि के व्रत पालौ।
पंचसमिति त्रयगुपति गहीजै, नरभव सफल करहु तन छीजै।।
छीजै सदा तन को जतन यह, एक संजम पालिए।
बहु रुल्यो नरक-निगोद माहीं, विषय कषायनि टालिए।।
शुभ-करम जोग सुघाट आयो, पार हो दिन जात है।
'द्यानत' धरम की नाव बैठो, शिवपुरी कुशलात है।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

सम्यक् दर्शन ज्ञान-व्रत, इस बिन मुक्ति न होय।
अन्ध पंगु अरु आलसी, जुदे जलैं दवलोय।।

(चौपाई)

जापै ध्यान सुथिर बन आवै, ताके करमबन्ध कट जावै।
तासों शिवतिय प्रीति बढ़ावै, जो सम्यक् रत्नत्रय ध्यावै।
ताको चहुँगति के दुःख नाहीं, सो न परे भवसागर माहीं।
जनम-जरा मृत दोष मिटावै, जो सम्यक् रत्नत्रय ध्यावै।
सोई दशलच्छन को साधै, सो सोलहकारण आराधै।
सो परमातमपद उपजावै, जो सम्यक् रत्नत्रय ध्यावै।
सोई शक्र-चक्रिपद लेई, तीन लोक के सुख विलसेई।
सो रागादिक भाव बहावै, जो सम्यक् रत्नत्रय ध्यावै।
सोई लोका लोक निहारे, परमानन्द दशा विस्तारे।
आप तिरै औरन तिरवावै, जो सम्यक् रत्नत्रय ध्यावै।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

दोहा – **एक स्वरूपप्रकाश निज, वचनकह्यो नहिं जाय।**
तीन भेद व्योहार सब, द्यानत को सुखदाय।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

।। विशद वाणी ।।

ha µJ_m| _| Iwe ahZm, grIm h¡ h_ZoŸ&
ha µJ_m| H$moem§{V go nrZm grIm h¡ h_ZoŸ&&
bmoJ {OZ µJ_m| go _aVo h¢ Xw{Z`m± _|Ÿ&
"{deX' CZ µJ_m| _| OrZm grIm h¡ h_ZoŸ&&

– आचार्य विशदसागर

परम पूज्य 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे गुरुवर !, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
गुरुवर के दर्शन करने से, हृदय कमल खिल जाते हैं।।
गुरु आराध्य हम आराधक, करते हैं उर से अभिवादन।
तुम हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानन्।

ॐ ह्रीं क्षमामूर्ति श्री आचार्य 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ:ठ: स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया है।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैं।।

ॐ ह्रीं क्षमामूर्ति श्री आचार्य 108 विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं।।

ॐ ह्रीं क्षमामूर्ति श्री आचार्य108 विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंसनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं।।

विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैं।।

ॐ ह्रीं क्षमामूर्ति श्री आचार्य 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लायें हैं।
काम बाण विध्वंस होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं।।

ॐ ह्रीं क्षमामूर्ति श्री आचार्य 108 विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर !, क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुंदर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की !, क्षुधा मेटने आये हैं।।

ॐ ह्रीं क्षमामूर्ति श्री आचार्य 108 विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैं।।

ॐ ह्रीं क्षमामूर्ति श्री आचार्य 108 विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंसनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था।।

विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आयें हैं।।

ॐ ह्रीं क्षमामूर्ति श्री आचार्य 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं।।

ॐ ह्रीं क्षमामूर्ति श्री आचार्य 108 विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर !, थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ ह्रीं क्षमामूर्ति श्री आचार्य 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।
मन-वच-तन से गुरु की, कहते हैं जयमाल।।

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण।
छतरपूर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी।

बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े।
आठ फरवरी सन् छियानवे में, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया।
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसीलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते।
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारी, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती।
तुममें कोइ मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है।
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जाना।
हम तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
गुरु रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता।
हम साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें।
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान।।

इत्याशीर्वाद (पुष्पाजलिं छिपेत्)

– ब्र. आस्था जैन, *देवरी*

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

रचयिता : क्षु. विनिर्भयसागर

विशद सागर की गुण आगर की, शुभ मंगल दीप जलाय हो
मैं आज उतारूँ आरतियाँ
नाथूराम श्री इंदर जी के, गर्भ विषें गुरु आए।
घर घर खुशी के दीप जले हैं, सब जन मंगल गाए।।
गुरुजी सब जन मंगल गाए।
गृह त्यागी की वैरागी की, ले दीप सुमन का थाल हो...
मैं आज उतारूँ आरतियाँ
गुरुवर शील व्रतों के धारी, आतम ब्रह्म विहारी,
खड्ग धार शिव पथ पर चलते, शिथिलाचार निवारी
गुरुजी शिथला चार निवारी
ना रागी की ना द्वेषी की, शुभ मंगल दीप जलाय...
मैं आज उतारूँ आरतियाँ
गुरु विराग सिंधु से आकर, तुमने दीक्षा धारी
तुमने अपने घर को छोड़ा, दुनिया छोड़ी सारी
गुरुजी दुनिया छोड़ी सारी
शुभ योगी की ना भोगी की, ले दीप रतन मय आज हो।
मैं आज उतारूँ आरतियाँ
गुरुवर आज नयन से लखकर, आलौकिक सुख पाया।
भक्ति भाव से आरती करके, फूला नहीं समाया।।
गुरु जी फूला नहीं समाया
ऐसे गुरुवर को ऐसे मुनिवर को, कर बंदन बारंबार हो...
मैं आज उतारूँ आरतियाँ
विशद सागर की....

इत्याशीर्वादः।

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

– **श्रीमती इन्द्रमती गुप्ता,** श्योपुर

(तर्ज : माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा)

जय–जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के .....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अंहिसा महाव्रती की..2, महिमा कही न जावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के .....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।
जग की माया को लखकर के..2 मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु, जन्म सफल हो जावे।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के .....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।
गुरु की भक्ति करने वाला..2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के .....

धन्य है जीवन, धन्य है तन–मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे
आशीर्वाद हमें दो स्वामी...2 अनुगामी बन जावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के ...जय ... जय...

इत्याशीर्वादः।

निर्वाण काण्ड भाषा

दोहा – **वीतराग वन्दौं सदा, भाव सहित सिर नाय।**
कहूँ काण्ड निर्वाण की, भाषा सुगम बनाय।।1।।

चौपाई

अष्टापद आदीश्वर स्वामि, वासुपूज्य चम्पापुरि नामि।
नेमिनाथ स्वामी गिरनार, वन्दौं भाव–भगति उर धार।।2।।

चरम तीर्थंकर चरम–शरीर, पावापुरि स्वामी महावीर।
शिखरसम्मेद जिनेश्वर बीस, भावसहित वन्दौं निश–दीस।।3।।

वरदत्तराय अरु इंद्र मुनिंद्र, सायरदत्त आदि गुणवृंद।
नगर तारवर मुनि उठकोड़ि, वंदौं भावसहित कर जोड़ि।।4।।

श्रीगिरनार शिखर विख्यात, कोड़ि बहत्तर अरु सौ सात।
संबु–प्रद्युम्न कुमार द्वै–भाय, अनिरुद्ध आदि नमूँ तसु पाय।।5।।

रामचंद्र के सुत द्वै वीर, लाड–नरिंद आदि गुणधीर।
पाँच कोड़ि मुनि मुक्ति मंझार, पावागिरि वंदौं निरधार।।6।।

पांडव तीन द्रविड़–राजान, आठ कोड़ि मुनि मुकति पयान।
श्री शत्रुंजय–गिरि के सीस, भावसहित वंदौं निश–दीस।।7।।

जे बलभद्र मुकति में गये, आठ कोड़ि मुनि औरहु भये।
श्री गजपंथ शिखर सुविशाल, तिनके चरण नमूँ तिहुँ काल।।8।।

राम हनू सुग्रीव सुडील, गव गवाख्य नील महानील।
कोड़ि निन्याणवे मुक्ति पयान, तुंगीगिरि वंदौं धरि ध्यान।।9।।

नंग अनंग कुमार सुजान, पाँच कोड़ि अरु अर्घ प्रमान।
मुक्ति गये सोनागिरि–शीश, ते वंदौं त्रिभुवनपति ईस।।10।।

रावण के सुत आदिकुमार, मुक्ति गये रेवा–तट सार।
कोटि पंच अरु लाख पचास, ते वन्दौं धरि परम हुलास।।11।।

रेवानदी सिद्धवर कूट, पश्चिम दिशा देह जह छूट।
द्वै चक्री दश कामकुमार, आठकोड़ि वंदौं भव पार।।12।।
बड़वानी बड़नगर सुचंग, दक्षिण दिशि गिरि चूल उतंग।
इंद्रजीत अरु कुंभ जु कर्ण, ते वंदौं भव-सागर तर्ण।।13।।
सुवरण-भद्र आदि मुनि चार, पावागिरि-वर-शिखर मँझार।
चेलना नदी-तीर के पास, मुक्ति गये वंदौं नित तास।।14।।
फलहोड़ी बड़गाम अनूप, पच्छिम दिशा द्रोणागिरि रूप।
गुरुदत्तादि-मुनीसुर जहाँ, मुक्ति गये वंदौं नित तहाँ।।15।।
बाल महाबाल मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय।
श्री अष्टापद मुक्ति मँझार, ते वंदौं नित सुरत सँभार।।16।।
अचलापुर की दिशा ईसान, तहाँ मेढ़गिरि नाम प्रधान।
साढ़े तीन कोड़ि मुनिराय, तिनके चरण नमूँ चित लाय।।17।।
वंशस्थल वन के ढिग होय, पच्छिम दिशा कुंथुगिरि सोय।
कुलभूषण देशभूषण नाम, तिनके चरणनि करूँ प्रणाम।।18।।
जसरथ राजा के सुत कहे, देश कलिंग पाँच सौ लहे।
कोटिशिला मुनि कोटि प्रमान, वंदन करूँ जोरि जुग पान।।19।।
समवसरण श्री पार्श्व-जिनंद, रेसिंदीगिरि नयनानंद।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वंदौं नित धरम-जिहाज।।20।।
मथुरापुरी पवित्र उद्यान, जम्बूस्वामी जी निर्वाण।
चरमकेवली पंचमकाल, ते वन्दौं नित दीनदयाल।।21।।
तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित प्रति वंदन कीजै तहाँ।
मन-वच-काय सहित सिर नाय, वंदन करहिं भविक गुणगाय।।22।।
संवत सतरह सौ इकताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल।
'भैया' वंदन करहिं त्रिकाल, जय निर्वाण काण्ड गुणमाल।।23।।

इत्याशीर्वाद : ।

सामायिक – ध्यान विधि

सामायिक में शुद्धता और स्वच्छता का महत्त्व सर्वाधिक है। श्वाँस से मन को (शुद्ध करें) बुहारें, शुद्ध सूती/कम से कम वस्त्र शरीर पर धारण करें और ऐसे स्थान पर उसे सम्पन्न करें जो एकान्त हो, निर्जन्तुक हो, कोलाहल/व्यर्थ के शोरगुल से मुक्त हो। ऐसे स्थान पर शान्त/निराकुल चित्त से पूर्व दिशा में मुख कर निर्द्वन्द खड़े हो जाएँ। सर्वप्रथम अंजलिबद्ध हाथ जोड़ें, अंजलि को मस्तक तक ले जायें और तीन आवर्तों के साथ एक शिरोनति (सिर झुकाने की क्रिया) तीन बार 'नमोऽस्तु' रोम-रोम में गूंजने वाले मौन-उच्चार के साथ संपन्न करें। इसके बाद तीन बार 'ॐ नमः सिद्धेभ्यः' कहें और फिर रीढ़ की हड्डी को बिल्कुल सीधा कर दोनों भुजाओं को उन्मुक्त छोड़ते हुए समपाद (दोनों पैरों के मध्य चार अंगुल का अन्तर) करते हुए सिर सीधा हो, आँख नाक की नोक पर केन्द्रित हो तथा पूर्व दिशा में मुख रखकर 27 श्वासोच्छावासों में 9 बार णमोकार महामंत्र का जाप करें। जाप मध्यम स्वर में हो, किन्तु इस तरह से हो कि उसकी धुन रोम-रोम में झंकृत हो उठे।

णमोकार महामंत्र तीन श्वासोच्छवासों में संपन्न करें। श्वाँस भीतर खींचते (इनहेल करते) हुए 'णमो अरिहंताणं' बोलें, श्वाँस छोड़ते (एक्झेल करते) समय 'णमो सिद्धाणं' कहें फिर दूसरे दौर में श्वाँस लेते हुए 'णमो आइरियाणं' का उच्चारण करें तथा श्वाँस लौटाते वक्त 'णमो उवज्झायाणं' को गूंजने दें। यह दूसरा दौर हुआ। तीसरे दौर में श्वाँस खींचते समय 'णमो लोए' बोलें तथा श्वाँस छोड़ते वक्त 'सव्व साहूणं' कहें। इस तरह नौ बार में सत्ताईस श्वासोच्छवास होंगे।

(पूर्व दिशा में – नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

पूर्व दिशा और आग्नेय विदिशा में स्थित जितने भी अरिहन्त, सिद्ध, (केवली, जिन) आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, जिनचैत्यालय विराजमान हैं, उनकी मैं वंदना करता हूँ।

(दक्षिण दिशा में – नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

दक्षिण दिशा में और 'नैऋत्य' विदिशा में स्थित जितने भी अरिहन्त, सिद्ध (केवली, जिन) आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, जिनचैत्यालय विराजमान हैं, उनकी मैं बारम्बार वंदना करता हूँ।

(पश्चिम दिशा में– नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

पश्चिम दिशा और 'ईशान' विदिशा में स्थित जितने भी अरिहन्त,सिद्ध, (केवली–जिन) आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, जिनचैत्यालय विराजमान हैं; उनकी मैं वंदना करता हूँ।

(उत्तर दिशा में – नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

उत्तर दिशा और 'ईशान' विदिशा में स्थित जितने भी अरिहन्त, सिद्ध, (केवली–जिन) आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, जिनचैत्यालय विराजमान हैं; उनकी मैं वंदना करता हूँ।

प्रतिज्ञा करें – अथ पौर्वाह्णिक (माध्याह्निक, अपराह्णिक) 'कालेघटिकाद्वय' (48 मिनट) पर्यन्त सर्व सावद्ययोगाद् विरतोऽस्मि।

(इतना कर चुकने के बाद हम पूर्व दिशा या उत्तर दिशा में मुँह करके सुस्थिर खड़े हो जायेंगे या पद्मासन अथवा अर्द्धपद्मासन में बैठ जायेंगे। फिर जाप–चिंतवन पश्चात् सामायिक पाठ पढ़ें।)

घड़ी का उपदेश

बीतनेवाली घड़ी को कौन लौटा पायेगा ?
इस धरा का इस धरा पर सब धरा रह जायेगा।
जिन्दगीभर का कमाया साथ में क्या जायेगा ?
यह सु–अवसर खो दिया तो अन्त में पछतायेगा।।

इत्याशीर्वादः।

आलोचना पाठ

दोहा – **वंदो पाँचों परमगुरु, चौबीसों जिनराज ।**
करूँ शुद्ध आलोचना, शुद्धि करन के काज।।1।।

सखी छंद

सुनिये जिन अरज हमारी, हम दोष किये अति भारी।
तिनकी अब निर्वृति काजा, तुम सरन लही जिनराजा।।2।।

इक वे ते चउ इंद्री वा, मन रहित सहित जे जीवा।
तिनकी नहिं करुणा धारी, निरदइ ह्वै घात विचारी।।3।।

समरंभ समारंभ आरंभ, मन वच तन कीने प्रारंभ।
कृत कारित मोदन करिकैं क्रोधादि चतुष्टय धरिकैं।।4।।

शत आठ जु इमि भेदनतैं, अघ कीने परिछेदन तैं।
तिनकी कहुँ कोलों कहानी, तुम जानत केवलज्ञानी।।5।।

विपरीत एकान्त विनय के, संशय अज्ञान कुनय के।
वश होय घोर अघ कीने, वचतैं नहिं जाय कहीने।।6।।

कुगुरुन की सेवा कीनी, केवल अदया करि भीनी।
या विधि मिथ्यात भ्रमायो, चहुँगति मधि दोष उपायो।।7।।

हिंसा पुनि झूठ जु चोरी, पर वनिता सों दृग जोरी।
आरंभ परिग्रह भीनो, पन पाप जु या विधि कीनो।।8।।

सपरस रसना घ्रानन को, चखु कान विषय सेवन को।
बहु करम किये मनमाने, कछु न्याय–अन्याय न जाने।।9।।

फल पंच उदम्बर खाये, मधु मांस मद्य चित्त चाये।
नहिं अष्ट मूलगुण धारे, सेये कुव्यसन दुःखकारे।।10।।

दुइबीस अभख जिन गाये, सो भी निश–दिन भुंजाये।
कछु भेदाभेद न पायो, ज्यों त्यों करि उदर भरायो।।11।।

अनंतानु जु बंधी जानो, प्रत्याख्यान अप्रत्याख्यानो।
संज्वलन चौकड़ी गुनिये, सब भेद जु षोडश मुनिये।।12।।

परिहास अरति रति शोग, भय ग्लानि तिवेद संयोग।
पनबीस जु भेद भये इम, इनके वश पाप किये हम।।13।।

निद्रा वश शयन कराई, सुपने मधि दोष लगाई।
फिर जागि विषय वन धायो, नाना विध विषफल खायो।।14।।

आहार विहार नीहारा, इनमें नहिं जतन विचारा।
बिन देखी धरी उठाई, बिन शोधी वस्तु जु खाइ।।15।।

तब ही परमाद सतायो, बहुविधि विकलप उपजायो।
कछु सुधि बुधि नाहिं रही है, मिथ्यामति छाय गई है।।16।।

मरजादा तुम ढिग लीनी, ताहू में दोष जु कीनी।
भिन भिन अब कैसें कहिये, तुम ज्ञान विषैं सब पइये।।17।।

हा! हा! मैं दुठ अपराधी, त्रस-जीवन राशि विराधी।
थावर की जतन न कीनी, उर में करुणा नहिं लीनी।।18।।

पृथिवी बहु खोद कराई महलादिक जागा चिनाई।
पुनि विन गाल्यो जल ढोल्यों, पंखातैं पवन विलोल्यो।।19।।

हा! हा! मैं अदयाचारी, बहु हरित काय जु विदारी।
तामधि जीवन के खंदा, हम खाये धरि आनंदा।।20।।

हा! हा! परमाद बसाई, बिन देखे अगनि जलाई।
तामध्य जीव जे आये, ते हू परलोक सिधाये।।21।।

बीध्यो अन राति पिसायो, ईंधन बिन सोधि जलायो।
झाडू ले जागां बुहारी चींटी आदिक जीव विदारी।।22।।

जल छानि जिवानी कीनी, सो हू पुनि डारि जु दीनी।
नहिं जल-थानक पहुँचाई, किरिया बिन पाप उपाई।।23।।

जल मल मोरिन गिरवायो, कृमि-कुल बहु घात करायो।
नदियन बिच चीर धुवाये, कोसन के जीव मराये।।24।।

अन्नादिक शोध कराई, तातें जु जीव निसराई।
तिनका नहिं जतन कराया, गलियारैं धूप डराया।।25।।

पुनि द्रव्य कमावन काजै, बहु आरंभ हिंसा साजै।
किये तिसनावश अघ भारी, करुणा नहिं रंच विचारी।।26।।

इत्यादिक पाप अनंता, हम कीने श्री भगवंता।
संतति चिरकाल उपाई, वाणी तैं कहिय न जाई।।27।।

ताको जु उदय अब आयो, नाना विध मोहि सतायो।
फल भुंजत जिय दुःख पावै, वचतैं कैसे करि गावै।।28।।

तुम जानत केवलज्ञानी, दुःख दूर करो शिवथानी।
हम तो तुम शरण लही है, जिन तारन विरद सही है।।29।।

इक गांव पती जो होवे, सो भी दुखिया दुख खोवै।
तुम तीन भुवन के स्वामी, दुःख मेटहु अंतरजामी।।30।।

द्रौपदि को चीर बढ़ाओ, सीता-प्रति कमल रचायो।
अंजन से किये अकामी, दुःख मेटो अंतरजामी।।31।।

मेरे अवगुन न चितारो, प्रभु अपनो विरद सम्हारो।
सब दोष-रहित करि स्वामी, दुःख मेटहु अंतरजामी।।32।।

इंद्रादिक पदवी नहिं चाहूँ, विषयनि में नाहिं लुभाऊँ।
रागादिक दोष हरीजे, परमातम निज पद दीजे।।33।।

दोहा- दोष-रहित जिनदेवजी, निज-पद दीज्यो मोय।
सब जीवन के सुख बढ़ें, आनंद मंगल होय।।
अनुभव माणिक पारखी, जौहरि आप जिनन्द।
ये ही वर मोहि दीजिये, चरण शरण आनन्द।

इत्याशीर्वादः।

सामायिक पाठ

प्रेम भाव हो सब जीवों से, गुणीजनों में हर्ष प्रभो।
करुणा स्रोत बहे दु:खियों पर, दुर्जन में मध्यस्थ विभो।।1।।

वह अनन्त बल शील आत्मा, हो शरीर से भिन्न प्रभो।
ज्यों होती तलवार म्यान से, वह अनन्त बल दो मुझको।।2।।

सुख दु:ख बैरी बन्धु वर्ग में, काँच कनक में समता हो।
वन उपवन प्रासाद कुटी में, नहीं खेद नहिं ममता हो।।3।।

जिस सुन्दर तम पथ पर चलकर, जीते मोह मान मन्मथ।
वह सुन्दर पथ ही प्रभु मेरा, बना रहे अनुशीलन पथ।।4।।

एकेन्द्रिय आदिक प्राणी की, यदि मैंने हिंसा की हो।
शुद्ध हृदय से कहता हूँ वह, निष्फल हो दुष्कृत्य प्रभो।।5।।

मोक्ष मार्ग प्रतिकूल प्रवर्तन, जो कुछ किया कषायों से।
विपथ गमन सब कालुष मेरे, मिट जावें सद्भावों से।।6।।

चतुर वैद्य विष विक्षत करता, त्यों प्रभु मैं भी आदि उपान्त।
अपनी निन्दा आलोचन से, करता हूँ पापों को शान्त।।7।।

सत्य अहिंसादिक व्रत में भी, मैंने हृदय मलीन किया।
व्रत विपरीत प्रवर्तन करके, शीलाचरण विलीन किया।।8।।

कभी वासना की सरिता का, गहन सलिल मुझ पर छाया।
पी पीकर विषयों की मदिरा, मुझमें पागलपन आया।।9।।

मैंने छली और मायावी, हो असत्य आचरण किया।
पर-निन्दा गाली चुगली जो, मुँह पर आया वमन किया।।10।।

निरभिमान उज्ज्वल मानस हो, सदा सत्य का ध्यान रहे।
निर्मल-जल की सरिता सदृश, हिय में निर्मल ज्ञान बहे।।11।।

मुनि चक्री शक्री के हिय में, जिस अनन्त का ध्यान रहे।
गाते वेद पुराण जिसे वह, परमदेव मम् हृदय रहे।।12।।

दर्शन ज्ञान स्वभावी जिसने, सब विकार ही वमन किये।
परम ध्यान गोचर परमातम, परमदेव मम् हृदय रहे।।13।।

जो भव दु:ख का विध्वंसक है, विश्व विलोकी जिसका ज्ञान।
योगी-जन के ध्यान गम्य वह, बसे हृदय में देव महान्।।14।।

मुक्ति-मार्ग का दिग्दर्शक है, जन्म-मरण से परम अतीत।
निष्कलंक त्रैलोक्यदर्शि वह, देव रहे मम् हृदय समीप।।15।।

निखिल विश्व के वशीकरण वे, राग रहे ना द्वेष रहे।
शुद्ध अतीन्द्रिय ज्ञान स्वभावी, परमदेव मम् हृदय रहे।।16।।

देख रहा जो निखिल विश्व को, कर्म-कलंक विहीन विचित्र।
स्वच्छ विनिर्मल निर्विकार वह, देव करें मम् हृदय पवित्र।।17।।

कर्म-कलंक अछूत न जिसको, कभी छू सके दिव्य प्रकाश।
मोह तिमिर को भेद चला जो, परम शरण मुझको वह आप्त।।18।।

जिसकी दिव्य ज्योति के आगे, फीका पड़ता सूर्य प्रकाश।
स्वयं ज्ञानमय स्व पर-प्रकाशी, परम शरण मुझको वह आप्त।।19।।

जिसके ज्ञान रूप दर्पण में, स्पष्ट झलकते सभी पदार्थ।
आदि अन्त से रहित शान्तशिव, परम शरण मुझको वह आप्त।।20।।

जैसे अग्नि जलाती तरु को, तैसे नष्ट हुए स्वयमेव।
भय विषाद चिन्ता नहिं जिनको, परम शरण मुझको वह देव।।21।।

तृण, चौकी, शिल, शैलशिखर नहिं, आत्म समाधि के आसन।
संस्तर, पूजा, संघ-सम्मिलन, नहीं समाधि के साधन।।22।।

इष्ट वियोग अनिष्ट योग में, विश्व मनाता है मातम।
हेय सभी हैं विषय वासना, उपादेय निर्मल आतम।।23।।

बाह्य जगत कुछ भी नहिं मेरा, और न बाह्य जगत का मैं।
यह निश्चय कर छोड़ बाह्य को, मुक्ति हेतु नित स्वस्थ रमें।।24।।

अपनी निधि तो अपने में है, बाह्य वस्तु में व्यर्थ प्रयास।
जग का सुख तो मृग तृष्णा है, झूठे हैं उसके पुरुषार्थ।।25।।

अक्षय है शाश्वत है आत्मा, निर्मल ज्ञान स्वभावी है।
जो कुछ बाहर है सब पर है, कर्माधीन विनाशी है।।26।।

तन से जिसका ऐक्य नहीं हो, सुत, तिय मित्रों से कैसे।
चर्म दूर होने पर तन से, रोम समूह रहे कैसे।।27।।

महा कष्ट पाता जो करता, पर पदार्थ, जड़-देह संयोग।
मोक्ष महल का पथ है सीधा, जड़-चेतन का पूर्ण वियोग।।28।।

जो संसार पतन के कारण, उन विकल्प जालों को छोड़।
निर्विकल्प निर्द्वन्द आत्मा, फिर-फिर लीन उसी में हो।।29।।

स्वयं किये जो कर्म शुभाशुभ, फल निश्चय ही वे देते।
करे आप फल देय अन्य तो, स्वयं किये निष्फल होते।।30।।

अपने कर्म सिवाय जीव को, कोई न फल देता कुछ भी।
'पर देता है' यह विचार तज, स्थिर हो छोड़ प्रमादि बुद्धि।।31।।

निर्मल, सत्य, शिवं सुन्दर है, 'अमितगति' वह देव महान्।
शाश्वत निज में अनुभव करते, पाते निर्मल पद निर्वाण।।32।।

इन बत्तीस पदों से जो कोइ, परमातम को ध्याते हैं।
सांची सामायिक को पाकर, भवोदधि तर जाते हैं।।33।।

इत्याशीर्वादः।

तीर्थंकर पद के सोपान

(सोलह कारण भावना)

रचियता : आचार्य विशदसागर

दोहा - सोलह कारण भावना, विशद भाव से भाय।
तीर्थंकर पदवी लहे, मोक्ष महाफल पाय।।

दर्शन विशुद्धि भावना

मोह तिमिर से आच्छादित है, तीन लोक सारा।
काल अनादि से भटके हैं, मिथ्या भ्रम द्वारा।।
कभी नरक नर सुर गति पायी, पशु गति में भटके।
राग द्वेष मद मोह प्राप्त कर, विषयों में अटके।।
सप्त तत्व छह द्रव्य गुणों में, श्रद्धा उर धरना।
मिथ्या भाव छोड़कर सम्यक्, रुचि प्राप्त करना।।
शंकादि दोषों को तजकर, भेद ज्ञान पाना।
दरश विशुद्धि गुणीजनों ने, या को ही माना।।1।।

विनय सम्पन्न भावना

अहंकार दुर्गति का कारण, सद्गति का नाशी।
निज के गुण को हरने वाला, दुर्गुण की राशि।।
मद की दम को दमन करें जो, बनकर श्रद्धानी।
नम्र भाव धारण करते हैं, जग में सद्ज्ञानी।।
उच्च गोत्र का कारण बन्धु, मृदुल भाव गाया।
पुण्य पुरुष होता है जिसने, विनय भाव पाया।।
'विशद' विनय सम्पन्न भावना, भाव सहित गाये।
तीर्थंकर सा पद पाकर के, सिद्ध शिला जाये।।2।।

अनातिचार भावना

नर भव पाया रत्न अमौलिक, विषयों में खोता।
भोगों में अनुराग लगा जो, अतिचार होता।।
अतिचार से रहित व्रतों, को पाले जो कोई।
प्रकट होय आतम निधि उसकी, सदियों से खोई।।
कृत कारित अरु अनुमोदन से, मन-वच-तन द्वारा।
नव कोटी से शील व्रतों का, पालन हो प्यारा।।
सोलहकारण शुभम् भावना, भाव सहित भावे।
अनतिचार व्रत शील से अपना, जीवन महकावे।।3।।

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना

ज्ञानावरणी कर्म ने भाई, जग में भरमाया।
सम्यक् ज्ञान हृदय में मेरे, जाग नहीं पाया।।
सम्यक् श्रद्धा के द्वारा अब, सम्यक् ज्ञान जगाना।
ज्ञाता बनकर ज्ञान के द्वारा, चित् में चित्त लगाना।।
अजर अमर पद पाने हेतु, ज्ञान सुधामृत पाना।
ॐकार मय जिनवाणी के, शुभ छन्दों को गाना।।
ज्ञान योग होता अभीक्ष्ण, यह शुद्ध भाव से ध्याना।
'विशद' ज्ञान के द्वारा भाई, सिद्ध शिला को पाना।।4।।

संवेग भावना

है संसार अपार असीमित, पार नहीं पाया।
काल अनादि से प्राणी यह, जग में भरमाया।।
भय से हो भयभीत जानकर, इस जग की माया।
मंगलमय संवेग भाव बस, ये ही कहलाया।।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण को, सम्यक् धर्म कहा।
मोक्ष महल का सम्यक् साधन, अनुपम यही रहा।।
धर्म और उसके फल में जो, हर्ष भाव आवे।
सु संवेग भाव शास्त्रों में, ये ही कहलावे।।5।।

शक्तितस्तप भावना

राग आग से जलकर अब तक, यूँ ही काल बिताया।
परिणत हुए भोग विषयों को, हमने अपनाया।।
निज निधि को खोकर के हमने, पर पदार्थ पाये।
प्रकट दिखाई देते हैं पर, अपने-अपने गाये।।
पर परिणत से बचकर हमको, निज निधि को पाना।
छोड़ विकल्पों को अब सारे, निज को ही ध्याना।।
यथाशक्ति जो त्याग करे, वह मोक्ष मार्ग जानो।
जैनागम में त्याग शक्तिसः, इसी तरह मानो।।7।।

शक्तितस्त्याग भावना

काल अनादि से यह प्राणी, तन का दास रहा।
साथ निभायेगा यह मेरा, ये विश्वास रहा।।
प्यास बढ़ाता है पीने से, जैसे जल खारा।
मृगतृष्णा बढ़ती रहती है, मिले न जल धारा।।
पल-पल करके नर जीवन का, समय निकल जाता।
इन्द्रियरोध किये बिन भाई, मिले ना सुख साता।।
इच्छाओं का दमन करे, फिर महामंत्र जपना।
यथा शक्ति तप करना भाई, शक्तिसः तपना।।6।।

साधु समाधि भावना

काल अनादि से मिथ्यावश, जन्म मरण पाया।
निज शक्ति को भूल जगत् में, प्राणी भरमाया।।
आधि व्याधि अरु पद उपाधि में, नर जीवन खोया।
मोह की मदिरा पीकर भारी, कर्म बीज बोया।।
जन्म मरण होता है तन का, चेतन है ज्ञाता।
कर्म करेगा जैसा प्राणी, वैसा फल पाता।।
चेतन का ना अंत है कोई, ना ही आदी है।
श्रेष्ठ मरण औ सत् अनुभूति, साधु समाधि है।।8।।

वैय्यावृत्ती भावना

स्वारथ का संसार है भाई, सारा का सारा।
लालच की बहती है जग में, बड़ी तीव्र धारा।।
पर उपकार को भूल रहे हैं, इस जग के प्राणी।
पर में निज उपकार छुपा है, कहती जिनवाणी।।
साधक करे साधना अपनी, संयम के द्वारा।
रत्नत्रय अपने जीवन से, जिनको है प्यारा।।
विघ्न साधना में कोई भी, उनकी आ जावे।
वैय्यावृत्ती विघ्न दूर, करना ही कहलावे।।9।।

अर्हद् भक्ति भावना

चार घातिया कर्मनाशकर, 'विशद' ज्ञान पाये।
समोशरण की सभा में बैठे, अर्हत् कहलाये।।
दिव्य देशना जिनकी पावन, जग में उपकारी।
सुहित हेतु पाते इस जग के, सारे नर-नारी।।
अर्हत् होते हैं इस जग में, सद्गुण के दाता।
अतः सार्व कहलाए भगवन्, भविजन के त्राता।।
हो अनुराग गुणों में उनके, भाव सहित भाई।
अर्हत् भक्ति गुणीजनों ने, इसी तरह गाई।।10।।

आचार्य भक्ति भावना

दर्शन ज्ञान चरित तप साधक, वीर्यचरण धारी।
रत्नत्रय का पालन करते, गुरु पंचाचारी।।
भक्तों के हैं भाग्य विधाता, मुक्ती पद दाता।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जन-जन के त्राता।।
सत् संयम की इच्छा करके, गुरु के गुण गाते।
भाव सहित वंदन करने को, चरणों में जाते।।

गुरु चरणों की भक्ति जग में, होती सुख दानी।
गुणियों ने आचार्य भक्ति शुभ, इसी तरह मानी।।11।।

बहुश्रुत (उपाध्याय) भक्ति भावना

ग्यारह अंग पूर्व चौदह के, होते जो ज्ञाता।
सम्यक् दर्शन ज्ञान के गुरुवर, होते हैं दाता।।
संतों में जो श्रेष्ठ कहे हैं, समता के धारी।
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, ऋषिवर अनगारी।।
करते हैं उपदेश धर्म का, जो मंगलकारी।
संत दिगम्बर और निरम्बर, नीरस आहारी।।
उपाध्याय को जग भोगों से, पूर्ण विरक्ति है।
भाव सहित गुण गाना उनके, बहुश्रुत भक्ति है।।12।।

प्रवचन भक्ति भावना

द्रव्य भाव श्रुत के भावों में, तत्पर जो रहते।
घोर तपस्या करने वाले, परिषह भी सहते।।
चेतन का अनुभव जो करते, निर्मल चित्धारी।
चित् को निर्मल करने वाली, वाणी मनहारी।।
सप्त तत्व झंकृत होते हैं, जिनवाणी द्वारा।
दिव्य देशना निःसृत होती, जैसे जलधारा।।
जिस वाणी से जागृत होवे, चेतन शक्ति है।
'विशद' ज्ञान में वर्णित पावन, प्रवचन भक्ति है।।13।।

आवश्यकापरिहाणी भावना

नहीं कभी सत् कर्म किया है, जीवन व्यर्थ गया।
भूले हैं कर्त्तव्य स्वयं के, आती बड़ी दया।।
श्रावक के गुण क्या होते हैं, जाने नहीं कभी।
पाप व्यसन जो होते जग में, करते रहे सभी।।

होते क्या कर्त्तव्य हमारे, उनको पाना है।
व्रत संयम से जीवन अपना, हमें सजाना है।।
कर्त्तव्यों के पालन हेतु, भावों से भरना।
आवश्यकऽपरिहार भावना, सम्पूरण करना।।14।।

मार्ग प्रभावना भावना

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण यह, सम्यक् धर्म कहा।
काल अनादी से यह बन्धु, मोक्ष का मार्ग रहा।।
मोक्ष मार्ग पर आगे चलकर, और चलाना है।
मंजिल को जब तक न पाया, बढ़ते जाना है।।
महिमा अगम है जिन शासन की, कैसे उसे कहें।
संयम तप श्रद्धा भक्ति में, हरपल मगन रहें।।
मोक्ष मार्ग औ जैन धर्म की, महिमा जो गाई।
पथ प्रभावना सत् संतों ने, जग में फैलाई।।15।।

प्रवचन वत्सलत्व भावना

गाय का ज्यों बछड़े के प्रति, स्नेह अटल होता।
काय वचन और मन से शुभ, अनुराग विमल होता।।
स्वार्थ रहित साधर्मी जन से, जो अनुराग रहा।
श्री जिनेन्द्र ने जैनागम में, ये वात्सल्य कहा।।
द्वेष भाव के द्वारा हमने, कितने कष्ट सहे।
मद माया की लपटों में हम, जलते सदा रहे।।
सदियाँ गुजर गयीं हैं लेकिन, धर्म नहीं पाया।
चेतन की यह भूल रही, अरु रही मोह माया।।16।।

दोहा – **शब्द अर्थ की भूल को, पढ़ना सुधी सुधार।**
पंच परम गुरु के चरण, वंदन बारम्बार।।

इत्याशीर्वाद : ।

बारह भावना

(मंगतरायजी कृत)

दोहा–छंद

बंदूँ श्री अरहंत पद, वीतराग विज्ञान।
वरणूँ बारह भावना, जग जीवन हित जान।।1।।

(विष्णुपद छन्द)

कहाँ गये चक्री जिन जीता, भरतखण्ड सारा।
कहाँ गये वह राम–अरु–लक्ष्मण, जिन रावण मारा।।
कहाँ कृष्ण रूक्मिणी सतभामा, अरु संपति सगरी।
कहाँ गये वह रंगमहल अरु, सुवरन की नगरी।।2।।

नहीं रहे वह लोभी कौरव, जूझ मरे रन में।
गये राज तज पांडव वन को, अग्नि लगी तन में।।
मोह–नींद से उठ रे चेतन !, तुझे जगावन को।
हो दयाल उपदेश करैं गुरु, बारह भावन को।।3।।

1. अथिर (अनित्य) भावना

सूरज चाँद छिपै निकलै ऋतु, फिर फिर कर आवै।
प्यारी आयु ऐसी बीतै, पता नहीं पावै।।
पर्वत–पतित–नदी–सरिता–जल बहकर नहिं हटता।
स्वास चलत यों घटै काठ ज्यों, आरे सों कटता।।4।।

ओस–बूंद ज्यों गलै धूप में, वा अंजुलि पानी।
छिन छिन यौवन छीन होत है, क्या समझै प्रानी।।
इंद्रजाल आकाश नगर, सम जग–संपति सारी।
अथिर रूप संसार विचारो, सब नर अरु नारी।।5।।

2. अशरण भावना

काल सिंह ने मृग चेतन को, घेरा भव वन में।
नहीं बचावन हारा कोई, यों समझो मन में।।
मंत्र यंत्र सेना धन संपत्ति, राज पाट छूटे।
वश नहि चलता काल लुटेरा, काय नगरि लूटे।।6।।

चक्ररत्न हलधर सा भाई, काम नहीं आया।
एक तीर के लगत कृष्ण की, विनश गई काया।।
देव धर्म गुरु शरण जगत में, और नहीं कोई।
भ्रम से फिरे भटकता चेतन, यूंही उमर खोई।।7।।

3. संसार भावना

जनम-मरन अरु जरा-रोग से, सदा दुःखी रहता।
द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव भव, परिवर्तन सहता।।
छेदन भेदन नरक पशुगति, वध बंधन सहना।
राग-उदय से दुःख सुरगति में, कहाँ सुखी रहना।।8।।

भोगि पुण्यफल हो इकइंद्री, क्या इसमें लाली।
कुतवाली दिनचार वही फिर, खुरपा अरु जाली।।
मानुष-जन्म अनेक विपतिमय, कहीं न सुख देखा।
पंचमगति सुख मिले शुभाशुभ, का मेटो लेखा।।9।।

4. एकत्व भावना

जन्मे मरे अकेला चेतन, सुख-दुःख का भोगी।
और किसी का क्या इक दिन यह, देह जुदी होगी।।
कमला चलत न पैंड जाय, मरघट तक परिवारा।
अपने अपने सुख को रोवैं, पिता पुत्र दारा।।10।।

ज्यों मेले में पंथीजन मिलि, नेह फिरैं धरते।
ज्यों तरुवर पै रैन बसेरा, पंछी आ करते।।

कोस कोई दो कोस कोई उड़, फिर थक-थक हारै।
जाय अकेला हंस संग में, कोई न पर मारै।।11।।

5. अन्यत्व भावना

मोह-रूप मृग-तृष्णा जग में, मिथ्या जल चमके।
मृग चेतन नित भ्रम में उठ, उठ दौड़ैं थक थक के।।
जल नहिं पावै प्राण गमावै, भटक भटक मरता।
वस्तु पराई मानै अपनी, भेद नहीं करता।।12।।

तू चेतन अरु देह अचेतन, यह जड़ तू ज्ञानी।
मिले-अनादि यतन तैं बिछुड़ै, ज्यों पय अरु पानी।।
रूप तुम्हारा सबसों न्यारा, भेद ज्ञान करना।
जोलों पौरुष थकै न तोलों, उद्यम सौं चरना।।13।।

6. अशुचि भावना

तू नित पोखै यह सूखे ज्यों, धोवै त्यों मैली।
निश दिन करै उपाय देह का, रोग-दशा फैली।।
मात-पिता-रज-वीरज मिलकर, बनी देह तेरी।
मांस हाड़ नश लहू राध की, प्रगट व्याधि घेरी।।14।।

काना पौंड़ा पड़ा हाथ यह चूसै तो रोवै।
फलै अनंत जु धर्म ध्यान की, भूमि-विषै बोवै।।
केसर चंदन पुष्प सुगन्धित, वस्तु देख सारी।
देह परसते होय अपावन, निशदिन मल जारी।।15।।

7. आस्रव भावना

ज्यों सर-जल आवत मोरी त्यों, आस्रव कर्मन को।
दर्वित जीव प्रदेश गहै जब, पुद्गल भरमन को।।
भावित आस्रवभाव शुभाशुभ, निशदिन चेतन को।
पाप-पुण्य के दोनों करता, कारण बंधन को।।16।।

पन–मिथ्यात योग–पंद्रह द्वादश–अविरत जानो।
पंचरु बीस कषाय मिले सब, सत्तावन मानो।।
मोह–भाव की ममता टारै, पर परणति खोते।
करै मोख का यतन निरास्रव, ज्ञानीजन होते।।17।।

8. संवर भावना

ज्यों मोरी में डाट लगावै, तब जल रुक जाता।
त्यों आस्रव को रोके संवर, क्यों नहिं मन लाता।।
पंच महाव्रत समिति गुप्तिकर, वचन काय मन को।
दशविध–धर्म परीषह–बाईस, बारह भावन को।।18।।

यह सब भाव सतावन मिलकर, आस्रव को खोते।
स्वप्न दशा से जागो चेतन, कहाँ पड़े सोते।।
भाव शुभाशुभ रहित शुद्ध, भावन संवर भावै।
डाँट लगत यह नाव पड़ी, मझधार पार जावै।।19।।

9. निर्जरा भावना

ज्यों सरवर जल रुका सूखता, तपन पड़े भारी।
संवर रोके कर्म निर्जरा, है सोखनहारी।।
उदय–भोग सविपाक–समय, पक जाय आम डाली।
दूजी है अविपाक पकावै, पाल विषै माली।।20।।

पहली सबके होय नहीं, कुछ सरै काम तेरा।
दूजी करै जु उद्यम करकै, मिटे जगत फेरा।।
संवर सहित करो तप प्रानी, मिलै मुकत रानी।
इस दुल्हन की यही सहेली, जानै सब ज्ञानी।।21।।

10. लोक भावना

लोक अलोक अकाश माहिं थिर, निराधार जानो।
पुरुषरूप–कर–कटी भये, षट्, द्रव्यनसों मानो।।

इसका कोई न करता हरता, अमिट अनादी है।
जीव रु पुद्गल नाचै यामैं, कर्म उपाधी है।।22।।

पाप पुण्य सों जीव जगत में, नित सुख–दुःख भरता।
अपनी करनी आप भरै सिर, औरन के धरता।।
मोहकर्म को नाश, मेटकर सब जग की आशा।
निज पद में थिर होय लोक के, शीश करो बासा।।23।।

11. बोधि–दुर्लभ भावना

दुर्लभ है निगोद से थावर, अरु त्रसगति पानी।
नर काया को सुरपति तरसे, सो दुर्लभ प्राणी।।
उत्तम देश सुसंगति दुर्लभ, श्रावककुल पाना।
दुर्लभ सम्यक् दुर्लभ संयम, पंचम गुण ठाना।।24।।

दुर्लभ रत्नत्रय आराधन, दीक्षा का धरना।
दुर्लभ मुनिवर के व्रत पालन, शुद्धभाव करना।।
दुर्लभ से दुर्लभ है चेतन, बोधिज्ञान पावै।
पाकर केवलज्ञान नहीं फिर, इस भव में आवै।।25।।

12. धर्म भावना

एकान्तवाद के धारी जग में, दर्शन बहुतेरे,
कल्पित नाना युक्ति बनाकर, ज्ञान हरें मेरे।
हो सुछन्द सब पाप करें सिर, करता के लावैं,
कोई छिनक कोई करता से, जग में भटकावैं।।26।।

वीतराग सर्वज्ञ दोष बिन, श्रीजिन की वानी।
सप्त तत्त्व का वर्णन जामें, सबको सुखदानी।।
इनका चिंतवन बार–बार कर, श्रद्धा उर धरना।
'मंगत' इसी जतन तैं इकदिन, भव–सागर–तरना।।27।।

इत्याशीर्वादः।

वैराग्य भावना

(कविवर भूधरदास कृत)

दोहा – **बीज राख फल भोगवै, ज्यों किसान जग माहिं।**
त्यों चक्री नृप सुख करैं, धर्म विसारैं नाहिं।।1।।

(जोगीरास वा नरेन्द्र छन्द)

इह विधि राज करै नरनायक, भोगे पुण्य विशालो।
सुखसागर में रमत निरंतर, जात न जान्यो कालो।।
एक दिवस शुभ कर्मसंजोगे, क्षेमंकर मुनि वंदे।
देख श्री गुरु के पद पंकज, लोचन अलि आनन्दे।।2।।

तीन प्रदक्षिण दे शिर नायो, कर पूजा थुति कीनी।
साधु–समीप विनय कर बैठ्यो, चरनन में दृठि दीनी।।
गुरु उपदेश्यो धर्म–शिरोमणि, सुन राजा वैरागे।
राज रमा वनितादिक जे रस, ते रस बेरस लागे।।3।।

मुनि सूरज कथनी किरणावलि लगत भरम बुधि भागी।
भव तन–भोग–स्वरूप विचारयो, परम धरम अनुरागी।।
इह संसार महावन भीतर, भरमते और न आवै।
जामन मरन जरा दो दाझै जीव महादुख पावै।।4।।

कबहूँ जाय नरक थिति भुंजै, छेदन भेदन भारी।
कबहूँ पशु परजाय धरै तहँ, बध बंधन भयकारी।।
सुरगति में परसंपत्ति देखे राग उदय दुख होई।
मानुषयोनि अनेक विपत्तिमय, सर्वसुखी नहिं कोई।।5।।

कोई इष्ट वियोगी विलखै, कोई अनिष्ट संयोगी।
कोई दीन–दरिद्री विलखे, कोई तन के रोगी।।

किसही घर कलिहारी नारी, कै बैरी सम भाई।
किसही के दुःख बाहिर दीखै, किसकी उर दुचिताई।।6।।

कोई पुत्र बिना नित झूरै, होय मरै तब रोवै।
खोटी संततिसों दुख उपजै, क्यों प्रानी सुख सोवै।।
पुण्य उदय जिनके तिनके भी नाहिं सदा सुख साता।
यह जगवास जथारथ दीखै, सब दीखै दुःख दाता।।7।।

जो संसार विषै सुख होता, तीर्थंकर क्यों त्यागै।
काहे को शिव साधन करते, संजमसो अनुरागै।।
देह अपावन अथिर घिनावन, यामें सार न कोई।
सागर के जल सों शुचि कीजे, तो भी शुद्ध न होई।।8।।

सात कुधातु भरी मल–मूरत, चर्म लपेटी सोहै।
अंतर देखत या सम जग में, अवर अपावन को है।।
नव–मल–द्वार स्रवै निशिवासर, नाम लिये घिन आवै।
व्याधि–उपाधि अनेक जहाँ तहँ, कौन सुधी सुख पावै।।9।।

पोषत तो दुःख दोष करै अति, सोषत सुख उपजावै।
दुर्जन–देह–स्वभाव बराबर, मूरख प्रीति बढ़ावै।।
राचन–जोग स्वरूप न याको, विरचन–जोग सही है।
यह तन पाय महातप कीजै, यामें सार यही है।।10।।

भोग बुरे भव रोग बढ़ावैं, बैरी हैं जग जीके।
बेरस होय विपाक समय अति, सेवत लागैं नीके।।
वज्र–अगनि विष से विषधर से, ये अधिके दुःखदाई।
धर्म–रतन के चोर चपल अति, दुर्गति–पंथ सहाई।।11।।

मोह–उदय यह जीव अज्ञानी, भोग भले कर जानै।
ज्यों कोई जन खाय धतूरा, सो सब कंचन माने।।
ज्यों–ज्यों भोग–संजोग मनोहर, मन वांछित जन पावैं।
तृष्णा नागिन त्यों–त्यों डंकै, लहर जहर की आवे।।12।।

मैं चक्री पद पाय निरन्तर, भोगे–भोग घनेरे।
तौ भी तनक भये नहिं पूरन, भोग मनोरथ मेरे।।
राजसमाज महा अघ–कारण, बैर बढ़ावनहारा।
वेश्या सम लछमी अति चंचल, याका कौन पत्यारा।।13।।

मोह महा–रिपु बैर विचार्‌यो जग–जिय संकट डारे।
तन–कारागृह वनिता बेड़ी, परिजन जन रखवारे।।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण तप, ये जियके हितकारी।
ये ही सार असार और सब, यह चक्री चितधारी।।14।।

छोड़े चौदह रत्न नवों निधि, अरु छोड़े संग साथी।
कोड़ि अठारह घोड़े छोड़े, चौरासी लख हाथी।।
इत्यादिक संपत्ति बहुतेरी, जीरण–तृण–सम त्यागी।
नीति विचार नियोगी सुत कों, राज दियो बड़भागी।।15।।

होय निशल्य अनेक नृपति संग, भूषण वसन उतारे।
श्री गुरु चरण धरी जिनमुद्रा, पंच महाव्रत धारे।।
धनि यह समझ सुबुद्धि जगोत्तम, धनि यह धीरज धारी।
ऐसी संपत्ति छोड़ बसे वन, तिन पद धोक हमारी।।16।।

दोहा – परिग्रह पोठ उतार सब, लीनो चारित पंथ।
निज स्वभाव में थिर भये, वज्रनाभि निरग्रंथ।।

।। इतिश्री वज्रनाभि चक्रवर्ती की वैराग्य भावना ।।

मेरी भावना

जिसने राग–द्वेष कामादिक जीते सब जग जान लिया,
सब जीवों को मोक्षमार्ग का निस्पृह हो उपदेश दिया।
बुद्ध, वीर, जिन, हरि, हर, ब्रह्मा या उसको स्वाधीन कहो,
भक्तिभाव से प्रेरित हो यह चित्त उसी में लीन रहो।।1।।

विषयों की आशा नहिं जिनके साम्यभाव धन रखते हैं,
निज–पर के हित–साधन में जो निश–दिन तत्पर रहते हैं।
स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या बिना खेद जो करते हैं,
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के दुःख समूह को हरते हैं।।2।।

रहे सदा सत्संग उन्हीं का ध्यान उन्हीं का नित्य रहे,
उन ही जैसी चर्या में यह चित्त सदा अनुरक्त रहे,
नहीं सताऊँ किसी जीव को झूठ कभी नहिं कहा करूँ,
परधन वनिता पर न लुभाऊँ संतोषामृत पिया करूँ।।3।।

अहंकार का भाव न रक्खूँ नहीं किसी पर क्रोध करूँ,
देख दूसरों की बढ़ती को कभी न ईर्ष्या–भाव धरूँ।
रहे भावना ऐसी मेरी सरल सत्य व्यवहार करूँ,
बने जहाँ तक इस जीवन में औरों का उपकार करूँ।।4।।

मैत्रीभाव जगत में मेरा सब जीवों से नित्य रहे,
दीन–दुःखी जीवों पर मेरे उर से करुणा–स्रोत बहे।
दुर्जन–क्रूर–कुमार्गरतों पर क्षोभ नहीं मुझको आवे,
साम्य भाव रक्खूँ मैं उन पर ऐसी परिणति हो जावे।।5।।

गुणीजनों को देख हृदय में मेरे प्रेम उमड़ आवे,
बने जहाँ तक उनकी सेवा करके यह मन सुख पावे।

होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं द्रोह न मेरे उर आवे,
गुण-ग्रहण का भाव रहे नित दृष्टि न दोषों पर जावे।।6।।

कोई बुरा कहो या अच्छा लक्ष्मी आवे या जावे,
लाखों वर्षों तक जीऊँ या मृत्यु आज ही आ जावे।
अथवा कोई कैसा भी भय या लालच देने आवे,
तो भी न्याय मार्ग से मेरा कभी न पद डिगने पावे।।7।।

होकर सुख में मग्न न फूले दुःख में कभी न घबरावे,
पर्वत-नदी श्मशान भयानक अटवी से नहिं भय खावे।
रहे अडोल अकम्प निरन्तर यह मन दृढ़तर बन जावे,
इष्ट वियोग अनिष्ट योग में सहनशीलता दिखलावे।।8।।

सुखी रहें सब जीव जगत के कोई कभी न घबरावे,
बैर-पाप अभिमान छोड़ जग नित्य नये मंगल गावे।
घर-घर चर्चा रहे धर्म की दुष्कृत दुष्कर हो जावें,
ज्ञानचरित उन्नतकर अपना मनुज जन्म-फल सब पावें।।9।।

इति भीत व्यापे नहिं जग में वृष्टि समय पर हुआ करे,
धर्मनिष्ठ होकर राजा भी न्याय प्रजा का किया करे।
रोग, मरी, दुर्भिक्ष न फैले प्रजा शान्ति से जिया करे,
परम अहिंसा धर्म जगत में फैल सर्वहित किया करे।।10।।

फैले प्रेम परस्पर जग में मोह दूर ही रहा करे,
अप्रिय-कटुक कठोर शब्द नहिं कोई मुख से कहा करे।
बन कर सब 'युग-वीर' हृदय से देशोन्नति रत रहा करें,
वस्तुस्वरूप विचार खुशी से सब दुःख संकट सहा करें।।11।।

इत्याशीर्वादः।

श्रावक प्रतिक्रमण

समता सर्वभूतेषु, संयमः शुभभावना।
आर्तरौद्र परित्यागः, तद्धि प्रतिक्रमणं मतम्।।

सब जीवों पर साम्यभाव धारण करके शुभ भावनापूर्वक संयम पालते हुए, आर्त-रौद्र का त्याग प्रतिक्रमण कहलाता है।

हे जिनेन्द्र ! हे देवाधिदेव ! हे वीतरागी सर्वज्ञ हितोपदेशी अरिहन्त प्रभु ! मैं पापों के प्रक्षालन के लिए, पापों से मुक्त होने के लिए, आत्म उत्थान के लिए, आत्म जागरण के लिए प्रतिक्रमण करता हूँ। (इस प्रकार प्रतिज्ञा करके एक आसन से बैठकर प्रतिक्रमण प्रारम्भ करें।)

पापी, दुरात्मा, जड़बुद्धि, मायावी, लोभी और राग-द्वेष से मलिन चित्तवाले मैंने जो दुष्कर्म किया है, उसे हे तीन लोक के अधिपति ! हे जिनेन्द्र देव ! निरन्तर समीचीन मार्ग पर चलने की इच्छा करने वाला मैं आज आपके पादमूल में निन्दापूर्वक उसका त्याग करता हूँ।

हाय ! मैंने शरीर से दुष्ट कार्य किया है, हाय ! मैंने मन से दुष्ट विचार किया है, हाय ! मैंने मुख से दुष्ट वचन बोला है। उसके लिए मैं पश्चात्ताप करता हुआ भीतर ही भीतर जल रहा हूँ।

निन्दा और गर्हा से युक्त होकर द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावपूर्वक किये गये अपराधों की शुद्धि के लिए मैं मन, वचन और काय से प्रतिक्रमण करता हूँ।

समस्त संसारी जीवों की सर्व योनियाँ (जातियाँ) चौरासी लाख हैं एवं सर्व संसारी जीवों के सर्व कुल एक सौ साढ़े निन्यानवे (1991/2) लाख करोड़ होते हैं, इनमें उपस्थित जीवों की विराधना की हो एवं इनके प्रति होने वाले राग-द्वेष से जो पाप लगे हों। **तस्स मिच्छा मे दुक्कडं** (तत्सम्बन्धी मेरा दुष्कृत मिथ्या हो)।

जो एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय तथा पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक और त्रसकायिक जीव हैं, इनका जो उत्तापन, परितापन, विराधन और उपघात किया हो, कराया हो और करने वाले की अनुमोदना की है – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

सूक्ष्म, बादर, पर्याप्त, निर्वृत्यपर्याप्त और लब्ध्यपर्याप्त जीवों में से किसी भी जीव की विराधना की हो – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

एकांत, विपरीत, संशय, वैनयिक और अज्ञान – इन पांच प्रकार के मिथ्यामार्ग और उनके सेवकों की मन–वचन से प्रशंसा की हो– **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

जिनदर्शन, जलगालन, रात्रिभोजन त्याग, पाँच उदुम्बर त्याग, मद्य त्याग, मांस त्याग मधु त्याग और जीवदया पालन – इन आठ श्रावक के मूलगुणों में अतिचार के द्वारा जो पाप लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हे भगवान ! मूलगुणों के अन्तर्गत जिनदर्शन व्रत पालन में प्रमाद किया हो, अविनय से दर्शन किया हो तथा दर्शन या पूजन करते समय मन, वचन, काय की शुद्धि नहीं रखी हो। जिनदर्शन व्रत पालन करते हुए जिनमार्ग में शंका की हो, शुभाचरण पालन कर संसार–सुख की वाञ्छा की हो, धर्मात्माओं के मलिन शरीर को देखकर ग्लानि की हो मिथ्यामार्ग और उसके सेवन करने वालों की मन से प्रशंसा की हो तथा मिथ्यामार्ग की वचन से स्तुति की हो, इत्यादि अतिचार अनाचार दोनों लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हे नाथ ! मूलगुणों के अन्तर्गत जलगालन व्रत पालन में प्रमाद किया हो, जल छानने के 48 मिनट बाद उसे फिर नहीं छानकर उसका उपयोग किया हो, प्रमाण से छोटे, इकहरे, मलिन, जीर्ण एवं सछिद्र वस्त्र से जल छाना हो। गर्म पानी की मर्यादा समाप्त हो जाने पर उसका

उपयोग किया हो, छानने से शेष बचे जल को और जीवानी को यथास्थान (कड़े वाली बाल्टी से कुओं में) न पहुँचाया हो उसे नाली आदि में डाल दिया हो तथा जीवानी की सुरक्षा में या पानी छानने की विधि में प्रमाद किया हो इत्यादि अनाचार मुझे लगे हों –**तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हे देवाधिदेव ! मूलगुणों के अन्तर्गत रात्रि भोजन त्याग व्रत में रात्रि के बने भोजन का, सूर्योदय से 48 मिनट के भीतर या सूर्यास्त के एक मुहूर्त पूर्व तथा औषधि के निमित्त रात्रि को रस, फल आदि का सेवन किया हो, कराया हो या करते हुए की अनुमोदना की हो, तज्जन्य अन्य भी अतिचार–अनाचार दोष लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हे करुणा के सागर ! मूलगुणों के अन्तर्गत पंच–उदुम्बर फल त्याग व्रत में सूखे अथवा औषधि निमित्त उदुम्बर फलों का, सर्व साधारण वनस्पति का, अदरक–मूली आदि अनन्तकायिक वनस्पति का, त्रस जीवों के आश्रयभूत वनस्पति का, बिना फाड़ किये सेमफली आदि एवं अनजाने फलों का सेवन किया हो, कराया हो या करने वालों की अनुमोदना की हो, इत्यादि अतिचार–अनाचार दोष लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हे दया के सागर ! मूलगुणों के अन्तर्गत मद्य त्याग व्रत में मर्यादा के बाहर का अचार, मुरब्बा आदि सर्व प्रकार के सन्धानों का, दो दिन व दो रात्रि व्यतीत हुए दही, छाछ एवं काँजी आदि आसवों एवं अर्कों का तथा भांग, नागफेन, धतूरा, पोस्त का छिलका, चरस और गांजा आदि नशीले पदार्थों का स्वयं सेवन किया हो, कराया हो या सेवन करने वालों की अनुमोदना की हो तथा अन्य और भी जो अतिचार–अनाचार जन्य दोष लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हे करुणा के सागर ! मूलगुणों के अन्तर्गत मांस त्याग व्रत में चमड़े के बेल्ट, पर्स, जूता–चप्पल, घड़ी का पट्टा आदि का स्पर्श हो गया हो या

चमड़े से आच्छादित अथवा स्पर्शित हींग, घी, तेल एवं जल आदि का, अशोधित भोजन का, जिसमें त्रस जीवों का संदेह हो ऐसे भोजन का, बिना छना हुआ अथवा विधिपूर्वक दुहरे छन्ने (वस्त्र) से नहीं छाना गया घी, दूध, तेल एवं जल आदि का, सड़े और घुने हुए अनाज आदि का, शोधनविधि से अनभिज्ञ साधर्मी या शोधन–विधि से अपरिचित विधर्मी के हाथ से तैयार हुए भोजन का, बासा भोजन का, रात्रि में बने भोजन का, चलित रस पदार्थों का, बिना दो फाड़ किये काजू, पुरानी मूंगफली, सेमफली एवं भिंडी आदि का और अमर्यादित दूध, दही तथा छाछ आदि पदार्थों का स्वयं सेवन किया हो, कराया हो या करते हुए की अनुमोदना की हो, तज्जन्य अन्य जो भी अतिचार–अनाचार दोष लगे हों– **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हे परमपिता परमात्मा ! मूलगुणों के अन्तर्गत मधुत्याग व्रत में औषधि के निमित्त मधु का, फूलों के रसों का एवं गुलकन्द आदि का स्वयं सेवन किया हो, कराया हो, करते हुए की अनुमोदना की हो, तज्जन्य अन्य भी अतिचार–अनाचार दोष लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हे नित्य निरंजन देव ! मूलगुणों के अन्तर्गत जीवदया व्रत पालन में प्रमाद किया हो, अज्ञान रखा हो, उपेक्षा की हो, बिना प्रयोजन जीवों को सताया हो तथा अंगोपांग छेदन किये हों, कराये हों या अनुमोदना की हो, तज्ञन्य जो भी दोष लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

जुआ, मांस, मदिरा, शिकार, वेश्यागमन, चोरी और परस्त्री सेवन– इन सप्तव्यसन सेवन में जो पाप लगा हो – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

देव दर्शन–पूजन, साधु उपासना–वैयावृत्ति, स्वाध्याय, संयम पालन, इच्छायें सीमित करना और अर्जित संपत्ति का सदुपयोग (दान देना) इन षडावश्यक पालन में अतिचारपूर्वक जो दोष लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

इष्टवियोग, अनिष्ट संयोग, पीड़ा चिंतन और निदान – ये चार आर्तध्यान। हिंसानंद, मृषानंद, चौर्यानंद और परिग्रहानंद – ये चार रौद्रध्यान द्वारा जो पाप लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

राजकथा, चोरकथा, स्त्रीकथा और भोजनकथा करने से जो पाप लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

जीवों को सताने वाला दुष्ट मन, दुष्ट वचन और दुष्ट काय – ये तीन दण्ड, माया, मिथ्या और निदान तीन शल्य और शब्द गारव, ऋद्धि गारव और सात गारव द्वारा जो पाप लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

मिथ्यादर्शन, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग – इन पाँच आस्रवों द्वारा जो पाप बन्ध हुआ हो – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

आहार, भय, मैथुन और परिग्रह – इन चार संज्ञाओं के द्वारा जो पाप बन्ध हुआ हो – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

इहलोकभय, परलोकभय, मरणभय, वेदनाभय, अगुप्तिभय, अरक्षाभय (अत्राणभय) और अकस्मात् सप्त भयों के द्वारा जो पापबन्ध हुआ हो– **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।** (नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

स्थूल हिंसा विरति व्रत का पालन करते हुए जीवों को मारा हो, बांधा हो, अंगोपांग छेदे हों, अधिक बोझ लादा हो एवं अन्नपान का निरोध किया हो, इत्यादि अनेक दोष कृत–कारित–अनुमोदना से किये हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

स्थूल असत्य विरति व्रत का पालन करते हुए मिथ्योपदेश देने से, एकान्त में कही हुई बात को प्रगट कर देने से, झूठा लेख लिखने से तथा किसी भी चेष्टा से अभिप्राय समझ कर भेद प्रकट कर देने से एवं पर का धन अपहरण करने से जो दोष मन–वचन–काय एवं कृत–कारित–अनुमोदना से लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

स्थूल चौर्य विरति व्रत के पालन करने में चोर द्वारा चुराया हुआ द्रव्य ग्रहण किया हो, राज्य के विरुद्ध कार्य किया हो, धरोहर हरण करने के भाव किये हों, तौलने के बाँट कमती या बढ़ती रखे हों और अधिक कीमती वस्तु में अल्प कीमती वस्तु मिलाकर बेची हो एवं मन, वचन, काय एवं कृत–कारित–अनुमोदना से, चोरी का प्रयोग बतलाने से जो दोष लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

स्थूल अब्रह्म विरति व्रत पालन करने में व्यभिचारिणी स्त्री के साथ आने–जाने का व्यवहार रखा हो, कुमारी, विधवा एवं सधवा आदि अपरिगृहीत स्त्रियों के साथ आने–जाने या लेन–देन का व्यवहार रखा हो, काम सेवन के अंगों को छोड़कर दूसरे अंगों से कुचेष्टाएँ की हों, काम के तीव्र वेग से वीभत्स विचार बने हों और मन, वचन, काय और कृत–कारित–अनुमोदना से अन्य के पुत्र–पुत्रियों का विवाह किया हो, इस प्रकार जो भी दोष लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

स्थूल परिग्रह–परिमाण व्रत में मन, वचन, काय एवं कृत–कारित–अनुमोदना से जमीन और मकान आदि के प्रमाण का उल्लंघन किया हो, गाय, बैल आदि धन, अनाज आदि धान्य, दासी–दास, चांदी–सोना, वस्त्र एवं बर्तन आदि के प्रमाण का उल्लंघन किया हो, तज्जन्य जो भी दोष लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

दिग्व्रत, देशव्रत, अनर्थदण्ड विरति व्रत – ये तीन गुणव्रत और भोग परिमाण व्रत,परिभोग परिमाणव्रत, अतिथिसंविभाग व्रत, समाधि मरणव्रत, ये चार शिक्षाव्रत रूप बारह व्रतों में जो दोष लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

पाँच इन्द्रियों और मन को वश में न करने से जो पाप लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

मोह के वशीभूत होकर अनेक प्रकार के उत्तमोत्तम् वस्त्र एवं स्त्रियों को आकर्षित करने वाला शरीर का शृंगार किया हो, राग के उद्रेक से युक्त हँसी में अशिष्ट वचनों का प्रयोग किया हो और परस्पर प्रीति से रहने वालों के बीच में द्वेष किया हो, तज्जन्य जो दोष लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

तप और स्वाध्याय से हीन असम्बद्ध प्रलाप करने में, अन्यथा पढ़ने–पढ़ाने से एवं अन्यथा ग्रहण (सुनने) करने से जो दोष लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

मुनि, आर्यिका, श्रावक और श्राविका की किसी भी प्रकार से निन्दा की हो,कराई हो,सुनी हो,सुनाई हो इससे जो पाप लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

साधुओं वा साधर्मियों से कटु वचन बोला हो एवं आहार दान देने में प्रमाद करने से जो दोष लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

देव–शास्त्र–गुरु की अविनय एवं आसादना से जो पाप लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

पाश्चात्य वेशभूषा का उपयोग कर, टी.वी. आदि देखकर एवं उपन्यास आदि पढ़कर शील में जो पाप लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

उच्च कुलों को गर्हित कुल बनाने में कृत–कारित–अनुमोदना से सहयोग देने में जो पाप लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

चलने–फिरने, शरीर को हिलने–हिलाने, उठने–बैठाने, छींकने–खांसने, सोने, जम्हाई लेने और मार्ग चलने–चलाने में देखे, बिना देखे तथा जाने–अनजाने में जो दोष लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

किसी भी जीव को मैंने दबा दिया हो, कुचल दिया हो, घुमा दिया हो, भयभीत कर दिया हो, त्रास दिया हो, वेदना पहुँचाई हो, छेदन–

भेदन कर दिया हो अथवा अन्य किसी प्रकार से भी कष्ट पहुँचाया हो– **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

जाने–अनजाने में और जो दोष लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़।**

हा दुट्ठकयं हा दुट्ठचिंतियं, भासियं च हा दुट्ठं।
अन्तो अन्तो डज्झमि पच्छत्तावेण वेयंतो ।।

हाय–हाय! मैंने दुष्टकर्म किए, मैंने दुष्ट कर्मों का बार–बार चिन्तवन किया, मैंने दुष्ट मर्म–भेदक वचन कहे– इस प्रकार मन, वचन और काय की दुष्टता से मैंने अत्यन्त कुत्सित कर्म किये। उन कर्मों का अब मुझे पश्चात्ताप है।

हे प्रभु ! मेरा किसी भी जीव के प्रति राग नहीं है, द्वेष नहीं है, बैर नहीं है तथा क्रोध, मान, माया, लोभ नहीं है, अपितु सर्व जीवों के प्रति उत्तम क्षमा है।

हे प्रभु ! जब तक मोक्षपद की प्राप्ति न हो तब तक भव–भव में मुझे शास्त्रों के पठन–पाठन का अभ्यास, जिनेन्द्र पूजा, निरन्तर श्रेष्ठ पुरुषों की संगति,सच्चरित्र सम्पन्न पुरुषों के गुणों की चर्चा, दूसरों के दोष कहने में मौन, सभी प्राणियों के प्रति मैत्री और हितकारी वचन एवं आत्मकल्याण की भावना (प्रतीति) ये सब वस्तुएँ प्राप्त होती रहें।

हे जिनेन्द्र देव ! मुझे जब तक मोक्ष की प्राप्ति न हो, तब तक आपके चरण मेरे हृदय में और मेरा हृदय आपके चरणों में लीन रहे।

हे भगवन् ! मेरे दुःखों का क्षय हो, कर्मों का नाश हो, रत्नत्रय की प्राप्ति हो, शुभगति हो, सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हो, समाधिमरण हो और श्री जिनेन्द्र के गुणों की प्राप्ति हो – ऐसी मेरी भावना है, मेरी भावना है, ऐसी मेरी भावना है।

इत्याशीर्वादः (इसके बाद क्षमा वन्दना बोलें)

क्षमा वंदना

क्षमा करना क्षमा करना, क्षमा शांति का दाता है।
क्षमा के भाव से प्राणी, 'विशद' मुक्ति को पाता है।

क्षमा करता सकल जन को, क्षमा करना सभी मुझको।
अभी छदमस्थ हूँ मैं भी, नहीं है ज्ञान कुछ मुझको।
रहे मैत्री सभी जन से, किसी से बैर न मेरा।
हृदय में भावना मेरी, किसी से हो नहीं फेरा।
क्षमा करना क्षमा करना, क्षमा ही जग का त्राता है।
क्षमा के भाव से प्राणी, 'विशद' मुक्ति को पाता है ।।1 ।।

पाप का कर सकें छेदन, रहे यह भाव में वेदन।
क्षमा उनसे भी चाहूँगा, मेरे हाथों हुए भेदन।
त्याग दूँ दोष इस जग के, यही है भावना मेरी।
पटे खाई हृदय की जो, बनी हो पूर्व से तेरी।
क्षमा करना क्षमा करना, क्षमा समता को लाता है।
क्षमा के भाव से प्राणी, 'विशद' मुक्ति को पाता है।।2 ।।

दया मय भाव हो जावें, हृदय करुणा से भर जावे।
रहे भावों में शीतलता, कभी भी क्रोध न आवे।
क्षमा की तरणी बह जावे, सदा मैं भाव करता हूँ।
क्षमा भूषण है तन मन का, उसे मैं आप धरता हूँ।
क्षमा करना क्षमा करना, क्षमा उर में समाता है।
क्षमा के भाव से प्राणी,'विशद' मुक्ति को पाता है।।3 ।।

कभी जाने या अनजाने, हुए हों दोष जो मेरे।
क्षमा हमको सभी करना, बड़े उपकार हों तेरे।
वीर का धर्म ये कहता, हृदय में शांति तुम धरना।
क्षमा धारण 'विशद' दिल में कि अर्पण प्राण तुम करना।
क्षमा करना क्षमा करना, क्षमा को धर्म गाता है।
क्षमा के भाव से प्राणी,'विशद' मुक्ति को पाता है।।4 ।।

।। इति समाप्तम् ।।

तत्त्वार्थसूत्रम्

(श्री उमास्वामी आचार्य विरिचतम्)

(अनुष्टुप् छन्द)

मोक्ष-मार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्मभू-भृताम्।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां, वन्दे तद्गुण-लब्धये।।

(आर्यगीतिका)

त्रैकाल्यं द्रव्यषट्कं, नवपदसहितं जीव षट्कायलेश्याः
पञ्चान्ये चास्तिकाया, व्रतसमिति-गतिज्ञानचारित्रभेदाः।
इत्येतन्मोक्षमूलं, त्रिभुवन-महितैः प्रोक्तमर्हद्भिरीशैः
प्रत्येति श्रद्धधाति, स्पृशति च मतिमान्, यः स वै शुद्धदृष्टिः।।1।।

सिद्धे जयप्पसिद्धे, चउव्विहाराहणाफलं पत्ते।
वंदित्ता अरहंते, वोच्छं आराहणा कमसो।।2।।

उज्जोवणमुज्जवणं, णिव्वहणं साहणं च णिच्छरणं।
दंसणणाणचरित्तं, तवाणमाराहणा भणिया।।3।।

प्रथम अध्याय

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः।।1।। तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्।।2।। तन्निसर्गादधिगमाद् वा।।3।। जीवाजीवास्रवबन्धसंवरनिर्जरा मोक्षास्तत्त्वम्।।4।। नाम-स्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः।।5।। प्रमाणनयैरधिगमः।।6।। निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरणस्थितिविधानतः।।7।। सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शन-कालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च।।8।। मतिश्रुतावधिमनः पर्ययकेवलानि ज्ञानम्।।9।। तत्प्रमाणे।।10।। आद्ये परोक्षम्।।11।। प्रत्यक्षमन्यत्।।12।। मतिः स्मृतिः संज्ञा

चिन्ताभिनिबोध इत्यनर्थान्तरम्।।13।। तदिन्द्रियानिन्द्रिय-निमित्तम्।।14।। अवग्रहेहावायधारणाः।।15।। बहुबहुविधक्षिप्रानिःसृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणाम्।।16।। अर्थस्य।।17।। व्यञ्जन-स्यावग्रहः।।18।। न चक्षुरनिन्द्रियाभ्याम्।।19।। श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम्।।20।। भवप्रत्ययोऽवधिर्देव नारकाणाम्।।21।। क्षयोपशमनिमित्तः षड् विकल्पः शेषाणाम्।।22।। ऋजुविपुलमती मनःपर्ययः।।23।। विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः।।24।। विशुद्धिक्षेत्र - स्वामिविषयेभ्योऽवधिमनः पर्यययोः।।25।। मतिश्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु।।26।। रूपिष्ववधेः।।27।। तदनन्तभागे मनः पर्ययस्य।।28।। सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य।।29।। एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः।।30।। मतिश्रुतावधयो विपर्ययश्च।।31।।सदसतोर-विशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत्।।32।। नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्द-समभिरुढैवंभूतानयाः।।33।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रे (मोक्षशास्त्रे) प्रथमोऽध्यायः।।1।।

द्वितीय अध्याय

औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्व-मौदयिकपारिणामिकौ च।।1।। द्विनवाष्टादशैकविंशतित्रिभेदा यथाक्रमम्।।2।। सम्यक्त्वचारित्रे।।3।। ज्ञानदर्शनदानलाभ-भोगोपभोगवीर्याणि च।।4।। ज्ञानाज्ञानदर्शनलब्ध-यश्चतुस्त्रित्रि पंचभेदाः सम्यक्त्वचारित्रसंयमासंयमाश्च।।5।। गतिकषायलिङ्ग-मिथ्यादर्शनाज्ञानासंयतासिद्धलेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैकषड् भेदाः।।6।। जीवभव्याभव्यत्वानि च।।7।। उपयोगो लक्षणम्।।8।। स द्विविधोऽष्ट-चतुर्भेदः।।9।। संसारिणो मुक्ताश्च।।10।। समनस्कामनस्काः।।11।। संसारिणस्त्र-सस्थावराः।।12।। पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयः स्थावराः।।13।। द्वीन्द्रियादयस-

त्रसाः ।।14 ।। पञ्चेन्द्रियाणि ।।15 ।। द्विविधानि ।।16 ।। निर्वृत्त्युपकरणे द्रव्येन्द्रिम् ।।17 ।। लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम् ।।18 ।। स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुः श्रोत्राणि ।।19 ।। स्पर्शरसगन्धवर्णशब्दास् तदर्थाः ।।20 ।। श्रुतमनिन्द्रियस्य ।।21 ।। वनस्पत्यन्तानामेकम् ।।22 ।। कृमिपिपीलिकाभ्रमर–मनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि ।।23 ।। संज्ञिनः समनस्काः ।।24 ।। विग्रहगतौ कर्मयोगः ।।25 ।। अनुश्रेणि गतिः ।।26 ।। अविग्रहा जीवस्य ।।27 ।। विग्रहवती च संसारिणः प्राक् चतुर्भ्यः ।।28 ।। एकसमयाविग्रहा ।।29 ।। एकं द्वौ त्रीन् वानाहारकः ।।30 ।। सम्मूर्च्छनगर्भोपपादा जन्म ।।31 ।। सचित्तशीतसंवृताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः ।।32 ।। जरायुजाण्डजपोतानां गर्भः ।।33 ।। देवनारकाणामुपपादः ।।34 ।। शेषाणां सम्मूर्च्छनम् ।।35 ।। औदारिकवैक्रियि–काहारक–तैजसकार्मणानि शरीराणि ।।36 ।। परं परं सूक्ष्मम् ।।37 ।। प्रदेश–तोऽसंख्येयगुणं प्राक् तैजसात् ।।38 ।। अनन्तगुणे परे ।।39 ।। अप्रतीघाते ।।40 ।। अनादिसंबन्धे च ।।41 ।। सर्वस्य ।।42 ।। तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्ना चतुर्भ्यः ।।43 ।। निरुपभोग–मन्त्यम् ।।44 ।। गर्भसम्मूर्च्छनज–माद्यम् ।।45 ।। औपपादिकं वैक्रियिकम् ।।46 ।। लब्धिप्रत्ययं च ।।47 ।। तैजसमपि ।।48 ।। शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं प्रमत्तसंयतस्यैव ।।49 ।। नारक सम्मूर्च्छिनो नपुंसकानि ।।50 ।। न देवाः ।।51 ।। शेषास् त्रिवेदाः ।।52 ।। औपपादिकचरमोत्तमदेहासंख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः ।।53 ।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रे (मोक्षशास्त्रे) द्वितीयोऽध्यायः ।।2 ।।

तृतीय अध्याय

रत्नशर्कराबालुकापङ्कधूमतमोमहातमः प्रभाभूमयो घनाम्बुवाता–काशप्रतिष्ठाः सप्ताधोऽधः ।।1 ।। तासु त्रिंशत्पंचविंशतिपंचदश दशत्रिपंचोनैकनरक–शतसहस्राणि पञ्च चैव यथाक्रमम् ।।2 ।। नारका

नित्याशुभतरलेश्या परिणामदेहवेदनाविक्रियाः ।।3 ।। परस्परोदीरितदुःखाः ।।4 ।। संक्लिष्टा–सुरोदीरितदुःखाश्च प्राक् चतुर्थ्याः ।।5 ।। तेष्वेकत्रिसप्तदशसप्तदशद्वाविंशतित्रयस्त्रिंशत्सागर–रोपमा सत्त्वानां परा स्थितिः ।।6 ।। जम्बूद्वीपलवणोदादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः ।।7 ।। द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्वपूर्वपरिक्षेपिणो वलया–कृतयः ।।8 ।। तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजनशतसहस्रविष्कम्भो जम्बूद्वीपः ।।9 ।। भरतहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि ।।10 ।। तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्महाहिम–वन्निषधनीलरुक्मिशिखरिणो वर्षधरपर्वताः ।।11 ।। हेमार्जुनतपनीय वैडूर्यरजतहेममयाः ।।12 ।। मणिविचित्र–पार्श्वा उपरिमूले च तुल्यविस्ताराः ।।13 ।। पद्ममहापद्मतिगिंछकेश रिमहापुण्डरीकपुण्डरीका ह्रदास्तेषामुपरि ।।14 ।। प्रथमो योजनसहस्रायामस् तदर्द्ध विष्कम्भो ह्रदः ।।15 ।। दशयोजना–वगाहः ।।16 ।। तन्मध्ये योजनं पुष्करम् ।।17 ।। तद्द्विगुणद्विगुणा ह्रदाः पुष्कराणि च ।।18 ।। तन्निवासिन्यो देव्यः श्रीह्रीधृतिकीर्ति–बुद्धिलक्ष्म्यः पल्योपमस्थितयः ससामानिक–परिषत्काः ।।19 ।। गङ्गासिन्धुरोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकान्ता–सीतासीतो–दानारीनरकान्तासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदाः सरितस्तन्मध्यगाः ।।20 ।। द्वयोर्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः ।।21 ।। शेषास्त्वपरगाः ।।22 ।। चतुर्दशनदीसहस्रपरिवृता गङ्गासिन्ध्वादयो नद्यः ।।23 ।। भरतः षड् विंशतिपञ्चयोजनशतविस्तारः षट् चैकोनविंशतिभागा योजनस्य ।।24 ।। तद्द्विगुणद्विगुणविस्तारा वर्षधरवर्षा विदेहान्ताः ।।25 ।। उत्तरादक्षिणतुल्याः ।।26 ।। भरतैरावतयोर्वृद्धिह्रासौ षट्समयाभ्यामुत्सर्पिण्यव–सर्पिणीभ्याम् ।।27 ।। ताभ्यामपरा भूमयोऽवस्थिताः ।।28 ।। एकद्वित्रिपल्योपमस्थितयो हैमवतकहारिवर्षक–दैवकुरवकाः ।।29 ।। तथोत्तराः ।।30 ।।

विदेहेषुसंख्येयकालाः ।।31 ।। भरतस्य विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्य नवतिशत भागः ।।32 ।। द्विर्धातकीखण्डे ।।33 ।। पुष्करार्द्धे च ।।34 ।। प्राङ् मानुषोत्तरान्मनुष्याः ।।35 ।। आर्या म्लेच्छाश्च ।।36 ।। भरतैरावतविदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरुत्तरकुरुभ्यः ।।37 ।। नृस्थिती परावरे त्रिपल्योपमान्तर्मुहूर्ते ।।38 ।। तिर्यग्योनिजानां च ।।39 ।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रे (मोक्षशास्त्रे) तृतीयोऽध्यायः ।।3 ।।

चतुर्थ अध्याय

देवाश्चतुर्णिकायाः ।।1 ।। आदितस्त्रिषु पीतान्तलेश्याः ।।2 ।। दशाष्टपञ्चद्वादशविकल्पाः कल्पोपपन्नपर्यन्ताः ।।3 ।। इन्द्र-सामानिक त्रायस्त्रिंश पारिषदात्मरक्ष लोकपालानीक प्रकीर्ण-काभियोग्य-किल्विषिकाश्चैकशः ।।4 ।। त्रायस्त्रिंशलोकपालवर्ज्या व्यन्तर-ज्योतिष्काः ।।5 ।। पूर्वयो-र्द्वीन्द्राः ।।6 ।। कायप्रवीचारा आ ऐशानात् ।।7 ।। शेषाः स्पर्शरूपशब्दमनः प्रवीचाराः ।।8 ।। परेऽप्रवीचाराः ।।9 ।। भवनवासिनोऽसुरनाग-विद्युत्सुपर्णाग्नि- वातस्त-नितोदधि द्वीप दिक्कुमाराः ।।10 ।। व्यन्तराः किन्नर-किंपुरुषमहोरग-गन्धर्वयक्ष-राक्षसभूतपिशाचाः ।।11 ।। ज्योतिष्काः सूर्याचन्द्रमसौ ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णकतारकाश्च ।।12 ।। मेरुप्रदक्षिणा नित्यगतयो नृलोके ।।13 ।। तत्कृतः कालविभागः ।।14 ।। बहिरवस्थिताः ।।15 ।। वैमानिकाः ।।16 ।। कल्पोपपन्नाः कल्पातीताश्च ।।17 ।। उपर्युपरि ।।18 ।। सौधर्मैशानसानत्कुमार-माहेन्द्रब्रह्मब्रह्मोत्तरलान्तवकापिष्ठ-शुक्रमहाशुक्रशतार - सहस्रारेष्वानत-प्राणतयोरारणाच्युतयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजय-वैजयन्तजयन्तापराजितेषु सर्वार्थसिद्धौ च ।।19 ।। स्थितिप्रभाव-सुखद्युतिलेश्याविशुद्धीन्द्रियावधि-विषयतोऽधिकाः ।।20 ।। गतिशरीरपरिग्रहाभिमानतो हीनाः ।।21 ।। पीतपद्मशुक्ल-लेश्या द्वित्रिशेषषु ।।22 ।। प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः ।।23 ।। ब्रह्म-लोकालया

लौकान्तिकाः ।।24 ।। सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोय-तुषिताव्याबाधारिष्टाश्च ।।25 ।। विजयादिषु द्विचरमाः ।।26 ।। औप-पादिकमनुष्येभ्यः शेषास्तिर्यग्योनयः ।।27 ।। स्थितिरसुरनागसुपर्ण-द्वीपशेषाणां सागरोपमत्रिपल्योपमार्द्धहीन-मिताः ।।28 ।। सौधर्मै-शानयोः सागरोपमे अधिके ।।29 ।। सानत्कुमारमाहेन्द्रयोः सप्त ।।30 ।। त्रिसप्तनवैकादशत्रयोदश-पञ्चदशभिरधिकानि तु ।।31 ।। आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धौ च ।।32 ।। अपरा पल्योपममधिकम् ।।33 ।। परतःपरतः पूर्वा पूर्वाऽनन्तरा ।।34 ।। नारकाणां च द्वितीयादिषु ।।35 ।। दशवर्षसहस्राणि प्रथमायाम् ।।36 ।। भवनेषु च ।।37 ।। व्यन्तराणां च ।।38 ।। परा पल्योपममधिकम् ।।39 ।। ज्योतिष्काणां च ।।40 ।। तदष्टभागोऽपरा ।।41 ।। लौकान्तिकानामष्टौ सागरोपमाणि सर्वेषाम् ।।42 ।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रे (मोक्षशास्त्रे) चतुर्थोऽध्यायः ।।4 ।।

पंचम अध्याय

अजीवकायाधर्माधर्माकाशपुद्गलाः ।।1 ।। द्रव्याणि ।।2 ।। जीवाश्च ।।3 ।। नित्यावस्थितान्-यरूपाणि ।।4 ।। रूपिणः पुद्गलाः ।।5 ।। आ आकाशादेकद्रव्याणि ।।6 ।। निष्क्रियाणि च ।।7 ।। असंख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मैकजीवानाम् ।।8 ।। आकाशस्यानन्ताः ।।9 ।। संख्येयासंख्येयाश्च पुद्गलानाम् ।।10 ।। नाणोः ।।11 ।। लोकाकाशेऽवगाहः ।।12 ।। धर्माधर्मयोः कृत्स्ने ।।13 ।। एकप्रदेशादिषु भाज्यः पुद्गलानाम् ।।14 ।। असंख्येयभागादिषु जीवानाम् ।।15 ।। प्रदेशसंहारविसर्पाभ्यां प्रदीपवत् ।।16 ।। गतिस्थित्युपग्रहौ धर्माधर्मयोरुपकारः ।।17 ।। आकाशस्यावगाहः ।।18 ।। शरीरवाङ्मनः प्राणापानाः पुद्गलानाम् ।।19 ।। सुखदुःखजीवित-मरणोपग्रहाश्च ।।20 ।। परस्परोपग्रहो जीवानाम् ।।21 ।। वर्तनापरिणामक्रियापरत्वापरत्वे च कालस्य ।।22 ।। स्पर्शरसगन्धवर्ण-वन्तः

पुद्गलाः ।।23 ।। शब्दबन्धसौक्ष्म्यस्थौल्य संस्थानभेदतमश्-छायातपोद्योतवन्तश्च ।।24 ।। अणवः स्कन्धाश्च ।।25 ।। भेद-सङ्घातेभ्य उत्पद्यन्ते ।।26 ।। भेदादणुः ।।27 ।। भेदसङ्घाताभ्यां चाक्षुषः ।।28 ।। सद् द्रव्यलक्षणम् ।।29 ।। उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत् ।।30 ।। तद्भावाव्ययं नित्यम् ।।31 ।। अर्पितानर्पितसिद्धेः ।।32 ।। स्निग्ध-रूक्षत्वाद्बन्धः ।।33 ।। न जघन्यगुणानाम् ।।34 ।। गुणसाम्ये सदृशानाम् ।।35 ।। द्व्यधिकादिगुणानां तु ।।36 ।। बन्धेऽधिकौ परिणामिकौ च ।।37 ।। गुणपर्ययवद् द्रव्यम् ।।38 ।। कालश्च ।।39 ।। सोऽनन्तसमयः ।।40 ।। द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः ।।41 ।। तद्भावः परिणामः ।।42 ।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रे (मोक्षशास्त्रे) पञ्चमोऽध्यायः ।।5 ।।

षष्ठम् अध्याय

कायवाङ्मनः कर्मयोगः ।।1 ।। स आस्रवः ।।2 ।। शुभः पुण्यस्याशुभः पापस्य ।।3 ।। सकषायाकाययोः साम्परायिकेर्यापथयोः ।।4 ।। इन्द्रियकषाया-व्रतक्रियाः पञ्च चतुः पञ्चपञ्चविंशतिसंख्याः पूर्वस्य भेदाः ।।5 ।। तीव्रमन्द-ज्ञाताज्ञात-भावाधिकरण-वीर्यविशेषेभ्यस्त द्विशेषः ।।6 ।। अधिकरणं जीवाजीवाः ।।7 ।। आद्यं संरम्भसमा-रम्भारम्भयोगकृ तकारितानुमत-कषायविशेषै-स्त्रिस्त्रिस्त्रिश्-चतुश्चैकशः ।।8 ।। निर्वर्तनानिक्षेपसंयोगनिसर्गा द्विचतुर्द्वित्रिभेदाः परम् ।।9 ।। तत्प्रदोषनिह्नवमात्सर्यान्तराया-सादनोपघाता ज्ञानदर्शना-वरणयोः ।।10 ।। दुःखशोकतापाक्रन्दन-वधपरिदेव-नान्यात्म-परोभय-स्थानान्यसद्वेद्यस्य ।।11 ।। भूतव्रत्यनुकम्पादा-नसराग संयमादियोगः क्षान्तिः शौचमिति सद्वेद्यस्य ।।12 ।। केवलिश्रुतसंघधर्मदेवावर्ण-वादो दर्शनमोहस्य ।।13 ।। कषायोदया-त्तीव्रपरिणामश्चारित्रमोहस्य ।।14 ।। बह्वारम्भपरिग्रहत्वं नारकस्यायुषः ।।15 ।। माया तैर्यग्योनस्य ।।16 ।। अल्पारम्भ परिग्रहत्वं

मानुषस्य ।।17 ।। स्वभावमार्दवं च ।।18 ।। निःशीलव्रतत्वं च सर्वेषाम् ।।19 ।। सरागसंयमसंयमा-संयमाकामनिर्जराबाल तपांसि दैवस्य ।।20 ।। सम्यक्त्वं च ।।21 ।। योगवक्रता विसंवादनं चाशुभस्य नाम्नः ।।22 ।। तद्विपरीतं शुभस्य ।।23 ।। दर्शनविशुद्धिर्विनय-संपन्नता शीलव्रतेष्वनतीचारोऽभीक्ष्ण-ज्ञानोपयोगसंवेगौ शक्तितस्त्यागत-पसीसाधु-समाधिर्वैयावृत्यकरण महदाचार्य-बहुश्रुतप्रवचनभक्ति-रावश्यकापरिहाणिर्मार्ग-प्रभावना-प्रवचन-वत्सलत्वमितितीर्थ-करत्वस्य ।।24 ।। परात्मनिन्दाप्रशंसे सद-सद्गुणोच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य ।।25 ।। तद्विपर्ययो नीचै-र्वृत्त्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य ।।26 ।। विघ्नकरणमन्तरायस्य ।।27 ।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रे (मोक्षशास्त्रे) षष्ठोऽध्यायः ।।6 ।।

सप्तम अध्याय

हिंसाऽनृतस्तेयाब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरति र्व्रतम् ।।1 ।। देशसर्वतो-ऽणुमहती ।।2 ।। तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पञ्च पञ्च ।।3 ।। वाङ्मनोगुप्ती-र्यादाननिक्षेपणसमित्या-लोकितपानभोजनानि पञ्च ।।4 ।। क्रोधलोभ-भीरुत्वहास्यप्रत्याख्याना-न्यनुवीचिभाषणं च पञ्च ।।5 ।। शून्यागार विमोचितावासपरोपरोधाकरण-भैक्ष्यशुद्धिसधर्मावि-संवादाः पञ्च ।।6 ।। स्त्रीराग-कथाश्रवणतन्मनोहराङ्ग-निरीक्षण-पूर्वरतानुस्मरणवृष्येष्ट-रसस्वशरीर संस्कारत्यागाः पञ्च ।।7 ।। मनोज्ञामनोज्ञेन्द्रियविषय-रागद्वेषवर्जनानि पञ्च ।।8 ।। हिंसादिष्विहामुत्रा-पायावद्यदर्शनम् ।।9 ।। दुःखमेव वा ।।10 ।। मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्थ्यानि च सत्त्वगुणा-धिकक्लिश्य-मानाविनयेषु ।।11 ।। जगत्कायस्वभावौ वा संवेग-वैराग्यार्थम् ।।12 ।। प्रमत्तयोगात्प्राणव्यपरोपणं हिंसा ।।13 ।। अस-

दभिधानमनृतम् ।।14 ।। अदत्तादानं स्तेयम् ।।15 ।। मैथुनमब्रह्म ।।16 ।। मूर्छा परिग्रहः ।।17 ।। निःशल्यो व्रती ।।18 ।। आगार्यनगारश्च ।।19 ।। अणुव्रतोऽगारी ।।20 ।। दिग्देशानर्थदण्ड-विरतिसामायिकप्रोषधोप-वासोपभोग-परिभोगपरिमाणा-तिथिसंविभागव्रतसम्पन्नश्च ।।21 ।। मारणान्तिकीं सल्लेखनां जोषिता ।।22 ।। शङ्का-कांक्षा-विचिकित्सान्यदृष्टिप्रशंसा संस्तवाः सम्यग्दृष्टेरतीचाराः ।।23 ।। व्रतशीलेषु पञ्च पञ्च यथाक्रमम् ।।24 ।। बन्ध-वधच्छे दातिभारारोपणान्न-पान-निरोधाः ।।25 ।। मिथ्योपदेशरहोभ्या-ख्यानकू टलेख-क्रि यान्यासापहार-साकारमन्त्रभेदाः ।।26 ।। स्तेनप्रयोगतदा-हृतादान-विरुद्धराज्या-तिक्रमहीनाधिकमानोन्मानप्रतिरूपकव्यवहाराः ।।27 ।। परविवाह-करणेत्वरिकापरिगृहीतापरिगृहीता-गमनानङ्गक्रीडाकाम-तीव्राभिनिवेशाः ।।28 ।। क्षेत्रवास्तुहिरण्यसुवर्ण-धनधान्य-दासीदासकुप्यभाण्ड-प्रमाणातिक्रमाः ।।29 ।। ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्य-तिक्रम-क्षेत्रवृद्धिस्मृत्यन्तरा-धानानि ।।30 ।। आनयनप्रेष्यप्रयोग-शब्दरूपानु पातपुद्गलक्षेपाः ।।31 ।। कन्दर्पकौत्कुच्यमौखर्या-समीक्ष्याधि-करणोपभोगपरिभोगानर्थक्यानि ।।32 ।। योगदुःप्रणिधा नानादर-स्मृत्यनु-पस्थानानि ।।33 ।। अप्रत्यवेक्षिता-प्रमार्जितोत्सर्गा-दान-संस्तरोप-क्र मणानादर-स्मृत्य-नुपस्थानानि ।।34 ।। सचित्त-सम्बन्धसम्मिश्राभिषव-दुः पक्वाहाराः ।।35 ।। सचित्तनिक्षेपा-पिधानपरव्यपदेशमात्सर्य्य-कालातिक्रमाः ।।36 ।। जीवितमरणा-शंसामित्रानुरागसुखानुबन्ध-निदानानि ।।37 ।। अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम् ।।38 ।। विधिद्रव्य-दातृपात्र-विशेषात्तद्विशेषः ।।39 ।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रे (मोक्षशास्त्रे) सप्तमोऽध्यायः ।।7 ।।

अष्टम अध्याय

मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमाद - कषाययोगा बन्धहेतवः ।।1 ।। सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान् पुद्गलानादत्ते स बन्धः ।।2 ।। प्रकृतिस्थित्यनुभवप्रदेशास् तद्विधयः ।।3 ।। आद्यो ज्ञानदर्शनावरण वेदनीयमोहनीयायुर्नाम-गोत्रान्तरायाः ।।4 ।। पञ्चनवद्व्यष्टा विंशतिचतुर्द्विचत्वारिंशद्द्विपञ्चभेदा यथाक्रमम् ।।5 ।। मतिश्रुता वधिमनः पर्ययकेवलानाम् ।।6 ।। चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानां निद्रा निद्रा-निद्रा-प्रचला-प्रचला-प्रचला-स्त्यानगृद्धयश्च ।।7 ।। सदसद्वेद्ये ।।8 ।। दर्शनचारित्र-मोहनीयकषाय-कषायवेदनीयाख्यास्-त्रिद्विनवषोडश भेदाः सम्यक्त्व-मिथ्यात्वतदुभयान्यकषाय-कषायौ हास्यरत्य-रतिशोकभयजुगुप्सास्त्रिपुन्नपुंसकवेदा अनन्तानु-बन्ध्य-प्रत्याख्यान-प्रत्याख्यान-संज्वलन-विकल्पाश्चैकशः क्रोध मानमायालोभाः ।।9 ।। नारकतैर्यग्योनमानुषदैवानि ।।10 ।। गति-जातिशरीराङ्गोपाङ्ग-निर्माणबन्धन-सङ्घातसंस्थानसंहननस्पर्श-रसगन्धवर्णानुपूर्व्य-गुरुलघूपघात-परघातातपोद्योतोच्छ्वास-विहायो गतयः प्रत्येकशरीरत्रससुभगसुस्वरशुभ-सूक्ष्मपर्याप्तिस्थिरा-देययशः कीर्तिसेतराणि तीर्थकरत्वं च ।।11 ।। उच्चैर्नीचैश्च ।।12 ।। दानलाभभोगोपभोगवीर्याणाम् ।।13 ।। आदितस्ति-सृणामन्तरायस्य च त्रिंशत्सागरोपम्-कोटीकोट्यः परा स्थितिः ।।14 ।। सप्तति-र्मोहनीयस्य ।।15 ।। विंशतिर्नामगोत्रयोः ।।16 ।। त्रयस्त्रिंशत्सागरो-पमाण्यायुषः ।।17 ।। अपरा द्वादशमुहूर्त्ता वेदनीयस्य ।।18 ।। नाम-गोत्रयोरष्टौ ।।19 ।। शेषाणामन्तर्मुहूर्ता ।।20 ।। विपाकोऽनुभवः ।।21 ।। स यथानाम ।।22 ।। ततश्च निर्जरा ।।23 ।। नामप्रत्ययाः सर्वतो योगविशेषात् सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाहस्थिताः सर्वात्मप्रदेशेष्व-नन्तानन्तप्रदेशाः ।।24 ।। सद्वेद्यशुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यम् ।।25 ।। अतोऽन्यत्पापम् ।।26 ।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रे (मोक्षशास्त्रे) अष्टमोऽध्याय ।।8 ।।

नवम अध्याय

आस्रवनिरोधः संवरः ।।1 ।। स गुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षा–परीषहजय चारित्रैः ।।2 ।। तपसा निर्जरा च ।।3 ।। सम्यग्योगनिग्रहो गुप्तिः ।।4 ।। ईर्याभाषैषणा–दाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः ।।5 ।। उत्तमक्षमा–मार्दवार्जव–शौचसत्यसंयम–तपत्यागाकिञ्चन्य–ब्रह्मचर्याणि धर्मः ।।6 ।। अनित्याशरण–संसारैकत्वान्यत्वाशुच्यास्रव–संवरनिर्जरालोकबोधिदुर्लभ–धर्मस्वाख्या–तत्त्वानुचिन्तन–मनुप्रेक्षाः ।।7 ।। मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः ।।8 ।। क्षुत्पिपासाशीतोष्ण–दंशमशक–नाग्न्यारति–स्त्री–चर्या–निषद्या–शय्या–क्रोश–वध–याचनालाभ–रोगतृणस्पर्श–मलसत्कारपुरस्कार–प्रज्ञाज्ञाना–दर्शनानि ।।9 ।। सूक्ष्मसाम्प–रायच्छद्मस्थवीतरागयोश्चतुर्दश ।।10 ।। एकादश जिने ।।11 ।। बादरसाम्पराये सर्वे ।।12 ।। ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने ।।13 ।। दर्शनमोहान्तराययोरदर्शनालाभौ ।।14 ।। चारित्रमोहे नाग्न्यार–तिस्त्रीनिषद्या–क्रोशयाचनासत्कार–पुरस्काराः ।।15 ।। वेदनीये शेषाः ।।16 ।। एकादयो भाज्यायुगपदेकस्मिन्नै–कोनविंशतेः ।।17 ।। सामायिकच्छेदोपस्थापनापरिहार–विशुद्धि–सूक्ष्मसाम्पराययथाख्यात–मिति चारित्रम् ।।18 ।। अनशनाव–मौदर्यवृत्तिपरिसंख्यान–रस–परित्याग–विविक्तशय्यासन–कायक्लेशा बाह्यं तपः ।।19 ।। प्रायश्चित्तविनय–वैयावृत्त्यस्वाध्यायव्युत्सर्ग–ध्यानान्युत्तरम् ।।20 ।। नवचतुर्दश–पञ्च–द्विभेदा यथा–क्रमं प्राग्ध्यानात् ।।21 ।। आलोचना–प्रतिक्रमण–तदुभयविवेकव्युत्सर्ग–तपश्छेदपरिहारोप–स्थापनाः ।।22 ।। ज्ञानदर्शन–चारित्रो–पचाराः ।।23 ।। आचार्यो–पाध्यायतपस्विशैक्ष्यग्लान–गणकुलसङ्घ–साधुमनोज्ञानाम् ।।24 ।। वाचना–पृच्छनानुप्रेक्षाम्नायधर्मो–पदेशाः ।।25 ।। बाह्याभ्यन्त–रोपध्योः ।।26 ।। उत्तमसंहननस्यैका–ग्रचिन्तानिरोधो ध्यानमान्तर्मुहूर्तात् ।।27 ।। आर्त्तरौद्रधर्म्य–शुक्लानि ।।28 ।।

परे मोक्षहेतू ।।29 ।। आर्त–ममनोज्ञस्य संप्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृतिसमन्वाहारः ।।30 ।। विपरीतं मनोज्ञस्य ।।31 ।। वेदनायाश्च ।।32 ।। निदानं च ।।33 ।। त–दविरतदेशविरत–प्रमत्तसंयतानाम् ।।34 ।। हिंसानृतस्तेयविषयसंरक्षणेभ्यो–रौद्र–मविरतदेशविरतयोः ।।35 ।। आज्ञापायविपाकसंस्थानविचयाय धर्म्यम् ।।36 ।। शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः ।।37 ।। परे केवलिनः ।।38 ।। पृथक्त्वैकत्व–वितर्कसूक्ष्म–क्रियाप्रतिपाति–व्युपरत क्रिर्या–निवर्तीनि ।।39 ।। त्र्येकयोग–काय–योगायोगानाम् ।।40 ।। एकाश्रये सवितर्कवीचारे पूर्वे ।।41 ।। अवीचारं द्वितीयम् ।।42 ।।वितर्क :श्रुतम् ।।43 ।। वीचारोऽर्थ–व्यञ्जनयोगसंक्रान्तिः ।।44 ।। सम्यग्दृष्टि–श्रावकविरतानन्तवियोजक–दर्शनमोहक्षपकोपशमकोपशान्तमोह क्षपकक्षीणमोहजिनाः क्रमशोऽसंख्येयगुणनिर्जराः ।।45 ।। पुलाक–वकुश–कुशील–निर्ग्रन्थस्नातका निर्ग्रन्थाः ।।46 ।। संयमश्रुतप्रति–सेवनातीर्थलिङ्गलेश्योपपादस्थानविकल्पतः साध्याः ।।47 ।।

।।इति तत्त्वार्थसूत्रे (मोक्षशास्त्रे) नवमोऽध्यायः ।।9 ।।

दशम अध्याय

मोहक्षयाज्ज्ञान–दर्शनावरणान्तरायक्षयाच्च केवलम् ।।1 ।। बन्धहेत्वभाव–निर्जराभ्यां कृत्स्नकर्मविप्रमोक्षो मोक्षः ।।2 ।। औपशमिकादिभव्यत्वानां च ।।3 ।। अन्यत्र केवल– सम्यक्त्वज्ञान–दर्शनसिद्धत्वेभ्यः ।।4 ।। तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छत्यालोकान्तात् ।।5 ।। पूर्वप्रयोगा–दसङ्गत्वाद्–बन्धच्छेदात् तथागति–परिणामाच्च ।।6 ।। आविद्धकुलालचक्रवद्–व्यपगतलेपालाम्बुवदेरण्डबीज–वदग्नि–शिखावच्च ।।7 ।। धर्मास्तिकाया–भावात् ।।8 ।। क्षेत्रकालगति–लिङ्गतीर्थचारित्रप्रत्येकबुद्धबोधित–ज्ञानावगाहनान्तरसंख्याल्प–बहुत्वतः साध्याः ।।10 ।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रे (मोक्षशास्त्रे) दशमोऽध्यायः ।।10 ।।

दोद्यक वृत्त

अक्षर-मात्र-पदस्वर-हीनं, व्यञ्जनसंधि-विवर्जितरेफम्।
साधुभिरत्र मम क्षमितव्यं, को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे ।।1 ।।

दशाध्याये परिच्छिन्ने, तत्त्वार्थे पठिते सति।
फलं स्यादुपवासस्य, भाषितं मुनिपुङ्गवैः ।।2 ।।

तत्त्वार्थ-सूत्रकर्तारं, गृद्ध-पिच्छोप-लक्षितम्।
वन्दे गणीन्द्रसंजात, मुमास्वामीमुनीश्वरम् ।।3 ।।

पढम चउक्के पढमं, पंचमए जाण पुग्गलं तच्च।
छहसत्तमे हि आस्सव, अट्ठमे बंध णायव्वो ।।4 ।।

णवमे संवर णिज्जर, दहमे मोक्खं वियाणे हि।
इह सत्त तच्च भणियं, दह सुत्ते मुणिवरिं देहिं ।।5 ।।

जं सक्कइ तं कीरइ, जं च ण सक्कइ तहेव सद्दहणं।
सद्दहमाणो जीवो, पावइ अजरामरं ठाणं ।।6 ।।

तवयरणं वयधरणं, संजमसरणं च जीवदयाकरणम्।
अन्ते समाहिमरणं, चउगइ दुक्खं णिवारेई ।।7 ।।

कोटिशतं द्वादशचैव कोट्यो, लक्षाण्यशीतिस्त्र्यधिकानि चैव।
पंचाशदष्टौ च सहस्रसंख्या, मेतच्छ्रुतं पंचपदं नमामि ।।8 ।।

अरहंत भासियत्थं, गणहरदेवेहिं गंथियं सव्वं।
पणमामि भत्तिजुत्तो, सुदणाणमहोवहिं सिरसा ।।9 ।।

गुरवः पांतु नो नित्यं, ज्ञानदर्शननायकाः
चारित्रार्णवगम्भीरा, मोक्षमार्गोपदेशकाः ।।10 ।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रापरनाम मोक्षशास्त्रं समाप्तम् ।।

भक्तामरस्तोत्रम्

(श्रीमानतुंगाचार्य विरचित)

भक्तामर-प्रणत-मौलि-मणि-प्रभाणा-
मुद्योतकं दलित-पाप-तमो-वितानम्।
सम्यक् प्रणम्य जिन-पाद-युगं युगादा-
वालम्बनं भव-जले पततां जनानाम् ।।1 ।।

यः संस्तुतः सकल-वाङ्मय-तत्त्व-बोधा-
दुद्भूत-बुद्धि-पटुभिः सुर-लोक-नाथैः।
स्तोत्रैर्जगत्त्रितय-चित्त-हरैरुदारैः
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ।।2 ।।

बुद्ध्या विनाऽपि विबुधार्चित-पादपीठ
स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगत-त्रपोऽहम्
बालं विहाय जलसंस्थितमिन्दु-बिम्ब
मन्यः कः इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ।।3 ।।

वक्तुं गुणान्गुणसमुद्र! शशांककांतान्
कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या।
कल्पान्तकालपवनोद्धतनक्र चक्र म्
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ।।4 ।।

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश!
कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः।
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगी मृगेन्द्रम्
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ।।5 ।।

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम्।

यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति
तच्चाम्रचारुकलिकानिकरैकहेतु ।।6 ।।

त्वत्संस्तवेन भवसन्ततिसन्निबद्धम्
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ।
आक्रान्तलोकमलिनीलमशेषमाशु
सुर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ।।7 ।।

मत्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु
मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिन्दुः ।।8 ।।

आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषम्
त्वत्संकथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति ।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव
पद्माकरेषु जलजानि विकासभांजि ।।9 ।।

नात्यद्भुतं भुवनभूषण ! भूतनाथ !
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः ।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ।।10 ।।

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयम्
नान्यत्रतोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ।
पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्धसिन्धोः
क्षारं जलं जलनिधे रसितुं क इच्छेत् ।।11 ।।

यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वम्
निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत!

तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्याम्
यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ।।12 ।।

वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि
निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानम् ।
बिम्बं कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य
यद्वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम् ।।13 ।।

सम्पूर्ण-मण्डल-शशांककला कलाप
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयन्ति ।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर नाथमेकम्
कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ।।14 ।।

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि,
नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ।
कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन,
किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ।।15 ।।

निर्धूमवर्तिरपवर्जिततैलपूरः,
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानाम्,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ।।16 ।।

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति
नाम्भोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः
सूर्यातिशायिमहिमासि मुनीन्द्र! लोके ।।17 ।।

नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारम्,
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ।

विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति,
विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिम्बम् ।।18 ।।

किं शर्वरीषु शशिनाऽन्हि विवस्वता वा,
युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमस्सु नाथ!
निष्पन्न शालिवनशालिनि जीवलोके,
कार्यं कियज्जलधरैर्जलभार नम्रैः ।।19 ।।

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशम्,
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ।
तेजोमहामणिषु याति यथा महत्त्वम्
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ।।20 ।।

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ ! भवान्तरेऽपि ।।21 ।।

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिम्
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ।।22 ।।

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस
मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात् ।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युम्,
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः ।।23 ।।

त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यम्,
ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनंगकेतुम् ।

योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकम्,
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ।।24 ।।

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्,
त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रयशंकरत्वात् ।
धाताऽसि धीर ! शिवमार्गविधेर्विधानात्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन् ! पुरुषोत्तमोऽसि ।।25 ।।

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ!
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन! भवोदधिशोषणाय ।।26 ।।

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषैस्,
त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश!
दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ।।27 ।।

उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख-,
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ।
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानम्,
बिम्बं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ।।28 ।।

सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ।
बिम्बं वियद्विलसदंशुलतावितानम्,
तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ।।29 ।।

कुन्दावदातचलचामरचारुशोभम्,
विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम् ।

उद्यच्छशांकशुचिनिर्झरवारिधार-,
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम्।।30।।

छत्रत्रयं तव विभाति शशांककान्त-,
मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रतापम्।
मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभम्,
प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्।।31।।

गम्भीर तार रव पूरित दिग्विभागस्-,
त्रैलोक्यलोक शुभसंगमभूतिदक्षः।
सद्धर्मराज! जय घोषणघोषकः सन्,
खे दुन्दुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी।।32।।

मन्दारसुन्दरनमेरुसुपारिजात,
सन्तानकादिकु सुमोत्करवृष्टिरुद्धा।
गन्धोदबिन्दुशुभमन्दमरुत्प्रपाता,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां तति र्वा।।33।।

शुम्भत्प्रभावलयभूरिविभा विभोस्ते
लोकत्रये द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती।
प्रोद्यद्दिवाकरनिरन्तरभूरिसंख्या
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोमसौम्याम्।।34।।

स्वर्गापवर्गगममार्गविमार्गणेष्टः,
सद्धर्मतत्त्वकथनैकपटु स्त्रिलोक्याः।
दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थसर्व-,
भाषास्वभावपरिणामगुणैः प्रयोज्यः।।35।।

उन्निद्रहेम नवपंकज-पुंज कान्ति
पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति।।36।।

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र,
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक् कुतो ग्रह-गणस्य विकासिनोऽपि।।37।।

श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल
मत्त-भ्रमद् भ्रमरनाद्विवृद्धकोपम्।
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं
दृष्ट्वाभयं भवति नो भवदाश्रितानाम्।।38।।

भिन्नेभकुम्भगलदुज्जवलशोणिताक्त-
मुक्ताफलप्रकर भूषितभूमिभागः।
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि
नाक्रामति क्रमयुगाचल-संश्रितं ते।।39।।

कल्पान्तकालपवनोद्धतवह्निकल्पम्
दावानलं ज्वलितमुज्जवलमुत्स्फुलिङ्गम्।
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तम्
त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम्।।40।।

रक्तेक्षणं समदकोकिलकण्ठनीलम्
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम्।
आक्रामति क्रमयुगेण निरस्तशंकस्-
त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः।।41।।

वल्गत्तुरंगगजगर्जित भीमनाद
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम्।
उद्यद्दिवाकर मयूखशिखापविद्धम्
त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति।।42।।

कुन्ताग्रभिन्नगजशोणितवारिवाह
वेगावतार तरणातुरयोधभीमे ।
युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षास्
त्वत्पादपङ्कजवनाश्रयिणो लभन्ते ।।43 ।।

अम्भोनिधौ क्षुभितभीषणनक्र-चक्र,
पाठीनपीठभयदोल्वणवाडवाग्नौ ।
रङ्गत्तरङ्गशिखरस्थितयानपात्रास्,
त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ।।44 ।।

उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्नाः,
शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः ।
त्वत्पादपङ्कजरजोऽमृतदिग्धदेहा,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः ।।45 ।।

आपादकण्ठमुरुशृङ्खलवेष्टिताङ्गाः
गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजङ्घाः ।
त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः
सद्यः स्वयं विगतबन्धभया भवन्ति ।।46 ।।

मत्तद्विपेन्द्र मृगराज दवानलाहि
संग्रामवारिधिमहोदरबन्धनोत्थम् ।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ।।47 ।।

स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र! गुणैर्निबद्धां
भक्तया मया विविधवर्णविचित्रपुष्पाम् ।
धत्तेजनो य इह कण्ठगतामजस्रं
तं मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः ।।48 ।।

।। इतिश्रीमन्मानतुङ्गाचार्यविरचितं भक्तामरस्तोत्रम् ।।

श्री भक्तामर भाषा पाठ

(श्री कमलकुमारजी शास्त्री 'कुमुद')

भक्त अमर नत मुकुट सुमणियों, की सुप्रभा का जो भासक।
पापरूप अतिसघन तिमिर का, ज्ञान-दिवाकर-सा नाशक ।।
भव-जल पतित जनों को जिसने, दिया आदि में अवलम्बन।
उनके चरण-कमल को करते, सम्यक् बारम्बार नमन् ।।1 ।।

सकल वाङ्मय तत्त्वबोध से, उद्भव पटुतर धी-धारी।
उसी इन्द्र की स्तुति से है, वन्दित जग-जन मनहारी ।।
अति आश्चर्य की स्तुति करता, उसी प्रथम जिनस्वामी की।
जगनामी-सुखधामी तद्भव-शिवगामी अभिरामी की ।।2 ।।

स्तुति को तैयार हुआ हूँ, मैं निर्बुद्धि छोड़के लाज।
विज्ञजनों से अर्चित है प्रभु, मंदबुद्धि की रखना लाज ।।
जल में पड़े चन्द्र-मंडल को, बालक बिना कौन मतिमान।
सहसा उसे पकड़ने वाली, प्रबलेच्छा करता गतिमान ।।3 ।।

हे जिन ! चन्द्रकान्त से बढ़कर, तव गुण विपुल अमल अतिश्वेत।
कह न सकें नर हे ! गुणसागर, सुर-गुरु के सम बुद्धिसमेत ।।
मक्र-नक्र-चक्रादि जन्तु युत, प्रलय पवन से बढ़ा अपार।
कौन भुजाओं से समुद्र के, हो सकता है परले पार ।।4 ।।

वह मैं हूँ कुछ शक्ति न रखकर, भक्ति प्रेरणा से लाचार।
करता हूँ स्तुति प्रभु तेरी, जिसे न पौर्वा-पर्य विचार ।।
निज शिशु की रक्षार्थ आत्म-बल, बिना विचारे क्या न मृगी।
जाती है मृगपति के आगे, शिशु-स्नेह में हुई रंगी ।।5 ।।

अल्पश्रुत हूँ श्रुतवानों से, हास्य कराने का ही धाम।
करती है बाचाल मुझे प्रभु, भक्ति आपकी आठों याम ।।

करती मधुर गान पिक मधु में, जग-जन मनहर अति अभिराम।
उसमें हेतु सरस फल फूलों, से युत हरे-भरे तरु आम।।6।।

जिनवर की स्तुति करने से, चिर संचित भविजन के पाप।
पल भर में भग जाते निश्चित, इधर-उधर अपने ही आप।।
सकल लोक में व्याप्त रात्रि का, भ्रमर सरीखा काला ध्वान्त।
प्रातः रवि की उग्र किरण लख, हो जाता क्षण में प्राणान्त।।7।।

मैं मतिहीन-दीन प्रभु तेरी, शुरू करूँ स्तुति अघ-हान।
प्रभु-प्रभाव ही चित्त हरेगा, सन्तों का निश्चय से मान।।
जैसे कमल-पत्र पर जल-कण, मोती जैसे आभावान।
दिखते हैं फिर छिपते हैं, असली मोती में हे ! भगवान।।8।।

दूर रहे स्तोत्र आपका, जो कि सर्वथा है निर्दोष।
पुण्य कथा ही किन्तु आपकी, हर लेती है कल्मष-कोष।।
प्रभा प्रफुल्लित करती रहती, सर के कमलों को भरपूर।
फेंका करता सूर्य-किरण को, आप रहा करता है दूर।।9।।

त्रिभुवनतिलक जगतपति हे प्रभु! सद्गुरुओं के हे गुरुवर्य।
सद्भक्तों को निजसम करते, इसमें नहीं अधिक आश्चर्य।।
स्वाश्रित जन को निजसम करते, धनी लोग धन धरनी से।
नहीं करें तो उन्हें लाभ क्या? उन धनिकों की करनी से।।10।।

हे अनिमेष ! विलोकनीय प्रभु, तुम्हें देखकर परम-पवित्र।
तोषित होते कभी नहीं हैं, नयन मानवों के अन्यत्र।।
चन्द्रकिरण सम उज्ज्वल निर्मल, क्षीरोदधि का कर जलपान।
कालोदधि का खारा पानी, पीना चाहे कौन पुमान।।11।।

जिन जितने जैसे अणुओं से, निर्मापित प्रभु तेरी देह।
थे उतने वैसे अणु जग में, शांति-रागमय निःसन्देह।।

हे त्रिभुवन ! के शिरोभाग के, अद्वितीय आभूषण-रूप।
इसीलिए तो आप सरीखा, नहीं दूसरों का है रूप।।12।।

कहाँ आपका मुख अतिसुन्दर, सुर-नर उरग नेत्रहारी।
जिसने जीत लिये सब जग के, जितने थे उपमाधारी।।
कहाँ कलंकी बंक चन्द्रमा, रंक-समान कीट-सा दीन।
जो पलाश-सा फीका पड़ता, दिन में होकर के छविहीन।।13।।

तव गुण पूर्ण-शशांक कान्तिमय, कला-कलापों से बढ़के।
तीन लोक में व्याप्त रहे हैं, जो कि स्वच्छता में चढ़के।।
विचरें चाहे जहाँ कि जिनको, जगन्नाथ का एकाधार।
कौन माई का जाया रखता, उन्हें रोकने का अधिकार।।14।।

मद की छकी अमर ललनाएँ, प्रभु के मन में तनिक विकार।
कर न सकी आश्चर्य कौन सा, रह जाती हैं मन को मार।।
गिर-गिर जाते प्रलय पवन से, तो फिर क्या वह मेरु शिखर।
हिल सकता है रंचमात्र भी, पाकर झंझावात प्रखर।।15।।

धूम न बत्ती तैल बिना ही, प्रकट दिखाते तीनों लोक।
गिरि के शिखर उड़ाने वाली, बुझा न सकती मारुत झोक।।
तिस पर सदा प्रकाशित रहते, गिनते नहीं कभी दिन-रात।
ऐसे अनुपम आप दीप हैं, स्वपर प्रकाशक जग विख्यात।।16।।

अस्त न होता कभी न जिसको, ग्रस पाता है राहु प्रबल।
एक साथ बतलाने वाला, तीन लोक का ज्ञान विमल।।
रुकता कभी प्रभाव न जिसका, बादल की आकर के ओट।
ऐसी गौरव-गरिमा वाले, आप अपूर्व दिवाकर कोट।।17।।

मोह महातम दलने वाला, सदा उदित रहने वाला।
राहु न बादल से दबता पर, सदा स्वच्छ रहने वाला।।

विश्वप्रकाशतमुखसरोज तब, अधिककांतिमय शांतिस्वरूप।
है अपूर्व जग का शशिमण्डल, जगतशिरोमणिशिवकाभूप।।18।।

नाथ आपका मुख जब करता, अन्धकार का सत्यानाश।
तब दिन में रवि और रात्रि में, चन्द्रबिम्ब का विफल प्रयास।।
धान्यखेत जब धरती तल के, पके हुये हों अतिअभिराम।
शोर मचाते जल को लादे, हुये घनों से तब क्या काम।।19।।

जैसा शोभित होता प्रभु का, स्वपर-प्रकाशक उत्तम ज्ञान।
हरिहरादि देवों में वैसा, कभी नहीं हो सकता भान।।
अति ज्योतिर्मय महारतन का, जो महत्त्व देखा जाता।
क्या वह किरणाकुलित काँच में, अरे कभी लेखा जाता।।20।।

हरिहरादि देवों का ही मैं, मानू उत्तम अवलोकन।
क्योंकि उन्हें देखने भर से, तुझसे तोषित होता मन।।
है परन्तु क्या तुम्हें देखने से, हे स्वामिन्! मुझको लाभ।
जन्म -जन्म में लुभा न पाते, कोई यह मेरा अमिताभ।।21।।

सौ-सौ नारी सौ-सौ सुत को, जनती रहती सौ-सौ ठौर।
तुम से सुत को जनने वाली, जननी महती क्या है और?
तारागण को सर्व दिशाएँ, धरें नहीं कोई खाली।
पूर्व दिशा ही पूर्ण प्रतापी, दिनपति को जनने वाली।।22।।

तुम को परम पुरुष मुनि मानें, विमल वर्ण रवि तमहारी।
तुम्हें प्राप्त कर मृत्युञ्जय के, बन जाते जन अधिकारी।।
तुम्हें छोड़कर अन्य न कोई, शिवपुर-पथ बतलाता है।
किन्तु विपर्यय मार्ग बताकर, भव-भव में भटकाता है।।23।।

तुम्हें आद्य अक्षय अनन्त प्रभु, एकानेक तथा योगीश।
ब्रह्मा ईश्वर या जगदीश्वर, विदितयोग मुनिनाथ मुनीश।।

विमल ज्ञानमय या मकरध्वज, जगन्नाथ जगपति जगदीश।
इत्यादिक नामों कर माने, सन्त निरन्तर विभो निधीश।।24।।

ज्ञान पूज्य है, अमर आपका, इसीलिए कहलाते बुद्ध।
भुवनत्रय के सुख-संवर्द्धक, अतः तुम्हीं शंकर हो शुद्ध।।
मोक्ष-मार्ग के आद्य प्रवर्त्तक, अतः विधाता कहे गणेश।
तुम सम अवनी पर पुरुषोत्तम, और कौन होगा अखिलेश।।25।।

तीन लोक के दुःखहरण, करने वाले हे तुम्हें ! नमन्।
भू-मण्डल के निर्मल-भूषण आदि जिनेश्वर तुम्हें नमन्।।
हे त्रिभुवन ! के अखिलेश्वर हो, तुमको बारम्बार नमन्।
भव-सागर के शोषक पोषक, भव्य जनों के तुम्हें नमन्।।26।।

गुण समूह एकत्रित होकर, तुझमें यदि पा चुके प्रवेश।
क्या आश्चर्य न मिल पाये हों, अन्य आश्रय उन्हें जिनेश।।
देव कहे जाने वालों से, आश्रित होकर गर्वित दोष।
तेरी ओर न झाँक सके वे, स्वप्नमात्र में हे ! गुणकोष।।27।।

उन्नत तरु अशोक के आश्रित, निर्मल किरणोन्नत वाला।
रूप आपका दिखता सुन्दर, तमहर मनहर छवि वाला।।
वितरण किरण निकर तमहारक, दिनकर घनके अधिक समीप।
नीलाचल पर्वत पर होकर, नीरांजन करता ले दीप।।28।।

मणि-मुक्ता किरणों से चित्रित, अद्भुत शोभित सिंहासन।
कान्तिमान कंचनसा दिखता, जिस पर तव कमनीय बदन।।
उदयाचल के तुंग शिखर से, मानो सहस्र रश्मि वाला।
किरण-जाल फैलाकर निकला, हो करने को उजियाला।।29।।

ढुरते सुन्दर चँवर विमल अति, नवल-कुन्द के पुष्प-समान।
शोभा पाती देह आपकी, रौप्य धवल-सी आभावान।।

कनकाचल के तुंग शृंग से, झर-झर झरता है निर्झर।
चन्द्र-प्रभा सम उछल रही हो, मानो उसके ही तट पर।।30।।

चन्द्र-प्रभ सम झल्लरियाँ से, मणि-मुक्तामय अति कमनीय।
दीप्तिमान् शोभित होते हैं, सिर पर छत्रत्रय भवदीय।।
ऊपर रहकर सूर्य-रश्मि का, रोक रहे हैं प्रखर प्रताप।
मानों वे घोषित करते हैं, त्रिभुवन के परमेश्वर आप।।31।।

ऊँचे स्वर से करने वाली, सर्व दिशाओं में गुञ्जन।
करने वाली तीन लोक के, जन-जन का शुभ-सम्मेलन।।
पीट रही है डंका-'हो सत् धर्म'-राज की हो जय-जय।
इस प्रकार बज रही गगन में, भेरी तव यश की अक्षय।।32।।

कल्पवृक्ष के कुसुम मनोहर, पारिजात एवं मंदार।
गन्धोदक की मन्द वृष्टि, करते हैं प्रमुदित देव उदार।।
तथा साथ ही नभ से बहती, धीमी-धीमी मन्द पवन।
पंक्ति बाँध कर बिखर रहे हों, मानों तेरे दिव्य-वचन।।33।।

तीन लोक की सुन्दरता यदि, मूर्तिमान बन कर आवे।
तन भा-मंडल की छवि लखकर, तव सन्मुख शरमा जावे।।
कोटि सूर्य के ही प्रताप सम, किन्तु नहीं कुछ भी आताप।
जिसके द्वारा चन्द्र सुशीतल, होता निष्प्रभ अपने आप।।34।।

मोक्ष-स्वर्ग के मार्ग प्रदर्शक, प्रभुवर तेरे दिव्य-वचन।
करा रहे हैं 'सत्यधर्म' के, अमर-तत्त्व का दिग्दर्शन।।
सुनकर जग के जीव वस्तुतः, कर लेते अपना उद्धार।
इस प्रकार परिवर्तित होते, निज-निज भाषा के अनुसार।।35।।

जगमगात नख जिसमें शोभें, जैसे नभ में चन्द्रकिरण।
विकसित नूतन सरसीरुह सम, हे प्रभु ! तेरे विमल चरण।।
रखते जहाँ वहीं रचते हैं, स्वर्णकमल, सुरदिव्य ललाम।
अभिनन्दन के योग्य चरण तव, भक्ति रहे उनमें अभिराम।।36।।

धर्म-देशना के विधान में, था जिनवर का जो ऐश्वर्य।
वैसा क्या कुछ अन्य कुदेवों, में भी दिखता है सौन्दर्य।।
जो छवि घोर-तिमिर के नाशक, रवि में है देखी जाती।
वैसी ही क्या अतुल कान्ति, नक्षत्रों में लेखी जाती।।37।।

लाल कपोलों से झरती है, जहाँ निरन्तर मद की धार।
होकर अति मदमस्त कि जिस पर, करते हैं भौंरे गुंजार।।
क्रोधासक्त हुआ यों हाथी, उद्धत ऐरावत सा काल।
देख भक्त छुटकारा पाते, पाकर तब आश्रय तत्काल।।38।।

क्षत-विक्षत कर दिये गजों के, जिसने उन्नत गण्डस्थल।
कांतिमान् गज-मुक्ताओं से, पाट दिया हो अवनी-तल।।
जिन भक्तों को तेरे चरणों, के गिरि की हो उन्नत ओट।
ऐसा सिंह छलाँगें भरकर, क्या उस पर कर सकता चोट।।39।।

प्रलय काल की पवन उठाकर, जिसे बढ़ा देती सब ओर।
फिकें फुलिंगें ऊपर तिरछे, अंगारों का भी होवे जोर।।
भुवनत्रय को निगला चाहे, आती हुई अग्नि भभकार।
प्रभु के नाम-मंत्र जल से वह, बुझ जाती है उसही बार।।40।।

कंठ कोकिला सा अति काला, क्रोधित हो फण किया विशाल।
लाल-लाल लोचन करके यदि, झपटै नाग महा विकराल।।
नाम रूप तब अहि-दमनी का, लिया जिन्होंने हो आश्रय।
पग रखकर निश्शंक नाग पर, गमन करें वे नर निर्भय।।41।।

जहाँ अश्व की और गजों की, चीत्कार सुन पड़ती घोर।
शूरवीर नृप की सेनाएँ, रव करती हों चारों ओर।।
वहाँ अकेला शक्तिहीन नर, जप कर सुन्दर तेरा नाम।।
सूर्य तिमिर सम शूर-सैन्य का, कर देता है काम तमाम।।42।।

रण में भालों से वेधित गज, तन से बहता रक्त अपार।
वीर लड़ाकू जहँ आतुर हैं, रुधिर-नदी करने को पार।।
भक्त तुम्हारा हो निराश तहँ, लख अरिसेना दुर्जयरूप।
तव पादारविन्द पा आश्रय, जय पाता उपहार-स्वरूप।।43।।

वह समुद्र कि जिसमें होवें, मच्छ मगर एवं घड़ियाल।
तूफां लेकर उठती होवें, भयकारी लहरें उत्ताल।।
भ्रमर-चक्र में फँसे हुये हों, बीचोंबीच अगर जलयान।
छुटकारा पा जाते दुःख से, करने वाले तेरा ध्यान।।44।।

असहनीय उत्पन्न हुआ हो, विकट जलोदर पीड़ा भार।
जीने की आशा छोड़ी हो, देख दशा दयनीय अपार।।
ऐसे व्याकुल मानव पाकर, तेरी पद-रज संजीवन।
स्वास्थ्य-लाभकर बनता उसका, कामदेव सा सुन्दर तन।।45।।

लोह-शृंखला से जकड़ी है, नख से सिख तक देह समस्त।
घुटने-जँघे छिले बेड़ियों से, जो अधीर जो है अतित्रस्त।।
भगवन् ऐसे बन्दीजन भी, तेरे नाम-मंत्र की जाप।
जप कर गत-बन्धन हो जाते, क्षण भर में अपने ही आप।।46।।

वृषभेश्वर के गुण स्तवन का, करते निश-दिन जो चिंतन।
भय भी भयाकुलित हो उनसे, भग जाता है हे ! स्वामिन्।।
कुंजर-समर-सिंह-शोक-रुज, अहि दावानल कारागार।
इनके अतिभीषण दुःखों का, हो जाता क्षण में संहार।।47।।

हे प्रभु ! तेरे गुणोद्यान की, क्यारी से चुन दिव्य-ललाम।
गूँथी विविध वर्ण सुमनों की, गुणमाला सुन्दर अभिराम।।
श्रद्धासहित भविकजन को भी, कण्ठाभरण बनाते हैं।
मानतुंग-सम निश्चित सुन्दर, मोक्ष-लक्ष्मी पाते हैं।।48।।

इत्याशीर्वादः।

भक्तामर स्तोत्र

(पद्यानुवाद - आचार्य श्री विशदसागरजी)

दोहा

वृषभनाथ बृषभेष जिन, हो वृष के अवतार।
तारण तरण जहाज तव, करो 'विशद' भवपार।।

(चौपाई)

भक्त अमर नत मुकुट छवि देय, गहन पाप तम को हर लेय।
भव सर पतित को शरण विशाल, 'विशद' नमन जिन पद नत भाल।।1।।

द्वादशांग ज्ञाता सुर देव, जिनवर की करते नित सेव।
शब्द अर्थ पद छन्द बनाय, थुति करता हूँ मैं सिरनाय।।2।।

मंद बुद्धि हूँ अति अज्ञान, करता हूँ प्रभु का गुणगान।
जल में चन्द्र बिम्ब को पाय, बालक मन को ही ललचाय।।3।।

गुणसागर प्रभु गुण की खान, सुर गुरु न कर सके बखान।
क्षुब्ध जंतु युत प्रलय अपार, सागर तैर करे को पार।।4।।

फिर भी 'विशद' भक्ति उर लाय, शक्ति हीन थुति करूँ बनाय।
हिरण शक्ति क्या छोड़ न जाय, मृगपति ढिग निज शिशु न बचाय।।5।।

मैं अल्पज्ञ हास्य को पात्र, भक्ति हेतु है पुलकित गात।
आम्रकली लख ऋतु बसंत, कोयल कुहुके कर पुलकंत।।6।।

पाप कर्म होता निर्मूल, तव थुति जो करता अनुकूल।
सघन तिमिर ज्यों रवि को पाय, क्षण में शीघ्र नष्ट हो जाय।।7।।

थुति करता हूँ मैं मति मंद, मन हरता मन्त्रों का छंद।
कमल पत्र पर जल कण जाय, ज्यों मुक्ता की शोभा पाय।।8।।

तव संस्तुति की कथा विशाल, नाम काटता कर्म कराल।
दिनकर रहें बहुत ही दूर, कमल खिलाता सर में पूर।।9।।

भवि थुतिकर तुम सम हो जाय, या में क्या अचरज कहलाय?
आश्रित करें न आप समान, ऐसे प्रभु का क्या सम्मान ?।।10।।

नयन आपके तन को देख, और नहीं फिर लगते नेक।
क्षीर नीर जो करता पान, क्षार नीर क्यों करे पुमान ?।।11।।

प्रभु तुम शांत मनोहर रूप, परमाणु सम्पूर्ण अनूप।
तुम सा नहीं है जग में कोय, दर्शन की अभिलाषा होय।।12।।

तव अनुपम मुख है भगवान, निरुपम है अति शोभामान।
चन्द्रकांति दिन में छिप जाय, तब मुख शोभा निशदिन पाय।।13।।

'विशद' गुणों के प्रभु भण्डार, तीन लोक को करते पार।
एक नाथ हो आश्रयवान, उन विचरण को रोके आन।।14।।

अचल चलावें प्रलय समीर, मेरु न हिलता हो अतिधीर।
सुर तिय न कर सके विकार, मन प्रभु का स्थिर अविकार।।15।।

जले तेल बाती बिन श्वांस, त्रिभुवन का प्रभु करें प्रकाश।
दीप धूप बिन जलता जाय, तूफां उसको बुझा न पाय।।16।।

ग्रसे राहु न होते अस्त, प्रभु जी रवि से अधिक प्रशस्त।
मेघ ढकें न अती प्रकाश, ज्ञान भानु हो अद्भुत खास।।17।।

उदित नित्य मुख जो तम हार, मेघ राहु से है विनिवार।
सौम्य मुखाम्बुज चन्द्र समान, लोक प्रकाशी कांति महान।।18।।

तमहर तव मुख चन्द्र महान, कहाँ करे निशदिन शशिभान।
खेत में ज्यों पक जाये धान, जलधर वर्षा है निष्काम।।19।।

शोभे ज्ञान तुम्हारे पास, हरि हर में न उसका वास।
कांति महामणि में जो होय, कम्ब में होती क्या वह सोय ?।।20।।

देखे हरि हरादि कई देव, तुम से आज मिले जिनदेव।
श्रद्धा हृदय जगी तव पाय, अन्य देव अब नहीं सुहाय।।21।।

सतनारी सत सुत उपजाय, तुम समान कोई न पाय।
रवि का पूरब में अवतार, तारागण के कई आधार।। 22 ।।

तुमको परम पुरुष मुनि माने, तमहर अमल सूर्यसम जाने।
मृत्युंजय हो प्रभु को पाय, शरण छोड़ जन जगत भ्रमाय।।23।।

भोगाव्यय असंख्य विभु ईश्वर, अचिन्त्य आद्य ब्रह्मा योगीश्वर।
अनेक ज्ञानमय अमल अनंत, कामकेतु इक कहते संत।।24।।

बुध विबुधार्चित बुद्ध महान, शंकर सुखकारी भगवान।
ब्रह्मा शिवपथ दाता नाथ !, सर्वश्रेष्ठ पुरुषोत्तम साथ ।।25।।

त्रिभुवन दुखहर तुम्हें प्रणाम, भूतल भूषण तुम्हें प्रणाम।
त्रिभुवन स्वामी तुम्हें प्रणाम, भवसर शोषक तुम्हें प्रणाम।।26।।

शरण में आये सब गुण आन, विस्मय क्या कोई मिला न थान ?
मुख न देखें स्वप्न में दोष, सारे जग में प्रभु निर्दोष।।27।।

तरु अशोक तल में भगवान, उज्ज्वल तन अति शोभामान।
मेघ निकट दिनकर के होय, उस भांति दिखते प्रभु सोय।।28।।

मणिमय सिंहासन पर देव, तव तन शोभे स्वर्णिम एव।
रवि का उदयाचल पर रूप, उदित सूर्य सम दिखे स्वरूप।।29।।

ढुरते चामर शुक्ल विशेष, स्वर्णिम शोभित है तव भेष।
ज्यों मेरु पर बहती धार, स्वर्णमयी पर्वत मनहार।।30।।

तीन छत्र तिय लोक समान, मणिमय शशि सम शोभावान।
सूर्य ताप का करे विनाश, श्री जिन के गुण करे प्रकाश।।31।।

दश दिशि ध्वनि गूँजें गम्भीर, जय घोषक जिनवर की धीर।
तीन लोक में अति सुखदाय, सुयश दुन्दुभि बाजा गाय।।32।।

मंद मरुत गंधोदक सार, सुरगुरु सुमन अनेक प्रकार।
दिव्य वचन श्री मुख से खिरें, पुष्प वृष्टि नभ से ज्यों झरें।।33।।

त्रिजग कांति फीकी पढ़ जाय, भामण्डल की शोभा पाय।
चन्द्र कांति सम शीतल होय, सारे जग का आतप खोय।।34।।

स्वर्ग मोक्ष की राह दिखाय, द्रव्य तत्व गुण को प्रगटाय।
दिव्य ध्वनि है 'विशद' अनूप, ॐकार सब भाषा रूप।।35।।

भवि जीवों का हो उपकार, प्रभु इच्छा बिन करें विहार।
जहँ जहँ प्रभु के पग पढ़ जायँ, तहँ तहँ पंकज देव रचायँ।।36।।

धर्म कथन में आप समान, अन्य देव न पाते आन।
तारा रवि की द्युति क्या पाय ? वैभव देव न अन्य लहाय।।37।।

गण्डस्थल मद जल से सने, गीत गूँजते अतिशय घने।
मत्त कुपित होकर गज आय, फिर भी भक्त नहीं भय खाय।।38।।

भिदे कुम्भ गज मुक्ता द्वारा, हो भूषित भू भाग ही सारा।
तव भक्तों का केहरि आन, न कर सके जरा भी हान।।39।।

प्रलय पवन अग्नि घन-घोर, उठें तिलंगे चारों ओर।
जग भक्षण हेतु आक्रान्त, नाम रूप जल से हो शांत।।40।।

काला नाग कुपित हो जाय, तो भी निर्भयता को पाय।
हाथ में नाग दमन ज्यों पाय, भक्त आपका बढ़ता जाय।। 41 ।।

हय गय भयकारी रव होय, शक्तीशाली नृप दल सोय।
नाश होय कर प्रभु यशगान, रवि ज्यों करे तिमिर की हान।।42।।

भाला गज के सिर लग जाय, सिर से रक्त की धार बहाय।
रण में दास विजय तव पाय, दुर्जय शत्रु भी आ जाय।।43।।

क्षुब्ध जलधि बड़वानल होय, मकरादिक भयकारी सोय।
करें आपका जो भी ध्यान, पार करें निर्भय हो थान।।44।।

रोग जलोदर होवे खास, चिन्तित दशा तजी हो आस।
अमृत प्रभु पद रज सिर नाय, मदन रूपता को वह पाय।।45।।

सांकल से हो बद्ध शरीर, खून से लथपत होवे पीर।
नाम मंत्र तव जपते लोग, शीघ्र बंध का होय वियोग।।46।।

गज अहि दव रण बंधन रोग, मृग भय सिंधु का संयोग।
सारे भय भी हों भयभीत, थुति प्रभु की जो करें विनीत।।47।।

विविध पुष्प जिनगुण की माल, प्रभु की संस्तुती रची विशाल।
कंठ में धारण जो कर लेय, मानतुंग सम लक्ष्मी सेय।।48।।

दोहा- मानतुंग की कृती का, भाषामय अनुवाद।
'विशद' शांति आनन्द का, भोग करे कर याद।।

।। इति भक्तामरस्तोत्रम् ।।

।। विशद वाणी ।।

{OSXJr Ho$ ASYoao g\$a _| Xrn ObmVo a{hEŸ&
AmñVo AmñVo hr ghr amh na MbVo MbmVo a{hEŸ&
nVm Zht H$~ ^d `mÌm nyU© hmo OmE OrdZ H$s,
ha g_` OrdZ _| lÕm Ho$ \y$b {IbmVo a{hEoŸ&&

– आचार्य विशदसागर

सुप्रभात-स्तोत्रम्

यत्स्वर्गा-वतरोत्सवे यदभवज्, जन्मा-भिषेकोत्सवे,
यद्दीक्षा ग्रहणोत्सवे यदखिल, ज्ञान-प्रकाशोत्सवे।
यन्निर्वाण-गमोत्सवे जिनपतेः, पूजाद्भुतं तद्भवैः,
संगीत स्तुति मंगलैः प्रसरतां, मे सुप्रभातोत्सवः ।।1 ।।

श्रीमन्नतामर किरीट मणिप्रभाभि,
रालीढपाद युग दुर्द्धर कर्मदूर।
श्रीनाभिनन्दन! जिनाजित! शम्भवाख्य !
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ।।2 ।।

छत्रत्रय-प्रचल चामर-वीज्यमान,
देवाभिनन्दनमुने! सुमते! जिनेन्द्र।
पद्मप्रभा रुणमणि द्युतिभासुराङ्ग,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ।।3 ।।

अर्हन् सुपार्श्व कदली-दलवर्ण गात्र,
प्रालेय तार-गिरि मौक्तिक वर्णगौर।
चन्द्रप्रभ-स्फटिक-पाण्डु र-पुष्पदन्त!
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ।।4 ।।

सन्तप्त काञ्चनरुचे जिन-शीतलाख्य,
श्रेयान् विनष्ट-दुरिताष्ट-कलङ्कपंक।
बंधूक-बंधुररुचे जिन वासुपूज्य,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ।।5 ।।

उद्दण्ड-दर्पक-रिपो विमला-मलाङ्ग,
स्थेमन्-ननन्त-जिदनन्त-सुखाम्बुराशे ।
दुष्कर्म-कल्मष-विवर्जित-धर्मनाथ,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ।।6 ।।

देवामरी-कु सुम-सन्निभ-शान्तिनाथ,
कुन्थो! दयागुण विभूषण भूषिताङ्ग।

देवाधिदेव-भगवन्-नरतीर्थ-नाथ,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ।।7 ।।

यन्मोह मल्लमद-भञ्जन-मल्लिनाथ,
क्षेमङ्क रा-वितथ-शासन-सुव्रताख्य ।
सत्-सम्पदा प्रशमितो नमि नामधेय,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ।।8 ।।

तापिच्छ-गुच्छ-रुचिरोज्ज्वल-नेमिनाथ,
घोरोपसर्ग-विजयिन् जिन-पार्श्वनाथ।
स्याद्वाद सूक्ति मणि-दर्पण वर्द्धमान,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ।।9 ।।

प्रालेय-नील हरि-तारुण पीत-भासं,
यन्मूर्ति-मव्यय सुखावसथं मुनीन्द्राः।
ध्यायन्ति सप्तति-शतं जिन-वल्लभानां,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ।।10 ।।

सुप्रभांत सुनक्षत्रं, माङ्गल्यं परिकीर्तितम्।
चतुर्विंशति तीर्थानां, सुप्रभातं दिने-दिने ।।11 ।।

सुप्रभातं सुनक्षत्रं, श्रेयः प्रत्यभिनन्दितम्।
देवता ऋषयः सिद्धाः, सुप्रभातं दिने-दिने ।।12 ।।

सुप्रभातं तवैकस्य, वृषभस्य महात्मनः !
येन प्रवर्तितं तीर्थं, भव्यसत्त्व सुखावहम् ।।13 ।।

सुप्रभातं जिनेन्द्राणां, ज्ञानोन्मीलितचक्षुषाम्।
अज्ञानतिमिरांधानां, नित्यमस्तमितो रविः ।।14 ।।

सुप्रभातं जिनेन्द्रस्य, वीरः कमललोचनः।
येन कर्माटवीदग्धा, शुक्लध्यानोग्र वह्निना ।।15 ।।

सुप्रभातं सुनक्षत्रं, सुकल्याणं सुमङ्गलम्।
त्रैलोक्यहितकर्तृणां, जिनानामेव शासनम् ।।16 ।।

।। इति सुप्रभात-स्तोत्रम् ।।

सुप्रभात स्तोत्र

–आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

गर्भ जन्म के उत्सव में अरु, दीक्षा ग्रहण महोत्सव में।
अखिल ज्ञान कल्याणक में भी, मोक्ष गमन के उत्सव में।।
भक्ति गीत प्रार्थना मंगल, द्वारा अनुपम अतिशय हो।
जिनपद में हम शीष झुकाते, मम् प्रभात मंगलमय हो।।1।।

नमते देवों के मुकुटों की, मणियों की कांति से युक्त।
चरण कमल द्वय शोभित होते, दुरित कर्म से हुए विमुक्त।।
नाभिनंदन अजितनाथ जिन, संभव जिनकी जय–जय हो।
ध्यान आपका रहे निरंतर, मम् प्रभात मंगलमय हो।।2।।

छत्र त्रय से शोभित होते, ढुरते हुए चँवर संयुक्त।
अभिनंदन जिन मुनिसुव्रत जिन, स्वर्णमयी कांति से युक्त।।
अरुणमणि सम शोभित होते, पद्म प्रभु की जय–जय हो।
ध्यान आपका रहे निरन्तर, मम् प्रभात मंगलमय हो।।3।।

कदली दल सम हरित वर्णमय, श्री सुपार्श्व जिनवर का रूप।
ढका हुआ ज्यों बर्फ से हिमगिरि, चन्द्रप्रभु का है स्वरूप।।
श्वेत वर्ण स्फटिक मणीसम, पुष्पदंत की जय–जय हो।
ध्यान आपका रहे निरन्तर, मम् प्रभात मंगलमय हो।।4।।

तप्त स्वर्ण सम कांति वाले, शीतलनाथ जिनेन्द्र स्वामी।
दुरित कर्म वसु नष्ट किए हैं, श्रेयांसनाथ मोक्षगामी।।
बंधूक पुष्प सम अरुण मनोहर, वासुपूज्य की जय–जय हो।
ध्यान आपका रहे निरन्तर, मम् प्रभात मंगलमय हो।।5।।

उद्दण्ड दर्पमय गज के मद को, विमलनाथ जिन नाश किए।
स्थिर मन करके अनंत जिन, सुख अनंत में वास किए।।

दुष्ट कर्म मल रहित जिनेश्वर, धर्मनाथ की जय–जय हो।
ध्यान आपका रहे निरन्तर, मम् प्रभात मंगलमय हो।।6।।

देवामरी वृक्ष के फूलों, जैसे शोभित शांतिनाथ।
दयारूप गुण के आभूषण से, भूषित श्री कुंथुनाथ।।
देवों के भी देव जिनेश्वर, अरहनाथ की जय–जय हो।
ध्यान आपका रहे निरन्तर, मम् प्रभात मंगलमय हो।।7।।

मोह मल्ल के मद का भंजन, करते हैं श्री मल्लिनाथ।
सत् शासन युत मुनि सुव्रतजी, झुका रहे हम चरणों माथ।।
त्यागा राज्य संपदा वैभव, नमिनाथ की जय–जय हो।
ध्यान आपका रहे निरन्तर, मम् प्रभात मंगलमय हो।।8।।

तरु तमाल के पुष्पों सम हैं, नेमिनाथ की कांति महान्।
जीते हैं उपसर्ग घोर अति, श्री जिन पार्श्वनाथ भगवान।।
स्याद्वाद सूक्ति मणि दर्पण, वर्द्धमान की जय–जय हो।
ध्यान आपका रहे निरन्तर, मम् प्रभात मंगलमय हो।।9।।

धवल नील अरु हरित लाल रंग, पीले में शोभा पाते।
वीतराग अविनाशी सुखमय, गणधरादि जिनको ध्याते।।
एक सो सत्तर एक काल के, तीर्थंकर की जय–जय हो।
ध्यान आपका रहे निरन्तर, मम् प्रभात मंगलमय हो।।10।।

चौपाई

चौबीस तीर्थंकर जिनदेव, सुप्रभात नक्षत्र सुएव।
प्रतिदिन स्तुति मंगल सोय, मम् प्रभात मंगलमय होय।।11।।

परम सिद्ध ऋषिवर नवदेव, सुप्रभात नक्षत्र सुएव।
श्रेय से खुश करते हैं सोय, मम् प्रभात मंगलमय होय।।12।।

धर्म के आप महात्मन् एक, करते तीर्थ प्रवर्तन नेक।
भविजन जिससे सुखमय होय, मम् प्रभात मंगलमय होय।।13।।

जीवों में छाया अज्ञान, देते जिनवर सम्यक् ज्ञान।
तम को जैसे सूरज खोय, मम् प्रभात मंगलमय होय।।14।।

शुक्ल ध्यान की अग्नि माँय, कर्मों का वन दिये जलाय।
नयन कमल सम जिनके सोय, मम् प्रभात मंगलमय होय।।15।।

सुनक्षत्र मंगल कल्याण, तीन लोक का करते त्राण।
शासन 'विशद' प्रभु का सोय, मम् प्रभात मंगलमय होय।।16।।

।। इति सुप्रभात ।।

श्री महावीराष्टकस्तोत्रम्

(शिखरिणी छन्दः)

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः
समं भान्ति ध्रौव्य-व्यय-जनि-लसन्तोऽन्तरहिताः।
जगत्साक्षी मार्ग-प्रकटन-परो भानुरिव यो
महावीर-स्वामी नयन-पथगामी भवतु मे।।1।।

अताम्रं यच्चक्षुः कमल - युगलं स्पन्द - रहितं
जनान्कोपा-पायं प्रकटयति वाभ्यन्तर-मपि।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वातिविमला
महावीर-स्वामी नयन पथगामी भवतु मे।।2।।

नमन्नाकेन्द्राली-मुकुटमणि-भा-जाल-जटिलं
लसत्पादाम्भोज - द्वयमिह यदीयं तनुभृताम्।
भवज्ज्वाला-शान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि
महावीर-स्वामी नयन पथगामी भवतु मे।।3।।

यदर्चा-भावेन प्रमुदित-मना दर्दुर इह
क्षणादासीत्स्वर्गी गुण-गण-समृद्धः सुखनिधिः।
लभन्ते सद्भक्ताः शिव सुख-समाजं किमु तदा
महावीर-स्वामी नयन पथगामी भवतु मे।।4।।

कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगत-तनुर्ज्ञान-निवहो,
विचित्रात्माप्येको नृपति-वर सिद्धार्थ-तनयः।
अजन्मापि श्रीमान् विगत-भव-रागोऽद्भुत-गतिर्
महावीर-स्वामी नयन पथगामी भवतु मे।।5।।

यदीया वाग्गङ्गा विविध-नय-कल्लोल-विमला,
बृहज्ज्ञानाम्भोभि-र्जगति जनतां या स्नपयति।
इदानीमप्येषा बुध-जन-मरालैः परिचिता
महावीर-स्वामी नयन पथगामी भवतु मे।।6।।

अनिर्वारोद्रेकस्, त्रिभुवन-जयी काम-सुभटः
कुमारावस्थाया-, मपि निज-बलाद्येन विजितः।
स्फुरन्-नित्यानन्द, प्रशम-पद-राज्याय स जिनः
महावीर-स्वामी नयन पथगामी भवतु मे।।7।।

महामोहातङ्क-, प्रशमनपराकस्मिक-भिषग्
निरापेक्षो बन्धु-, र्विदित-महिमा मङ्गलकरः।
शरण्यः साधूनां, भव-भयभृता-मुत्तमगुणो,
महावीर-स्वामी नयन पथगामी भवतु मे।।8।।

महावीराष्टकं स्तोत्रं, भक्त्या 'भागेन्दुना' कृतम्।
यः पठेच्छृणुयाच्चापि, स याति परमां गतिम्।।9।।

।। इति श्रीमहावीराष्टकस्तोत्रम् ।।

श्री वर्धमानाष्टक स्तोत्र

जनन-जलधि-सेतु:, दु:ख-विध्वंस-हेतु:,
निहितमकर केतुर्, वारितानिष्ट-हेतु: ।
कुमत समर हेतुर्, नष्ट नि:शेष धातु:,
जयति जयति चन्द्रो, वर्द्धमानो जिनेन्द्र: ।।1।।

समय सदन कर्त्ता, सार संसार हर्ता,
सकल भुवन भर्त्ता, भूरि कल्याण धर्ता ।
परम सुख समर्त्ता, सर्व संदेह हर्ता,
जयति जयति चन्द्रो, वर्धमानो जिनेन्द्र: ।।2 ।।

कुगति पथ मनेता, मोक्ष मार्गस्य नेता,
प्रकृति गहन हंता, तत्व संघात नंता ।
गगन गमन गंता, मुक्ति रामाभिकंता,
जयति जयति चन्द्रो, वर्धमानो जिनेन्द्र: ।।3।।

सकल जलद नादो, निर्जिताशेष वादो,
जयति चरण पादो, बस्तु तत्वं जगादो ।
जय भुवन कृपादो, ऽनेककोपाग्नि-कंदो,
जयति जयति चन्द्रो वर्धमानो जिनेन्द्र: ।।4 ।।

प्रबल बल विशालो, मुक्ति कांता रसालो,
विमल गुण मरालो, नित्य कल्लोल मालो ।
विगति सरण लीलो, धारिता नित्य शीलो,
जयति जयति चन्द्रो वर्धमानो जिनेन्द्र: ।।5 ।।

मदन मद विदारी, चारु चारित्रधारी,
नरक गति निवारी, स्वर्ग मोक्षावतारी ।
विदित त्रैलोक्य सारी, केवल ज्ञान धारी,
जयति जयति चन्द्रो, वर्धमानो जिनेन्द्र: ।।6 ।।

विषय विष निवासो, भूरि भाषा निवासो,
गत भव नय पासो, मुक्ति-कांता निवासो ।
करण सुख निवासो, कर्ण सम्पूर्ण तासो,
जयति जयति चन्द्रो, वर्धमानो जिनेन्द्र: ।।7 ।।

वचन रचन धीर:, पाप धूलि समीर:,
कनक निकन गौर:, क्रूर कर्मारि सूर: ।
कलुष दहन नीर:, पातिता नंग वीर:,
जयति जयति चन्द्रो, वर्धमानो जिनेन्द्र: ।।8 ।।

।। इति समाप्तम् ।।

।। विशद वाणी ।।

_oar {OÝXJr Voao Xa no gåhb OmE±Ÿ&
oao erf no Voam Amerf H$m H$a OmE±Ÿ&&
AmHo$hmoVo^r_oar {OÝXJr dramZŠ`m| ah|Ÿ&
{OÝXJr H$m JwbeZ {deX Jwbm| go ^a OmE±Ÿ&&

– आचार्य विशदसागर

श्री सरस्वतीस्तोत्रम्

चन्द्रार्ककोटिघटितोज्ज्वलदिव्यमूर्ते
श्रीचन्द्रिकाकलित-निर्मल-शुभ्रवस्त्रे।
कामार्थदायि-कलहंस-समाधिरुढे
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि।।1।।

देवासुरेन्द्रनतमौलिमणिप्ररोचिः
श्रीमंजरी निविड-रंजित पाद पद्मे।
नीलालके प्रमद-हस्तिसमानयाने
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि।।2।।

केयूर-हार-मणि-कुंडल-मुद्रिकाद्यैः
सर्वांग-भूषण-नरेन्द्र-मुनीन्द्र वंद्ये।
नाना सुरत्नवरनिर्मलमौलियुक्ते
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि।।3।।

मंजीरकोत्कनककंकणकिंकणीनां
काञ्चयाश्च झंकृतरवेण विराजमाने।
सद्धर्म वारिनिधिसंततिवर्धमाने
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि।।4।।

कंकेलि-पल्लव-विनिंदित-पाणियुग्मे
पद्मासने दिवस-पद्मसमान वक्त्रे।
जैनेन्द्रवक्त्र-भवदिव्य-समस्तभाषे
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि।।5।।

अर्द्धेन्दुमंडितजटा-ललितस्वरूपे
शास्त्रप्रकाशिनि समस्तकलाधिनाथे।

चिन्मुद्रिका जपसरामय पुस्तकांके
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि।।6।।

डिंडीरपिंड हिमशङ्खसिताभ्रहारे
पूणेन्दुबिंबरुचिशोभित दिव्यगात्रे।
चांचल्यमानमृगशावललाटनेत्रे
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि।।7।।

पूज्ये पवित्रकरणोन्नतकामरूपे
नित्यं फणीन्द्र गरुड़ाधिप किं नरेन्द्रैः।
विद्याधरेन्द्र सुरयक्षसमस्तवृन्दैः
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि।।8।।

***

श्री सरस्वती नाम स्तोत्रम्

सरस्वत्या प्रसादेन काव्यं कुर्वन्ति मानवाः।
तस्मान्निश्चलभावेन पूजनीया सरस्वती।।1।।

श्री सर्वज्ञमुखोत्पन्ना भारती बहुभाषिणी।
अज्ञानतिमिरं हन्ति विद्याबहुविकासिनी।।2।।

सरस्वती मया दृष्टा दिव्याकमललोचना।
हंसस्कन्धसमारुढ़ा वीणापुस्तकधारिणी।।3।।

प्रथमं भारती नाम द्वितीयं च सरस्वती।
तृतीयं शारदा देवि चतुर्थं हंसगामिनी।।4।।

पंचमं विदुषां माता षष्ठं वागीश्वरि तथा।
कुमारी सप्तमं प्रोक्तं अष्टमं ब्रह्मचारिणी।।5।।

नवमं च जगन्माता दशमं ब्राह्मिणी तथा।
एकादशं तु ब्रह्माणी द्वादशं वरदा भवेत्।।6।।

वाणी त्रयोदशं नाम भाषा चैव चतुर्दशम्।
पंचदशं तु श्रुतदेवी षोडशं गोर्निगद्यते।।7।।

एतानि श्रुतनामानि प्रातरुत्थाय च पठेत्।
तस्य संतुष्यति माता शारदा वरदा भवेत्।।8।।

सरस्वती नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणी।
विद्यारंभ करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा।।9।।

***

सरस्वती स्तोत्र

–आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

कोटी चन्द्र सूर्य से भी अति, उज्ज्वल दिव्य मूर्ति पावन।
धवल चांदनी से अति निर्मल, शुभ्र वस्त्र अति मनभावन।।
समतामय कामार्थ दायिनी, हंसारूढ़ दिव्य आसन।
रक्षा करो मात जिनवाणी, प्रतिदिन बारंबार नमन्।।1।।

नमित सुरासुर के मुकुटों की, मणिमय आभा कांतीमान।
सघन मंजरी से अनुरंजित, पाद पद्म हैं आभावान।।
नील अलीसम केश सुसुंदर, प्रमद हस्ति सम गगन गमन।
रक्षा करो मात जिनवाणी, प्रतिदिन बारंबार नमन्।।2।।

मुक्तामणि से निर्मित कुण्डल, हार मुद्रिका अरु केयूर।
निर्मल रत्नावलि सुसज्जित, मुकुट सुशोभित है भरपूर।।

सर्व अंग भूषण से सज्जति, नर मुनीन्द्र भी करें नमन्।
रक्षा करो मात जिनवाणी, प्रतिदिन बारंबार नमन्।।3।।

कंकण कनक करधनी सुंदर, कंठ में शोभित कंठाहार।
नूपुर झंकृत होते अनुपम, इत्यादि शोभित उपहार।।
धर्म वारि निध की संतति को, नित प्रति करते हैं वर्धन।
रक्षा करो मात जिनवाणी, प्रतिदिन बारंबार नमन्।।4।।

कदली दल को निंदित करते, मृदुतम जिनके दोनों हाथ।
विकसित कमल समान सुमुख है, कमलासन पर शोभित नाथ।।
सब भाषामय दिव्य देशना, जिन मुख से निःसृत पावन।
रक्षा करो मात जिनवाणी, प्रतिदिन बारंबार नमन्।।5।।

अर्ध चन्द्र सम जटा सुमंडित, कला निधी सुंदर तम रूप।
धारण किए गोद में पुस्तक, जिनका चित् चैतन्य स्वरूप।।
सर्व शास्त्र का करे प्रकाशन, अजपाजाप मय शुभ आसन।
रक्षा करो मात जिनवाणी, प्रतिदिन बारंबार नमन्।।6।।

सागर फेन समान सुसुंदर शंख लिए हैं बर्फ समान।
पूर्ण चन्द्रमा सम शोभित तन, अभ्रहार ज्यों शोभावान।।
दिव्य ललाट सहित चंचल अति, हिरणी शावक समलोचन।
रक्षा करो मात जिनवाणी, प्रतिदिन बारंबार नमन्।।7।।

काम रूपिणी हे ! करणोन्नत, जगत् पूज्य तुम परम पवित्र।
नाग गरुण किन्नर के स्वामी, पूजा करते सुर नर नित्य।।
सर्व यक्ष विद्या धरेन्द्र नित 'विशद' करें तुमको वन्दन।
रक्षा करो मात जिनवाणी, प्रतिदिन बारंबार नमन्।।8।।

***

सरस्वती नाम स्तोत्र

–आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

सरस्वती की कृपा से मानव, करें काव्य की संरचना।
इसीलिए निश्चल भावों से, पूज्य सरस्वती को जपना।।
श्री सर्वज्ञ कथित जिनवाणी, बहु भाषामय जिनका ज्ञान।
हनन करे अज्ञान तिमिर का, विद्या का करती गुणगान।।1।।

दिव्य कमल लोचन से देवी, सरस्वती देखो हमको।
हंसारूढ़ सुपुस्तक वीणा, धारी वंदन है तुमको ।।
प्रथम भारती नाम आपका, द्वितीय सरस्वती है नाम।
तीजा नाम शारदा देवी, हंसगामिनी चौथानाम।।2।।

विदुषां माता नाम पाँचवां, वागीश्वरी है छठवां नाम।
सप्तम नाम कुमारी पावन, ब्रह्मचारिणी अष्टम नाम।।
नौवाँ नाम जगत् माता है, ब्राह्मिणी जिनका दशवां नाम
ग्यारहवां जानो ब्रह्माणी, वरदा है बारहवां नाम।।3।।

वाणी नाम कहा तेरहवां, चौदहवां है भाषा नाम।
श्रुतदेवी है नाम पंचदश, सोलहवां है गौरी नाम।।
प्रात: उठकर श्रुतदेवी के, इन सब नामों को पढ़ते।
कर देती संतुष्ट सुमाता, विद्या में आगे बढ़ते।।4।।

इच्छित वर देने वाली, हे सरस्वती ! है तुम्हें नमन्।
सिद्धि दो हमको हे माता! काम रूपिणी तुम्हे नमन्।।
विद्या का आरंभ करूँ मैं, हे ! ब्रह्माणी तुम्हे नमन्।
'विशद' ज्ञान को देने वाली, श्री जिनवाणी तुम्हें नमन्।।5।।

***

गोम्मटेस–थुदि (प्राकृत)

विसट्ट कंदोट्ट दलाणुयारं, सुलोयणं चंद–समाण–तुण्डं।
घोणाजियं चम्पय–पुप्फसोहं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।1।।

अच्छाय–सच्छं जलकंत–गण्डं, आबाहु–दोलंत–सुकण्णपासं।
गइन्द–सुण्डुज्जल–बाहुदण्डं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।2।।

सुकण्ठ सोहा–जिय दिव्व–संखं, हिमालयुद्दाम–विसाल–कंधं।
सुपेक्खणिज्जायल–सुट्ठु–मज्झं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।3।।

विंज्झायलग्गे पविभासमाणं, सिहामणिं सव्व–सुचेंदियाणं।
तिलोय–संतोसय–पुण्णचंदं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।4।।

लया–समक्कंत–महासरीरं, भव्वावलीलद्ध–सुकप्परुक्खं।
देविंदविंदच्चिय–पायपोम्मं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।5।।

दियंबरो जो ण च भीइ–जुत्तो, ण चांबरे सत्तमणो विसुद्धो।
सप्पादि–जंतु–प्फुसदो ण कंपो, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।6।।

आसां ण जो पोक्खदि सच्छदिट्ठी, सोक्खे ण वाञ्छा हयदोसमूलं।
विरायभावं भरहे विसल्लं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।7।।

उपाहि–मुत्तं धण–धाम–वज्जियं, सुसम्मजुत्तं भय मोह–हारय।
वस्सेय–पज्जंत–मुववास–जुत्तं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।8।।

(इति गोम्मटेस स्तुति)

गोमटेश स्तुति

– आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

चन्द्र समान सुमुख अति सुंदर, लोचन नील कमल दल रूप।
चंपक पुष्प पराजित होता, देख नाशिका का स्वरूप।।
कामदेव पद से शोभित हैं, बाहुबली है जिनका नाम।
विश्व वंद्य श्री गोमटेश पद, मेरा बारंबार प्रणाम।।1।।

जिनके स्वच्छ सुनिर्मल जल सम, शोभित सुन्दर उभय कपोल।
कर्ण कंध पर्यंत झूलते, बालों की संरचना गोल।।
गज सुण्डासम उभय भुजाएँ, गगन रूप शोभित अभिराम।
विश्व वंद्य श्री गोमटेश पद, मेरा बारंबार प्रणाम।।2।।

दिव्य शंख की शोभा को भी, जीत रहा है सुंदर कंठ।
विशद हिमालय की भांति है, वक्षस्थल जिनका उत्कंठ।।
अचल सुसुंदर कटि प्रदेश है, सुदृढ़ प्रेक्षणीय अभिराम।
विश्व वंद्य श्री गोमटेश पद, मेरा बारंबार प्रणाम।।3।।

विंध्यगिरि के अग्र भाग पर, शुभम् कांति से दमक रहे।
सब चैत्यों के शिखामणि हो, पूर्ण चाँद सम चमक रहे।।
तीन लोकवर्ती जीवों को, सुख देते अनुपम अभिराम।
विश्व वंद्य श्री गोमटेश पद, मेरा बारंबार प्रणाम।।4।।

लिपटी महत् लताएँ जिनके, महत् देह पर चारों ओर।
कल्पवृक्ष सम भवि जीवों को, कर देते हैं भाव विभोर।।
देवेन्द्रों के द्वारा अर्चित, चरण कमल जिनके अभिराम।
विश्व वंद्य श्री गोमटेश पद, मेरा बारंबार प्रणाम।।5।।

पूर्ण दिगंबर निर्भय साधक, जो हैं निज आतम के भक्त।
मन विशुद्ध जिनका वस्त्रों में, होता नहीं, कभी आसक्त।।

सर्पादि की फुंकारों से, कंपित न होते अभिराम।
विश्व वंद्य श्री गोमटेश पद, मेरा बारंबार प्रणाम।।6।।

स्वच्छ दृष्टि शुभ बुद्धि वाले, दोष मूल है मोह विहीन।
नाश किया उस महाबली को, सुख की आशा से भी हीन।।
किया पराजित भ्रात भरत को, शल्य रहित शोभित अभिराम।
विश्व वंद्य श्री गोमटेश पद, मेरा बारंबार प्रणाम।।7।।

सर्व परिग्रह रहित आप हैं, धन अरु धाम के त्यागी देव।
मद अरु मोह जीतने वाले, क्षायिक समदृष्टि हैं एव।।
एक वर्ष पर्यंत अखंडित, 'विशद' किया अनशन अभिराम।
विश्व वंद्य श्री गोमटेश पद, मेरा बारंबार प्रणाम।।8।।

(इति गोम्मटेस स्तुति)

श्री पार्श्वनाथस्तोत्रम्

नरेन्द्रं फणीन्द्रं सुरेन्द्रं अधीशं, शतेन्द्रं सु पूजैं भजैं नाय शीशं।।
मुनीन्द्रं गणेन्द्रं नमों जोड़ि हाथं, नमो देवदेवं सदा पार्श्वनाथं।।1।।

गजेन्द्रं मृगेन्द्रं गह्यो तू छुड़ावै, महा आगतैं नागतैं तू बचावै।।
महावीर तैं युद्ध में तू जितावै, महा रोगतैं बंधतैं तू छुड़ावै।।2।।

दुखी दुःखहर्ता सुखी सुखकर्ता, सदा सेवकों को महानन्द भर्ता।।
हरे यक्षराक्षस भूतं पिशाचं, विषं डाकिनीविघ्न के भय अवाचं।।3।।

दरिद्रीन को द्रव्य के दान दीने, अपुत्रीन को तू भले पुत्र कीने।।
महासंकटों से निकारै विधाता, सबै संपदा सर्व को देहि दाता।।4।।

महाचोर को वज्र को भय निवारे, महापुण्य के पुंजतै तू उबारै।।
महाक्रोध की अग्नि को मेघधारा, महालोभशैलेश को वज्र भारा।।5।।

महा मोह अंधेर को ज्ञान भानं, महाकर्म कांतार को दौ प्रधानं।।
किये नाग–नागिन अधोलोकस्वामी, हस्योमान तू दैत्य को हो अकामी।।6।।

तुही कल्पवृक्षं तुही कामधेनु, तुही दिव्य चिंतामणि नाग एनं।।
पशु नर्क के दुःखतैं तू छुड़ावै, महास्वर्गतै मुक्ति मैं तू बसावै।।7।।

करै लौह को हेम पाषाण नामी, रटै नाम सो क्यों न हो मोक्षगामी।।
करै सेव ताकी करैं देव सेवा, सुने वैन सोही लहै ज्ञान मेवा।।8।।

जपै जाप ताको नहीं पाप लागै, धरे ध्यान ताके सबै दोष भागै।।
बिना तोहि जाने धरे भव घनेरे, तुम्हारी कृपा तैं सरैं काज मेरे।।9।।

दोहा– गणधर इन्द्र न कर सकैं, तुम विनती भगवान।
'द्यानत' प्रीति निहारकैं, कीजे आप समान।।

।। इति समाप्तम् ।।

24 तीर्थंकर स्तवन

– आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

श्री आदीश जिनेन्द्र प्रभु, आदि ब्रह्म अवतार।
चरण वन्दना कर मिले, आदि धर्म आधार।।1।।

जीते विषय कषाय अरु, मद को जीता साथ।
अजिनाथ बनने झुका, अजित नाथ पद माथ।।2।।

सम्भव जिन सम्भाव से, पाए आत्म स्वभाव।
निज स्वभाव पा जाऊँ मैं, बने हृदय में भाव।।3।।

अभिनन्दन वन्दन करूँ, हमको करो निहाल।
अभिनन्दन मैं बन सकूँ, शीष झुकाता बाल।।4।।

सुमतिनाथ ने सुमति से, पाई सुमति महान।
सुमति प्राप्त हो सुमति से, दीजे यह वरदान।।5।।

पद्मप्रभु की पद्म सम, शुभ्र सुकोमल देह।
बनू पद्म सम मैं प्रभु, त्यागू गेह सनेह।।6।।

पार्श्व मणि फीकी रहे, जिन सुपार्श्व के पास।
हृदय बसे जिन देव जी, मम हो चरणों वास।।7।।

चन्द्र चरण में चिह्न है, वर्ण सुचन्द्र समान।
चन्द्रप्रभु के ध्यान से, हो आतम कल्याण।।8।।

सुभम् सुकोमल पुष्प सम, पुष्पदंत भगवान।
वर दे कर दो पुष्प सम, बन जाऊँ गुणवान।।9।।

अंतश्तल में तैरकर, शीतल हुए सुदेव।
मम उर भी शीतल बने, पाऊ चरण की सेव।।10।।

जिन श्रेयांस ने श्रेय से, किया कर्म का नाश।
निःश्रेयस मैं बन सकूँ, रहे चरण में वास।।11।।

तीन लोक में हुए हो, वासुपूज्य तुम पूज्य।
चरण शरण का दास यह, क्यों हो रहा अपूज्य।।12।।

कल मल सारा शांत कर, विमलनाथ जिनराज ।
माथ झुकाता भाव से, पद में सकल समाज।।13।।

गुण अनन्त की खान हैं, श्री अनन्त जिनराज।
हम अनन्त गुण पा सकें, होय सफल यह काज।।14।।

धर्म धुरन्धर धर्मधर, धर्मनाथ भगवान।
धर्म विशद मैं पा सकूँ, दो हमको यह दान।।15।।

क्रान्ति भ्रान्ति को मैटकर, हुए शांति के नाथ।
शान्तिनाथ के चरण में, झुका रहे हम माथ।।16।।

चक्री काम कुमार अरु, हुए तीर्थ के नाथ।
कुंथुनाथ जी शरण दो, कभी न छूटे साथ।।17।।

विरह किया वसु कर्म से, हुए धर्म के ईश।
अरहनाथ के चरण में, झुका रहे हम शीष।।18।।

मोह मल्ल को जीतकर, मल्लिनाथ के साथ।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ सकूँ, जोड़ रहा मैं हाथ।।19।।

मुनिसुव्रत जिनवर हुए, मुनिव्रतों को धार।
पूर्ण व्रतों को प्राप्त कर, भवदधि पाऊँ पार।।20।।

नील कमल पर शोभते, नमीनाथ भगवान।
सुगुण बनू तुम सा प्रभु, गुण अनन्त की खान।।21।।

राज्य तजा राजुल तजी, धार लिया वैराग्य।
नेमिनाथ तुम सा बनूँ, जगे सुभम सौभाग्य।।22।।

चिच्चिन्तामणि पार्श्वजिन, विघ्न विनाशक नाथ।
विघ्न हरण हर लो विघन, झुका चरण में माथ।।23।।

वर्धमान सन्मति प्रभु, वीर और अतिवीर।
महावीर करके कृपा, आन बँधाओ धीर।।24।।

मन वच तन से विमल हो, विमल बनू अनगार।
विमल सिन्धु भव सिन्धु में, दो हमको आधार।।25।।

भरत सिन्धु गुरुवर परम, वन्दन करूँ त्रिकाल।
जिन भक्ति युत चरण में, करते हैं नत भाल।।26।।

राग आग को छोड़कर, धरा दिगम्बर रूप।
विराग सिन्धु मैं पा सकूँ, निज आतम स्वरूप।।27।।

'विशद' भाव से किया है, जिन गुरु का गुणगान।
अक्षर पद की भूल को, पढ़ें विशद धीमान।।28।।

।। इति समाप्तम् ।।

करुणाष्टक

–आचार्य श्री विशदसागरजी

(तर्ज– नित देव मेरी आत्मा...)

त्रिभुवन गुरो ! जिनवर परम्, आनंद कारण आप्त हो।
मुझ दास पर करुणा करो, अतिशीघ्र मुक्ति प्राप्त हो।।
तुम तरण तारण हो प्रभु, अब शरण अपनी लीजिए।
करुणानिधि करुणा करो, भव पार हमको कीजिए।।1।।

हे देव अर्हत् ! जगत् की, दुःखमय दशा को जानकर।
हो गया हूँ निर्विक्त मैं, इस जगत् को पहिचानकर।।
हो जन्म न फिर से प्रभु, अब शरण अपनी लीजिए।
करुणानिधि करुणा करो, भव पार हमको कीजिए।।2।।

हे देव अर्हत् ! भव भयंकर, कूप में मैं गिर गया।
तुम योग्य हो उससे निकालो, कीजिए मुझ पर दया।।
मैं पुनर्पुन विनती ये करता, शरण अपनी लीजिए।
करुणानिधि करुणा करो, भव पार हमको कीजिए।।3।।

हे देव ! तुम करुणानिधि हो, जगत् में तुम शरण हो।
मैंने पुकारा आपको तुम, श्रेष्ठ तारण तरण हो।।
मोह रिपु ने मद दलित, मेरा किया सुन लीजिए।
करुणानिधि करुणा करो, भव पार हमको कीजिए।4।।

हे देव जिन ! पर के सताए, पुरुष पर करुणा करें।
ज्यों गाँवपति उर करुण होकर, और की विपदा हरें।।

त्रैलोक्यपति कर्मों से मेरी, आप रक्षा कीजिए।
करुणानिधि करुणा करो, भव पार हमको कीजिए।।5।।

हे देव ! मेरा एक ही, वक्तव्य में यह है कथन।
करके दया अब मेंट दो, इस जगत से जीवन मरण।।
जिससे प्रलापी हो गया मैं, खेद वह हर लीजिए।
करुणानिधि करुणा करो, भव पार हमको कीजिए।।6।।

हे देव जिन ! मैं जगत् के, संताप से संतप्त हूँ।
चरणों की शीतल छाँव को, पाकर हुआ मैं तृप्त हूँ।।
अमृतमयी करुणा की छाया, में मुझे ले लीजिए।
करुणानिधि करुणा करो, भव पार हमको कीजिए।।7।।

हे ! पद्मनंदि गुरू से, स्तुत्य जग में इक शरण।
मैं आपके करता हूँ भगवन्, चरण में शत्-शत् नमन्।।
मैं कहूँ क्या ? अति दास को, अपनी शरण ले लीजिए।
करुणानिधि करुणा करो, भव पार हमको कीजिए।।8।।

***

।। विशद वाणी ।।

B§gmZ A~ B©_mZ ~¡MH$a ImZo bJm h¡,
_§{Xa N>mo‹S>H$a _{Xamb` OmZo bJm h¡Ÿ&&
^m¡{VHVmHs MH$mMm¢Y _| BVZo Sy>~ JE h¢ bmoJ,
~mn-XmXm go ~‹S>m CÝh| én`m ZOa AmZo bJm h¡Ÿ&&

– आचार्य विशदसागर

श्री आदिनाथ चालीसा

शीश नवा अरिहंत को, सिद्धन करूँ प्रणाम।
उपाध्याय आचार्य का, ले सुखकारी नाम।।
सर्व साधु और सरस्वती, जिन मन्दिर सुखकार।
आदिनाथ भगवान को, मन मन्दिर में धार।।

।। चौपाई।।

जै जै आदिनाथ जिन स्वामी, तीनकाल तिहुँ जग में नामी।
वेष दिगम्बर धार रहे हो, करमों को तुम मार रहे हो।।
हो सर्वज्ञ बात सब जानों, सारी दुनियाँ को पहचानों।
नगर अजुध्या जो कहलाये, राजा नाभिराय बतलायें।।
मरूदेवी माता के उदर से, चैत वदी नवमी को जन्मे।
तुमने जग को ज्ञान सिखाया, कर्मभूमि का बीज उपाया।।
कल्पवृक्ष जब लगे विघटने, जनता आई दुखड़ा कहने।
सबका संशय जभी भगाया, सूर्य चन्द्र का ज्ञान कराया।।
खेती करना भी सिखलाया, न्याय दण्ड आदिक समझाया।
तुमने राज्य किया नीति का, सबक आपसे जग ने सीखा।।
पुत्र आपका भरत बताया, चक्रवर्ति जग में कहलाया।
बाहुबली जो पुत्र तुम्हारे, सबसे पहले मोक्ष सिधारे।।
सुता आपकी दो बतलाई, ब्राह्मी और सुन्दरी बतलाई।
उनको भी विद्या सिखलाई, अक्षर और गिनती बतलाई।।
एक दिन राज सभा के अन्दर, एक अप्सरा नाची रही कर।
आयु बहुत थोड़ी थी बाकी, इसलिए वह थोड़ा नाची।।
जभी मर गई जिसे देख कर, झट आया वैराग्य उमड़कर।
बेटों को झट पास बुलाया, राजपाट सब में बँटवाया।।

छोड़ सभी झंझट संसारी, वन जाने की करी तैयारी।
राव हजारों साथ सिधाये, राजपाट तज वन को धाये।।
लेकिन जब तुमने तप कीना, सबने अपना रस्ता लीन।
वेष दिगम्बर तजकर सबने, छाल आदि के कपड़े पहिने।।
भूख प्यास से जब घबराये, फल आदिक खा भूख मिटाये।
और धर्म इस भांति फलाये, जो अब दुनियाँ में दिखलाये।।
छै महीने तक ध्यान लगाये, फिर भोजन करने को आये।
भोजन विधि जाने नाहिं कोई, कैसे प्रभु का भोजन होई।।
इसी तरह बस चलते चलते, छै महीने भोजन को बीते।
नगर हस्तिनापुर में आये, राजा सोम श्रेयांस बताये।।
याद जभी पिछला भव आया, तुमको फौरन ही पड़गाया।
रस गन्ने का तुमने पाया, दुनिया को उपदेश सुनाया।।
तप कर केवलज्ञान उपाया, मोक्ष गये सब जग हर्षाया।
अतिशय युक्त तुम्हारा मन्दिर, एक है मरसलगंज के अन्दर।।
उसका यह अतिशय बतलाया, कष्टक्लेश का होय सफाया।
मानतुङ्ग पर दया दिखाई, जंजीरें सब काट गिराई।।
राज सभा में मान बढ़ाया, जैन धर्म जग में फैलाया।
मुझ पर भी महिमा दिखलाओ, कष्ट चन्द्र का दूर भगाओ।।

।। सोरठा ।।

नित चालीस ही बार, पाठ करे चालीस दिन।
खेवे धूप अपार, मरसलगंज में आय के।।
होय कुबेर समान, जन्म दरिद्री होय जो।
जिसके नहिं संतान, नाम वंश जग में चले।।

जाप :– ॐ ह्रीं अर्हं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

श्री पद्मप्रभ चालीसा

शीश नवा अरिहन्त को, सिद्धन करूँ प्रणाम।
उपाध्याय आचार्य का, ले सुखकारी नाम।।
सर्व साधु और सरस्वती, जिन मन्दिर सुखकार।
पद्मपुरी के 'पद्म' को मन मन्दिर में धार।।

।। चौपाई ।।

जय श्री पद्मप्रभ गुणधारी, भविजन के हो तुम हितकारी।
देवों के तुम देव कहाओ, पाप भक्त के दूर हटाओ।।
तुम जग के सर्वज्ञ कहाओ, छट्ठे तीर्थंकर कहलाओ।
तीन काल तिहुं जग की जानो, सब बातें क्षण में पहिचानो।।
वेष दिगम्बर धारण हारे, तुम से कर्म शत्रु भी हारे।
मूर्ति तुम्हारी कितनी सुन्दर, दृष्टि सुखद जमती नाशा पर।।
क्रोध मान मद लोभ भगाया, राग द्वेष का लेश न पाया।
वीतराग तुम कहलाते हो, सब जग के मन को भाते हो।।
कौशाम्बी नगरी कहलाए, राजा धारणजी बतलाए।
सुन्दर नारि सुसीमा उनके, जिसके उर से स्वामी जन्मे।।
कितनी लम्बी उमर कहाई, तीस लाख पूरव बतलाई।
इकदिन हाथी बंधा निरखकर, झट आया वैराग्य उमड़कर।।
कार्तिक सुदी त्रयोदश भारी, तुमने मुनिपद दीक्षाधारी।
सारे राजपाट को तज के, तभी मनोहर वन में पहुँचे।।
तप कर केवलज्ञान उपाया, चैत सुदी पन्दरस कहलाया।
इकसौदस गणधर बतलाये, मुख्य वज्र चामर कहलाये।।
लाखों मुनी अर्जिका लाखों, श्रावक और श्राविका लाखों।
असंख्यात तिर्यञ्च बताए, देवी देव गिनत नहीं पाए।।

फिर सम्मेद शिखर पर जाके, शिवरमणी को ली परणा के।
पंचमकाल महा दुखदाई, जब तुमने महिमा दिखलाई।।
जयपुर राज्य ग्राम बाडा है, स्टेशन शिवदासपुरा है।
मूला नाम जाट का लड़का, घर की नींव खोदने लागा।।
खोदत खोदत मूर्ति दिखाई, उसने जनता को बतलाई।
चिह्न कमल लख लोग लुगाई, पद्मप्रभ की मूर्ति बताई।।
मन में अति हर्षित होते हैं, अपने दिल का मल धोते हैं।
तुमने यह अतिशय दिखलाया, भूत-प्रेत को दूर भगाया।।
भूत-प्रेत दुःख देते जिसको, चरणों में लाते हैं उसको।
जब गंधोदक छींटा मारे, भूत-प्रेत तब आप बकारे।।
जपने से जब नाम तुम्हारा, भूत-प्रेत सब करे किनारा।
ऐसी महिमा बतलाते हैं, अन्धे भी आँखें पाते हैं।।
प्रतिमा श्वेतवर्ण कहलाये, देखत ही हृदय को भाये।
ध्यान तुम्हारा जो धरता है, इस भव से वह नर तरता है।।
अन्धा देखे गूंगा गाये, लंगड़ा पर्वत पर चढ़ जाये।
बहरा सुन-सुन कर खुश होवे, जिस पर कृपा तुम्हारी होवे।।

मैं हूँ स्वामी दास तुम्हारा, मेरी नैया करदो पार।
चालीसे को 'चन्द्र' बनावे, पद्मप्रभ को शीश नवावे।।

सोरठा

नित चालीसहिं बार, पाठ करे चालीस दिन।
खेय सुगन्ध अपार, पद्मपुरी में आय के।।
होय कुबेर समान, जन्म दरिद्री होय जो।
जिनके नहिं सन्तान, नाम वंश जग में चले।।

जाप :- ॐ ह्रीं अर्हं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः।

श्री चन्द्रप्रभु चालीसा

शीश नवा अरिहंत को, सिद्धन करूँ प्रणाम।
उपाध्याय आचार्य का, ले सुखकारी नाम।।
सर्व साधु और सरस्वती, जिन मन्दिर सुखकार।
चन्द्रपुरी के चन्द्र को, मन मन्दिर में धार।।

।। चौपाई।।

जय-जय स्वामी श्री जिन चन्दा, तुमको निरख भये आनन्दा।
तुम ही प्रभु देवन के देवा, करूँ तुम्हारे पद की सेवा।।
वेष दिगम्बर कहलाता है, सब जग के मन भाता है।
नाशा पर है दृष्टि तुम्हारी, मोहनि मूरति कितनी प्यारी।।
तीन लोक की बातें जानो, तीन काल क्षण में पहचानो।
नाम तुम्हारा कितना प्यारा, भूत प्रेत सब करें निवारा।।
तुम जग में सर्वज्ञ कहाओ अष्टम तीर्थङ्कर कहलाओ।
महासेन जो पिता तुम्हारे, लक्ष्मणा के दिल के प्यारे।।
तज वैजंत विमान सिधाये, लक्ष्मणा के उर में आये।
पोष वदी एकादश नामी, जन्म लिया चन्दा प्रभु स्वामी।।
मुनि समन्तभद्र थे स्वामी, उन्हें भस्म व्याधि बीमारी।
वैष्णव धर्म जभी अपनाया, अपने को पण्डित कहाया।।
कहा राव से बात बताऊँ, महादेव को भोग खिलाऊँ।
प्रतिदिन उत्तम भोजन आवे, उनको मुनि छिपाकर खावे।।
इसी तरह निज रोग भगाया, बन गई कंचन जैसी काया।
इक लड़के ने पता चलाया, फौरन राजा को बतलाया।।
तब राजा फरमाया मुनि को, नमस्कार करो शिवपिंडी को।
राजा से तब मुनि जी बोले, नमस्कार पिंडी नहिं झेले।।
राजा ने जंजीर मंगाई, उस शिवपिंडी में बंधवाई।
मुनि ने स्वयंभू पाठ बनाया, पिंडी फटी अचम्भा छाया।।

चन्द्रप्रभ की मूर्ति दिखाई, सब ने जय–जयकार मनाई।
नगर फिरोजाबाद कहाये, पास नगर चन्दवार बताये।।
चन्द्रसैन राजा कहलाया, उस पर दुश्मन चढ़कर आया।
राव तुम्हारी स्तुति गाई, सब फौजों को मार भगाई।।
दुश्मन को मालूम हो जावे, नगर घेरने फिर आ जावे।
प्रतिमा जमना में पधराई, नगर छोड़कर परजा धाई।।
बहुत समय ही बीता है कि, एक यती को सपना दीखा।
बड़े जतन से प्रतिमा पाई, मन्दिर में लाकर पधराई।।
वैष्णवों ने चाल चलाई, प्रतिमा लक्ष्मण की बतलाई।
अब तो जैनी जन घबरावें, चन्द्र प्रभु की मूर्ति बतावें।।
चिह्न चन्द्रमा का बतलाया, तब स्वामी तुमको था पाया।
सोनागिरि में सौ मन्दिर हैं, इक से बढ़कर इक सुन्दर हैं।।
समवशरण था यहाँ पर आया, चन्द्र प्रभु उपदेश सुनाया।
चन्द्र प्रभु का मन्दिर भारी, जिसको पूजे सब नर–नारी।।
सात हाथ की मूर्ति बताई, लाल रंग प्रतिमा बतलाई।
मन्दिर और बहुत बतलाये, शोभा वरणत पार न पाये।।
पार करो मेरी यह नैया, तुम बिन कोई नहीं खिवैया।
प्रभु मैं तुमसे कुछ नहीं चाहूँ, भव–भव में दर्शन पाऊँ।।
मैं हूँ स्वामी दास तिहारा, करो नाथ अब तो निस्तारा।
स्वामी आप दया दिखलाओ, चन्द्रदास को चन्द्र बनाओ।।

।। सोरठा ।।

नित चालीसहिं बार, पाठ करे चालीस दिन।
खेय सुगन्ध अपार, अहिक्षेत्र में आय के।।
होय कुबेर समान, जन्म दरिद्री होय जो।
जिसके नहिं संतान, नाम वंश जग में चले।।

जाप:ह्न ॐ ह्रीं अर्हं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नम:।

श्री पार्श्वनाथ चालीसा

शीश नवा अरिहंत को, सिद्धन करूँ प्रणाम।
उपाध्याय आचार्य का, ले सुखकारी नाम।।
सर्व साधु और सरस्वती, जिन मन्दिर सुखकार।
अहिच्छत्र और पार्श्व को, मन मन्दिर में धार।।

।। चौपाई ।।

पारसनाथ जगत हितकारी, हो स्वामी तुम व्रत के धारी।
सुर नर असुर करें तुम सेवा, तुम ही सब देवन के देवा।।
तुमसे करम शत्रु भी हारा, तुम कीना जग का निस्तारा।
अश्वसैन के राजदुलारे, वामा की आँखों के तारे।।
काशीजी के स्वामी कहाये, सारी परजा मौज उड़ाये।
इक दिन सब मित्रों को लेके, सैर करन को वन में पहुँचे।।
हाथी पर कसकर अम्बारी, इक जंगल में गई सवारी।
एक तपस्वी देखा वहाँ पर, उससे बोले वचन सुनाकर।।
तपसी ! तुम क्यों पाप कमाते, इस लक्कड़ में जीव जलाते।
तपसी तभी कुदाल उठाया, उस लक्कड़ को चीर गिराया।।
निकले नाग–नागनी कारे, मरने को थे निकट बिचारे।
रहम प्रभु के दिल में आया, तभी मंत्र नवकार सुनाया।।
मरकर वो पाताल सिधाये, पद्मावती धरणेन्द्र कहाये।
तपसी मरकर देव कहाया, नाम कमठ ग्रन्थों में गाया।।
एक समय श्री पारस स्वामी, राज छोड़कर वन की ठानी।
तप करते थे ध्यान लगाये, इक दिन कमठ वहाँ पर आये।।
फौरन ही प्रभु को पहिचाना, बदला लेना दिल में ठाना।
बहुत अधिक बारिश बरसाई, बादल गरजे बिजली गिराई।।
बहुत अधिक पत्थर बरसाये, स्वामी तन को नहीं हिलाये।
पद्मावती धरणेन्द्र भी आये, प्रभु की सेवा में चित लाये।।

पद्मावती ने फन फैलाया, उस पर स्वामी को बैठाया।
धरणेन्द्र के फन फैलाया, प्रभु के सर पर छत्र बनाया।
कर्मनाश प्रभु ज्ञान उपाया, समवशरण देवेन्द्र रचाया।।
यही जगह अहिच्छत्र कहाये, पात्र केशरी जहाँ पर आये।
वह पण्डित ब्राह्मण विद्वाना, जिनको जाने सकल जहाना।।
शिष्य पाँच सौ संग में आए, सब कट्टर ब्राह्मण कहलाये।
पार्श्वनाथ का दर्शन पाया, सबने जैन धरम अपनाया।।
अहिच्छत्र थी सुन्दर नगरी, जहाँ सुखी थी परजा सगरी।
राजा श्री वसुपाल कहाये, वो इक जिन मन्दिर बनवाये।।
प्रतिमा पर पालिश करवाया, फौरन इक मिस्त्री बुलवाया।
वह मिस्तरी माँस खाता था, इससे पालिश गिर जाता था।।
मुनि ने उसे उपाय बताया, पारस दर्शन व्रत दिलवाया।
मिस्त्री ने व्रत पालन कीना, फौरन ही रंग चढ़ा नवीना।।
गदर सतावन का किस्सा है, इक माली को यो लिक्खा है।
माली एक प्रतिमा को लेकर, झट छुप गया कुए के अन्दर।।
उस पानी का अतिशय भारी, दूर होये सारी बीमारी।
जो अहिच्छत्र हृदय से ध्यावे, सो नर उत्तम पदवी पावे।।
पुत्र सम्पदा की बढ़ती हो, पापों की इकदम घटती हो।
है तहसील आँवला भारी, स्टेशन पर मिले सवारी।।
रामनगर इक ग्राम बराबर, जिसको जाने सब नारी नर।
चालीसे को 'चन्द्र' बनाये, हाथ जोड़कर शीश नवाये।।

।। सोरठा।।

नित चालीसहिं बार, पाठ करे चालीस दिन।
खेय सुगन्ध अपार, अहिच्छत्र में आय के।।
होय कुबेर समान, जन्म दरिद्री होय जो।
जिसके नहीं सन्तान, नाम वंश जग में चले।।

जाप :– ॐ ह्रीं अर्हं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

श्री महावीर चालीसा

शीश नवा अरिहन्त को, सिद्धन करूँ प्रणाम।
उपाध्याय आचार्य का, ले सुखकारी नाम।।
सर्व साधु और सरस्वती, जिन मन्दिर सुखकार।
महावीर भगवान को, मन मन्दिर में धार।।

।। चौपाई।।

जय महावीर दयालु स्वामी, वीर प्रभु तुम जग में नामी।
वर्धमान है नाम तुम्हारा, लगे हृदय को प्यारा–प्यारा।।
शाँति छवि और मोहनी मूरत, शान हंसीली सोहनी सूरत।
तुमने वेष दिगम्बर धारा, कर्म शत्रु भी तुम से हारा।।
क्रोध मान और लोभ भगाया, माया मोह ने तुमसे डर खाया।
तू सर्वज्ञ सर्व का ज्ञाता, तुझको दुनिया से क्या नाता।।
तुझमें नहीं राग और द्वेष, वीतराग तू हितोपदेश।
तेरा नाम जगत में सच्चा, जिसको जाने बच्चा–बच्चा।।
भूत प्रेत तुम से भय खावें, व्यन्तर राक्षस सब भग जावें।
महा व्याध मारी न सतावे, महा विकराल काल डर खावे।।
काला नाग होय फनधारी, या हो शेर भयंकर भारी।
ना हो कोई बचाने वाला, स्वामी तुम्हीं करो प्रतिपाला।।
अग्नि दावानल सुलग रही हो, तेज हवा से भड़क रही हो।
नाम तुम्हारा सब दुःख खोवे, आग एकदम ठण्डी होवे।।
हिंसामय था भारत सारा, तब तुमने कीना निस्तारा।
जन्म लिया कुण्डलपुर नगरी, हुई सुखी तब प्रजा सगरी।।
सिद्धारथ जी पिता तुम्हारे, त्रिशला की आँखों के तारे।
छोड़ सभी झंझट संसारी, स्वामी हुए बाल ब्रह्मचारी।।

पंचम काल महा दुख:दाई, चाँदनपुर महिमा दिखलाई।
टीले में अतिशय दिखलाया, एक गाय का दूध गिराया।।
सोच हुआ मन में ग्वाले के, पहुँचे एक फावड़ा लेके।
सारा टीला खोद बगाया, तब तुमने दर्शन दिखलाया।।
जोधराज को दुख ने घेरा, उसने नाम जपा जब तेरा।
ठंडा हुआ तोप का गोला, तब सब ने जयकारा बोला।।
मन्त्री ने मन्दिर बनवाया, राजा ने भी दरब लगाया।
बड़ी धर्मशाला बनवाई, तुमको लाने को ठहराई।।
तुमने तोड़ी बीसों गाड़ी, पहिया मसका नहीं अगाड़ी।
ग्वाले ने जो हाथ लगाया, फिर तो रथ चलता ही पाया।।
पहिले दिन वैशाख वदी के, रथ जाता है तीर नदी के।
मीना गूजर सब ही आते, नाच-कूद सब चित्त उमगाते।।
स्वामी तुमने प्रेम निभाया, ग्वाले का तुम मान बढ़ाया।
हाथ लगे ग्वाले का जब ही, स्वामी रथ चलता है तब ही।।
मेरी है टूटी सी नैया, तुम बिन कोई नहीं खिवैया।
मुझ पर स्वामी जरा कृपा कर, मैं हूँ प्रभु तुम्हारा चाकर।।
तुम से मैं अरु कछु नहीं चाहूँ, जन्म-जन्म तेरे दर्शन पाऊँ।
चालीसे को 'चन्द्र' बनावे, वीर प्रभु को शीश नमावे।।

।। सोरठा ।।

नित चालीसहिं बार, पाठ करे चालीस दिन।
खेय सुगन्ध अपार, वर्धमान के सामने।।
होय कुबेर समान, जन्म दरिद्री होय जो।
जिसके नहिं सन्तान, नाम वश जग में चले।।

जाप :- ॐ ह्रीं अर्हं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः।

पंच परमेष्ठी की आरती

इह विधि मंगल आरती कीजै, पंच परम पद भज सुख लीजे।
पहली आरती श्री जिनराजा, भव-दधि पार उतार जिहाजा। इह विधि...।।
दूसरी आरती सिद्धन केरी, सुमरन करत मिटै भव फेरी। इह विधि...।।
तीसरी आरती सूर मुनीन्दा, जनम मरण दुःख दूर करिन्दा। इह विधि...।।
चौथी आरती श्री उवज्झाया, दर्शन देखत पाप पलाया। इह विधि...।।
पांचवी आरती साधु तिहारी, कुमति-विनाशन शिव अधिकारी। इह विधि...।।
छट्ठी ग्यारह प्रतिमा धारी, श्रावक वंदों आनन्दकारी। इह विधि...।।
सातवी आरती श्री जिनवाणी, 'द्यानत' सुरग-मुकति सुख दानी। इह विधि...।।
संध्या करके आरती कीजे, अपनो जनम सफल कर लीजे। इह विधि...।।
सोने का दीप कपूर की बाती, जग मग ज्योति जले सारी राती।इह विधि...।।

।। इति समाप्तम् ।।

आरती श्री चन्द्रप्रभ जी

म्हारा चन्द्रप्रभुजी की सुन्दर, मूरत म्हारे मन भाई जी।
सावन सुदी दशमी तिथि आई, प्रकट त्रिभुवन राई जी।।
अलवर प्रान्त में नगर तिजारा, दरशे देहरे मांहीजी।
सीता सती ने तुमको ध्याया, अग्नि में कमल रचायाजी।।
मैनासती ने तुमको ध्याया, पति का कष्ट हटाया जी।
सोमा सती ने तुमको ध्याया, नाग का हार बनाया जी।।
मानतुंग मुनि तुमको ध्याया, तालों को तोड़ भगायाजी।
जो भी दुखिया दर पर आया, उसका कष्ट मिटाया जी।
अंजन चोर ने तुमको ध्याया, सूली से अधर उठाया जी।
समोशरण में जो कोई आया, उसको पार लगाया जी।
ठाड़ो सेवक अर्ज करे है, जामन-मरण मिटाओ जी।
नवयुवक मण्डल तुमको ध्यावे, बेड़ा पार लगाओ जी।।

।। इति समाप्तम् ।।

आरती श्री शांतिनाथ जी

जय जिनवर देवा प्रभु जय जिनवर देवा।।टेक।।
शांति विधाता शिव सुखदाता शांतिनाथ देवा।।

ऐरा देवी धन्य जगत में, जिन उर आन बसे।
विश्वसेन कुल नभ में मानों पूनम चन्द्र लसे।।टेक।।

कृष्ण चतुर्दशी जेठ मास की आनन्द करतारी।
हस्तिनापुर में जन्म महोत्सव ठाठ रचे भारी।।टेक।।

बाल्य काल की लीला अद्‍भुत सुर नर मन भाई।
न्याय नीति से राज्य कियो चिर सबको सुखदाई।।टेक।।

पञ्चम चक्री काम द्वादशम सोलम तीर्थंकर।
त्रय पदधारी तुम्हीं मुरारी ब्रह्मा शिव शंकर।।टेक।।

भवतन भोग समझ क्षणभंगुर मुनि व्रतधार लिए।
षट् खण्ड नवनिधि रतन चतुर्दश तृणवत् छोड़ दिये।।टेक।।

दुर्द्धर तपकर कर्म निवारे केवल ज्ञान लहा।
दे उपदेश भविक जन बोधे ये उपकार किया।।टेक।।

शांतिनाथ है नाम तिहारा सब जग शांति करो।
अरज करे 'शिवराम' चरण में भव आताप हरो।।टेक।।

।। इति समाप्तम् ।।

।। विशद वाणी ।।

em§{V go em§{V H$mo nm J`o em§{V {OZŸ&
~rVo h¢ em§{V go qO‹XJr Ho$ ^r {XZŸ&&
em§{V {OZ H$s {_bo em§{V go eV²-eaUŸ&
Û` MaU _| "{deX' em§{V {OZHo$ Z_Z²Ÿ&&

– आचार्य विशदसागर

आरती श्री पार्श्वनाथ जी

ॐ जय पारस देवा, प्रभु जय पारस देवा।
सुर नर मुनि जन तुम चरनन की, करते नित सेवा।।ॐ जय.।।

पोष वदी ग्यारस काशी में, आनन्द अति भारी।
अश्वसेन घर वामा के उर, लीनों अवतारी।।ॐ जय.।।

श्याम वर्ण नव हस्त काय पग, उरग लखन सोहे।
सुरकृत अति अनुपम पट भूषण, सबका मन मोहे।।ॐ जय.।।

जलते देख नाग नागनि को, पढ़ नवकार दिया।।ॐ जय.।।
हरा कमठ का मान ज्ञान का, भानु प्रकाश किया।।ॐ जय.।।

मात पिता तुम स्वामी मेरे, आश करूँ किसकी।
तुम बिन दूजा और न कोई, शरण गहूँ जिसकी।।ॐ जय.।।

तुम परमातम, तुम अध्यातम तुम अन्तर्यामी।
स्वर्ग मोक्ष पदवी के दाता, त्रिभुवन के स्वामी।।ॐ जय.।।

दीनबंधु दुःख हरण जिनेश्वर, तुम ही हो मेरे।
दो शिवपुर का वास दास यह, द्वार खड़ा तेरे।।ॐ जय.।।

विषय विकार मिटाओ मन का, अर्ज सुनो दाता।
सेवक द्वय कर जोड़ प्रभू के, चरणों चित् लाता।।ॐ जय.।।

।। इति समाप्तम् ।।

।। विशद वाणी ।।

kmZ Á`mo{V Obr nmíd© Ho$ Zm_ naŸ&
~Z J`o nmíd© {OZ ew^ H$m`© H$aŸ&&
nmíd© {OZ h¡ "{deX' OJ _| VaU VaUŸ&
hmo à^w Vd MaU _| g_m{Y _aUŸ&&

– आचार्य विशदसागर

आरती श्री महावीर स्वामी

ॐ जय महावीर प्रभो, स्वामी जय महावीर प्रभो।
कुण्डलपुर अवतारी, त्रिशलानन्द विभो।। ॐ जय.।।
सिद्धारथ घर जन्मे, वैभव था भारी, स्वामी वैभव था भारी।
बाल ब्रह्मचारी व्रत, पाल्यो तपधारी।। ॐ जय.।।
आतम ज्ञान विरागी, समदृष्टि धारी।
माया मोह विनाशक, ज्ञान ज्योति जागी।। ॐ जय.।।
जग में पाठ अहिंसा, आप ही विस्तार्यो।
हिंसा पाप मिटाकर, सुधर्म परिचार्यो।। ॐ जय.।।
यह विधि चांदनपुर में, अतिशय दर्शाओ।
ग्वाल मनोरथ पूरयो, दूध गाय पायो।। ॐ जय.।।
प्राणदान मंत्री को, तुमने प्रभु दीना।
मंदिर तीन शिखर का, निर्मित है कीना।। ॐ जय.।।
जयपुर नृप भी तेरे, अतिशय के सेवी।
एक ग्राम तिन दीनों, सेवा हित यह भी।। ॐ जय.।।
जो कोई तेरे दर पर, इच्छा कर आवे।
धन सुत सब कुछ पावे, संकट मिट जावै।। ॐ जय.।।
निश दिन प्रभु मंदिर में, जगमग ज्योति जरै।
हरि प्रसाद चरणों में, आनन्द मोद भरै।। ॐ जय.।।

।। इति समाप्तम् ।।

।। विशद् वाणी ।।

gÝ_{V àmá H$a gÝ_{V hmo J`oŸ&
ñd`§ go ñd`§ _| ñd`§ hr Imo J`oŸ&&
hmo _{V gZ_{V ho _hmdra ! {OZŸ&
Vd MaU Û` _| hmo {deX {gag: Z_Z²Ÿ&&

– आचार्य विशदसागर

देव स्तुति

प्रभु पतित–पावन – मैं अपावन, चरण आयो शरण जी।
यों विरद आप निहार स्वामी, मेट जामन–मरण जी।।
तुम ना पिछान्यो आन मान्यो, देव विविध प्रकार जी।
या बुद्धि सेती निज न जान्यो, भ्रम गिन्यो हितकार जी।।
भव विकट वन में कर्म बैरी, ज्ञान–धन मेरो हर्‌यो।
सब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय, अनिष्ट गति धरतो फिर्‌यो।।
धन घड़ी यों धन दिवस, यों धन्य जनम मेरो भयो।
अब भाग्य मेरो उदय आयो, दरश प्रभु को लख लयो।।
छवि वीतरागी नग्न मुद्रा, दृष्टि नासा पै धरै।
वसु प्रातिहार्य अनन्त गुण जुत, कोटि रवि छवि को हरै।।
मिट गयो तिमिर मिथ्यात्व मेरो, उदय रवि आतम भयो।
मो उर हर्ष ऐसो भयो, मनु रङ्क चिन्तामणि लयो।।
दोउ हाथ जोड़ नवाऊँ मस्तक, वीनऊँ तुम चरण जी।
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन, सुनहुँ तारण तरण जी।।
जाचूँ नहीं सुरवास पुनि, नर–राज परिजन साथ जी।
'बुध' जाँचहूँ तुम भक्ति भव भव, दीजिये शिव नाथ जी।।

।। इति समाप्तम् ।।

।। विशद् वाणी ।।

N>mo<S>H$a Am J`o gmao OJ H$s eaUŸ&
_¡Q> Xmo A~ h_mam ^r OÝ_ _aUŸ&&
A{^Z§XZ H$a aho à^w nX _| "{deX'Ÿ&
_¡Q> Xr H$_© _oao bJo Omo AeXŸ&&

– आचार्य विशदसागर

व्रतों के जाप्य मंत्र

नंदीश्वर व्रत (आष्टाह्निक व्रत) जाप्य मंत्रह्न

1. ॐ ह्रीं नंदीश्वरसंज्ञाय नमः 2. ॐ ह्रीं अष्टमहाविभूतिसंज्ञाय नमः 3. ॐ ह्रीं त्रिलोकसारसंज्ञाय नमः 4. ॐ ह्रीं चतुर्मुखसंज्ञाय नमः 5. ॐ ह्रीं पंचमहालक्षणसंज्ञाय नमः 6. ॐ ह्रीं स्वर्गसोपानसंज्ञाय नमः 7. ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राय नमः 8. ॐ ह्रीं इन्द्रध्वजसंज्ञाय नमः ।

रविव्रत जाप्य मंत्रह्न ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपार्श्वनाथाय नमः।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम् अर्हं श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

रविव्रत लघु जाप्य मन्त्र :– ॐ ह्रीं अर्हं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथाय नमः।

सोलहकारण व्रत जाप्य मंत्रह्न

1. ॐ ह्रीं अर्हं दर्शनविशुद्धिभावनायै नमः 2. ॐ ह्रीं अर्हं विनयसंपन्नताभावनायै नमः 3. ॐ ह्रीं अर्हं शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै नमः 4. ॐ ह्रीं अर्हं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै नमः 5. ॐ ह्रीं अर्हं संवेगभावनायै नमः 6. ॐ ह्रीं अर्हं शक्तितस्त्यागभावनायै नमः 7. ॐ ह्रीं अर्हं शक्तितस्तपोभावनायै नमः 8. ॐ ह्रीं अर्हं साधुसमाधिभावनायै नमः 9. ॐ ह्रीं अर्हं वैयावृत्यकरणभावनायै नमः 10. ॐ ह्रीं अर्हं अर्हद्भक्तिभावनायै नमः 11. ॐ ह्रीं अर्हं आचार्यभक्तिभावनायै नमः 12. ॐ ह्रीं अर्हं बहुश्रुतभक्तिभावनायै नमः 13. ॐ ह्रीं अर्हं प्रवचनभक्तिभावनायै नमः 14. ॐ ह्रीं अर्हं आवश्यकापरिहाणिभावनायै नमः 15. ॐ ह्रीं अर्हं मार्गप्रभावनाभावनायै नमः 16. ॐ ह्रीं अर्हं प्रवचनवत्सलत्वभावनायै नमः।

दशलक्षणव्रत जाप्य मंत्रह्न

1. ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमक्षमाधर्माङ्गाय नमः
2. ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तममार्दवधर्माङ्गाय नमः
3. ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमार्जवधर्माङ्गाय नमः

4. ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमशौचधर्माङ्गाय नमः
5. ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमसत्यधर्माङ्गाय नमः
6. ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमसंयमधर्माङ्गाय नमः
7. ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमतपोधर्माङ्गाय नमः
8. ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमत्यागधर्माङ्गाय नमः
9. ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमाकिंचनधर्माङ्गाय नमः
10. ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय नमः

पंचमेरु व्रत जाप्य मंत्रह्न

1. ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो नमः
2. ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो नमः
3. ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो नमः
4. ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो नमः
5. ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो नमः

आकाश पंचमी व्रत जाप्य मंत्रह्न

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो यक्षयक्षीसहितेभ्यो नमः।

निर्दोष सप्तमी व्रत की जाप्यह्न

ॐ ह्रां ह्रीं सर्वविघ्ननिवारकाय श्री शांतिनाथस्वामिने नमः स्वाहा।

सुगन्धदशमीव्रत जाप्य मंत्र–

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री शीतलनाथ ईश्वरयक्षमानवीयक्षीसहिताय नमः स्वाहा।

रत्नत्रय जाप्य मंत्रह्नह्न ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य नमः।

अनन्तचतुर्दशी व्रत जाप्य मंत्र–

(1) ॐ ह्रीं अर्हं हं स अनन्तकेवलिने नमः।

(2) ॐ नमोऽर्हते भगवते अणंताणंतसिज्झधम्मे भगवतो महाविज्जा-महाविज्जा अणंताणंतके वलिए अणंतके वलणाणे अणंत-केवलदंसणेअणुपुज्जवासणे अणंते अणंतागमकेवली स्वाहा।

रोहिणी व्रत जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।

मुक्तावली व्रत जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं वृषभजिनाय नमः।

णमोकार व्रत जाप्य मंत्र–

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं, ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं, ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं।

जिनगुणसंपत्ति व्रत जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसंपद्भ्यो नमः।

सप्तपरमस्थान व्रत जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय नमः।

ऋषिमण्डल जाप्य मंत्र– ॐ ह्रां ह्रिं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रं ह्रः असिआउसा सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यः ह्रीं नमः।

सिद्धचक्र जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा नमः।

शांति मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथाय जगत्शांतिकराय सर्वोपद्रवशांतिम् कुरु कुरु ह्रीं नमः।

आरोग्य प्राप्ति मंत्रह्न ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं।

कार्यसिद्धि मंत्रह्न ॐ ह्रीं अर्हं श्री आदिनाथजिनेंद्राय नमः।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवाय सर्वसिद्धिकरण सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः।

अयोध्या तीर्थक्षेत्र मंत्रह्न

ॐ ह्रीं अनंतानंततीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्या पुर्यो नमः।

सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र मंत्र –

ॐ ह्रीं अनंतानंत तीर्थंकर निर्वाण भूमि सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्राय नमः।

व्रतों के एवं अन्य महत्त्वपूर्ण मंत्र

सुख शान्ति हेतु प्रतिदिन जाप करें

रविवार को – ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

सोमवार को – ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः।

मंगलवार को – ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः।

बुधवार को – ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

गुरुवार को – ॐ ह्रीं श्री सुरगुरुदोष निवारण अष्टजिनेन्द्रेभ्यो नमः।

शुक्रवार को – ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः।

शनिवार को – ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः।

मनोवाँछित हेतु जाप– ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा मम सर्वविघ्न शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

सर्वशान्ति हेतु जाप– ॐ ह्रीं जगत्शांतिकराय श्रीशान्तिनाथाय सर्वोपद्रवशान्तिं कुरु कुरु ह्रीं नमः स्वाहा।

इन्द्रध्वजविधान का जाप्य मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयसर्वजिनबिम्बेभ्यो नमः।

पुष्पांजलि व्रत जाप्य मन्त्र :– ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धि अशीति-जिनालयेभ्यो नमः।

रोगनाशक मन्त्र :– ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कलिकुण्डदण्डस्वामिने नमः। आरोग्य परमैश्वर्यं कुरु कुरु स्वाहा। यह मन्त्र श्री पार्श्वनाथजी की प्रतिमा के सामने शुद्ध भाव और क्रियापूर्वक 108 बार जपना चाहिये।

मंगलदायक मन्त्र :– ॐ ह्रीं वरे सुवरे असिआउसा नमः।

एकान्त में प्रतिदिन 108 बार धूप के साथ, शुद्ध भावपूर्वक जपें।

सुखदायक मन्त्र :– ॐ ह्रीं असिआउसा नमः स्वाहा।

प्रातः पूर्व दिशा में मुख करके प्रतिदिन 108 बार जपना चाहिये।

सर्वसिद्धिदायक मन्त्रः– ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्री वृषभनाथ तीर्थंकराय नमः। (समस्त कार्यों की सिद्धि के लिए प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक 108 बार जपना चाहिये।)

ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः असि आ उसा सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ह्रीं परमशान्ति विधायक श्री शान्तिनाथाय नमः।

रोग निवारक मन्त्र :– ॐ ह्रीं सकल–रोगहराय श्री सन्मति देवाय नमः।

सिद्धचक्र विधान के समय का जाप्य मन्त्र :–

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः स्वाहा।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः स्वाहा।

त्रैलोक्य मण्डल विधान का जाप्य मन्त्र :– ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अनाहत–विद्याधिपति त्रैलोक्यनाथाय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

लघुशान्ति मंत्र :– ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

वेदी प्रतिष्ठा कलशारोहण तथा बिम्बस्थापन के समय का जाप्य मन्त्रः– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं असिआउसा अनाहत विद्यायै णमो अरिहंताणं ह्रौं सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

मनोरथ सिद्धिदायक मन्त्र :– ॐ ह्रीं श्रीं हूँ नमः।

महामृत्युंजय मन्त्र :– ॐ ह्राँ णमो अरिहंताणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं, ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं, ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं। मम सर्वग्रहारिष्टान् निवारय निवारय अपमृत्युं घातय–घातय सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

विधिह्न दीप जलाकर धूप देते हुए नैष्ठिक रहकर इस मन्त्र का स्वयं जाप करें या अन्य–द्वारा करावें। यदि अन्य व्यक्ति जाप करें तो 'मम' के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम जोड़ लेंह्न अमुकस्य सर्वग्रहारिष्टान निवारय आदि। इस मन्त्र का सवा लाख जाप करने से ग्रहबाधा दूर हो जाती है। कम से कम इस मन्त्र का 31 हजार जाप करना चाहिए। जाप के अनन्तर दशांश आहुति देकर हवन भी करें।

***

भक्ष–अभक्ष्य

जो पदार्थ भक्षण करनेह्न खाने योग्य नहीं होते हैं उन्हें अभक्ष्य कहते हैं। इसके पाँच भेद हैंह्न त्रस हिंसाकारक, बहुस्थावर हिंसाकारक, प्रमादकारक, अनिष्ट और अनुपसेव्य।

(1) जिस पदार्थ के खाने से त्रस जीवों का घात होता है उसे त्रस हिंसाकारक अभक्ष्य कहते हैं। जैसेह्न पंच उदंबर फल, घुना अन्न, अमर्यादित वस्तु जिनमें बरसात में फफूँदी लग जाती है ऐसी कोई भी खाने की चीजें, चौबीस घन्टे के बाद का मुरब्बा, अचार, बड़ी, पापड़ और द्विदल आदि के खाने से त्रस जीवों का घात होता है। कच्चे दूध में या दही में दो दाल वाले मूँग, उड़द, चना आदि अन्न की बनी चीज मिलाने से द्विदल बनता है।

(2) जिस पदार्थ के खाने से अनंत स्थावर जीवों का घात होता है उसे स्थावर हिंसाकारक अभक्ष्य कहते हैं। जैसेह्न प्याज, लहसन, आलू, मूली, गाजर आदि कंदमूल तथा तुच्छ फल खाने से अनंतों स्थावर जीवों का घात हो जाता है।

एक निगोदिया जीव के शरीर में अनंतानंत सिद्धों से भी अनंतगुणे जीव रहते हैं और एक आलू आदि में अनंत निगोदिया जीव हैं। इसलिए इन कंदमूल आदि का त्याग कर देना चाहिए।

(3) जिसके खाने से प्रमाद या काम विकार बढ़ता है वे प्रमाद–कारक अभक्ष्य हैं। जैसेह्न शराब, भंग, तम्बाकू, गाँजा और अफीम आदि नशीली चीजें। ये स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक हैं।

(4) जो पदार्थ भक्ष्य होने पर भी अपने लिए हितकर न हों वे अनिष्ट हैं। जैसेह्न बुखार वाले को हलुआ एवं जुकाम वाले को ठण्डी चीजें हितकर नहीं हैं।

(5) जो पदार्थ सेवन करने योग्य न हों वे अनुपसेव्य हैं। जैसेह्न लार, मूत्र आदि पदार्थ।

अभक्ष्य बाईस भी माने गये हैंह्न

ओला घोर बड़ा निशि भोजन, बहुबीजा बेंगन संधान।
बड़ पीपर ऊमर कठऊमर, पाकर फल या होय अजान।।
कंदमूल माटी विष आमिष, मधु माखन अरु मदिरापान।
फल अतितुच्छतुषार चलित रस, ये बाईस अभक्ष्य बखान।।

ओला, दहीबड़ा (कच्चे दूध से जमाये दही का बड़ा), रात्रि भोजन, बहुबीजा, बैंगन, अचार (चौबीस घण्टे बाद का), बड़, पीपल, ऊमर, कठूमर, पाकर, अजानफल (जिसको हम पहचानते नहीं ऐसे कोई फल, पत्ते आदि), कंदमूल (मूली, गाजर आदि जमीन के भीतर लगने वाले), मिट्टी, विष (शंखिया, धतूरा आदि), आमिष–मांस, शहद, मक्खन, मदिरा, अतितुच्छ फल (जिसमें बीज नहीं पड़े हों ऐसे बिलकुल कच्चे छोटे–छोटे फल), तुषार–बर्फ और चलित रस (जिनका स्वाद–बिगड़ जाये ऐसे फटे हुए दूध आदि) ये सब अभक्ष्य हैं।

दही बिलौने के बाद मक्खन को निकाल कर 48 मिनट के अंदर ही गर्म कर लेना चाहिए अन्यथा वह अभक्ष्य हो जाता है अथवा कच्चे दूध से भी जो यंत्र से मक्खन निकाला जाता है उसमें भी कच्चे दूध की मर्यादा एक मुहुर्त 48 मिनट की है। उसी मर्यादा के अन्दर मक्खन निकाल कर जल्दी से गर्म करके घी बना लेना चाहिए।

बाजार की बनी हुई चीजों में मर्यादा आदि का विवेक न रहने से, अनछने जल आदि से बनाई होने से सब अभक्ष्य हैं। अर्क, आसव, शर्बत आदि भी अभक्ष्य हैं। चमड़े में रखे घी, हींग, पानी आदि भी अभक्ष्य हैं। इसलिए इन अभक्ष्यों का त्याग कर देना चाहिए।

प्रयोग में नहीं लेहह्न रविवार को नमक, सोमवार को हरी, मंगलवार को मीठा, बुद्धवार को घी, गुरुवार को दूध, शुक्रवार को दही एवं शनिवार को तेल।

भक्ष्य पदार्थों की मर्यादा

क्र. सं.	पदार्थ	अगहन से फागुन तक शीतलकाल	चैत्र से आषाढ़ तक ग्रीष्मकाल	श्रावण से कार्तिक तक वर्षाकाल
1.	बूरा	एक माह	पन्द्रह दिन	सात दिन
2.	दूध (दूहने के बाद)			
	कच्चा	दो घड़ी	दो घड़ी	दो घड़ी
	उबालने के बाद	चौबीस घण्टे	चौबीस घण्टे	चौबीस घण्टे
3.	दही (गर्म दूध का)	चौबीस घण्टे	चौबीस घण्टे	चौबीस घण्टे
4.	छाछ (बिलोते समय			
	पानी डालें तो)	बारह घण्टे	बारह घण्टे	बारह घण्टे
	बाद में पानी मिलायें तो	48 मिनट	48 मिनट	48 मिनट
	कच्चे दूध के दही से			
	बनी छाछ	अभक्ष्य	अभक्ष्य	अभक्ष्य
5.	घी, गुड़, तेल	एक साल	एक साल	एक साल
	स्वाद बिगड़ने पर	अभक्ष्य	अभक्ष्य	अभक्ष्य
6.	आटा बेसन,			
	पिसे मसाले	सात दिन	पाँच दिन	तीन दिन
7.	पिसा नमक पीसकर गरम	48 मिनट	48 मिनट	48 मिनट
	किया नमक	चौबीस घण्टे	चौबीस घण्टे	चौबीस घण्टे
	मसाला मिला नमक	छह घण्टे	छह घण्टे	छह घण्टे
8.	खिचड़ी, रायता,			
	कढ़ी, दाल, सब्जी	छह घण्टे	छह घण्टे	छह घण्टे
9.	रोटी, पूड़ी, हलवा,			
	बड़ा, कचौरी	बारह घण्टे	बारह घण्टे	बारह घण्टे
10.	मौन वाले पकवान	चौबीस घण्टे	चौबीस घण्टे	चौबीस घण्टे
11.	बिना पानी वाले पदार्थ	सात दिन	पाँच दिन	तीन दिन
12.	मीठे पदार्थ मिला दही	48 मिनट	48 मिनट	48 मिनट
13.	गुड़ मिला दही व छाछ	अभक्ष्य	अभक्ष्य	अभक्ष्य
14.	रस चलित	स्वाद बदल गया हो, बदबूदार पदार्थ–सदैव त्याज्य हैं।		

भजन

आके जाता रहा, आके आता रहा ।
यौहि चक्कर चौरासी के खाता रहा ।।
इसी आवागमन के उलट-फेर में ।
वक्त हीरा सा यौंही गवाता रहा- गवाता रहा ।। (टेक) ।।

खेल में तेरी बचपन कहानी गई-कहानी गई ।
जोश में होश खोकर जवानी गई-जवानी गई ।।
फिर जिया तो जिया बूढ़ा होकर जिया ।
तेल बिन ज्यों दीया टिमटिमाता रहा-टिमटिमाता रहा ।। (टेक) ।।

जब खत्म सफ़र श्वासों का होने लगा-होने लगा ।
चलके नजदीक मंजिल पर रोने लगा-रोने लगा ।।
कहा पगले मन तेरी श्वासों का धन ।
विषय भोगों में योंही गवाता रहा-गवाता रहा ।। (टेक) ।।

साथ तेरे हाथी रथ घोड़े यहाँ ।
नोटो के बंडल जो जोड़े यहाँ ।।
अंत में सब के सब छोड़े यहाँ ।
हाथ में हाथ रख तिलमिलाता रहा-तिलमिलाता रहा ।। (टेक) ।।

– महावीरप्रसाद जैन, कांकरोली, जिला-राजसमन्द (राज.)

239

श्री चौबीस तीर्थंकरों का विविध परिचय*

क्र.	तीर्थंकरों के नाम	चिह्न	जन्म स्थान	काया	पितृ नाम	मातृ नाम	आयुष्य	गर्भ	जन्म	तप	केवलज्ञान	मोक्ष	मोक्ष स्थल
1.	वृषभनाथ	बैल	अयोध्या	500 धनुष्य	नाभिराजा	मरूदेवी	84 लाख पूर्वायुष्य	आषाढ़ वदी 2	चैत्र वदी 9	चैत्र वदी 9	फाल्गुन वदी 11	माघ वदी 14	कैलाश पर्वत
2.	अजितनाथ	गज	अयोध्या	450 धनुष्य	जितशत्रु	विजयसेना	72 लाख पूर्वायुष्य	ज्येष्ठ पूर्णिमा 30	माघ सुदी 10	माघ सुदी 10	पौष सुदी 11	चैत्र सुदी 5	सम्मेदशिखर
3.	सम्भवनाथ	घोड़ा	श्रावस्ती	400 धनुष्य	जितारी	सुसेना	60 लाख पूर्वायुष्य	फाल्गुन सुदी 8	कार्तिक सुदी 15	आश्विन सुदी 15	कार्तिक वदी 4	चैत्र सुदी 6	सम्मेदशिखर
4.	अभिनन्दननाथ	बन्दर	अयोध्या	350 धनुष्य	संवर	सिद्धार्थ	50 लाख पूर्वायुष्य	वैशाख सुदी 6	माघ सुदी 12	माघ सुदी 12	पौष सुदी 14	वैशाख सुदी 6	सम्मेदशिखर
5.	सुमतिनाथ	चकवा	अयोध्या	300 धनुष्य	मेघप्रभु	मंगला	40 लाख पूर्वायुष्य	श्रावण सुदी 2	चैत्र सुदी 11	चैत्र सुदी 11	चैत्र सुदी 11	चैत्र सुदी 11	सम्मेदशिखर
6.	पद्मप्रभनाथ	कमल	कौशाम्बी	250 धनुष्य	धारण	सुशीमा	30 लाख पूर्वायुष्य	माघ वदी 6	कार्तिक सुदी 13	कार्तिक सुदी 13	चैत्र पूर्णिमा 15	फाल्गुन वदी 4	सम्मेदशिखर
7.	सुपार्श्वनाथ	साँथिया	बनारस	200 धनुष्य	प्रतिष्ठित	पृथ्वी	20 लाख पूर्वायुष्य	भाद्रपद सुदी 6	ज्येष्ठ सुदी 12	ज्येष्ठ सुदी 12	फाल्गुन वदी 6	फाल्गुन वदी 7	सम्मेदशिखर
8.	चन्द्रप्रभनाथ	चन्द्रमा	चन्द्रपुरी	150 धनुष्य	महासेन	सुलक्षण	10 लाख पूर्वायुष्य	चैत्र वदी 5	पौष वदी 11	पौष वदी 11	फाल्गुन वदी 7	फाल्गुन सुदी 7	सम्मेदशिखर
9.	पुष्पदन्तनाथ	मगर	काकन्दी	100 धनुष्य	सुग्रीव	रमा	2 लाख पूर्वायुष्य	फाल्गुन वदी 9	मगसिर सुदी 1	मगसिर सुदी 1	कार्तिक सुदी 2	आश्विन सुदी 8	सम्मेदशिखर
10.	शीतलनाथ	कल्पवृक्ष	महिलपुर	90 धनुष्य	दृढ़रथ	सुनन्दा	1 लाख पूर्वायुष्य	चैत्र वदी 8	माघ वदी 12	माघ वदी 12	पौष वदी 14	आश्विन सुदी 8	सम्मेदशिखर
11.	श्रेयांसनाथ	गेण्डा	सिंहपुर	80 धनुष्य	विमल	विमला	84 लाख पूर्वायुष्य	ज्येष्ठ वदी 8	फाल्गुन वदी 11	फाल्गुन वदी 11	माघ अमावस्या	श्रावण पूर्णिमा	सम्मेदशिखर
12.	वासुपूज्यनाथ	भैंसा	चम्पापुरी	70 धनुष्य	वासुपूज्य	विजया	72 लाख पूर्वायुष्य	आषाढ़ वदी 6	फाल्गुन वदी 14	फाल्गुन वदी 14	भाद्रपद वदी 2	भादो सुदी 14	चम्पापुरी
13.	विमलनाथ	सूकर	कम्पिला	60 धनुष्य	सुव्रतवर्मा	श्यामा	60 लाख पूर्वायुष्य	ज्येष्ठ वदी 10	माघ सुदी 4	माघ सुदी 4	माघ सुदी 6	आषाढ़ वदी 6	सम्मेदशिखर
14.	अनन्तनाथ	सेही	अयोध्या	50 धनुष्य	हरिषेण	सुरजा	50 लाख पूर्वायुष्य	कार्तिक वदी 1	ज्येष्ठ वदी 12	ज्येष्ठ वदी 12	चैत्र अमावस्या	चैत्र वदी 30	सम्मेदशिखर
15.	धर्मनाथ	वज्र	रत्नपुर	45 धनुष्य	भानु	सुव्रता	10 लाख पूर्वायुष्य	वैशाख सुदी 8	माघ सुदी 13	माघ सुदी 13	पौष पूर्णिमा	ज्येष्ठ सुदी 4	सम्मेदशिखर
16.	शान्तिनाथ	हिरण	हस्तिनापुर	40 धनुष्य	विश्वसेन	ऐरा	1 लाख पूर्वायुष्य	भाद्र वदी 7	ज्येष्ठ वदी 14	ज्येष्ठ वदी 14	पौष सुदी 10	ज्येष्ठ वदी 14	सम्मेदशिखर
17.	कुन्थुनाथ	बकरा	हस्तिनापुर	35 धनुष्य	शूरराजा	श्रीमती	95 हजार वर्षायुष्य	श्रावण वदी 10	वैशाख सुदी 1	वैशाख सुदी 1	चैत्र सुदी 3	वैशाख सुदी 1	सम्मेदशिखर
18.	अरहनाथ	मच्छ	हस्तिनापुर	30 धनुष्य	सुदर्शन	मित्रा	80 हजार वर्षायुष्य	फाल्गुन सुदी 3	मगसिर सुदी 14	मगसिर सुदी 10	कार्तिक वदी 12	चैत्र वदी 30	सम्मेदशिखर
19.	मल्लिनाथ	कलश	मिथिला	25 धनुष्य	कुंभ	प्रजावती	55 हजार वर्षायुष्य	चैत्र सुदी 1	मगसिर सुदी 11	मगसिर सुदी 11	पौष वदी 2	फाल्गुन सुदी 5	सम्मेदशिखर
20.	मुनिसुव्रतनाथ	कछुआ	राजगृह	20 धनुष्य	सुमन्न	श्यामा	30 हजार वर्षायुष्य	श्रावण वदी 2	वैशाख वदी 12	वैशाख वदी 10	वैशाख वदी 9	फाल्गुन वदी 12	सम्मेदशिखर
21.	नमिनाथ	नीलकमल	मिथिला	15 धनुष्य	विजयरथ	विपुला	10 हजार वर्षायुष्य	आश्विन वदी 2	आषाढ़ वदी 10	आषाढ़ वदी 10	मगसिर सुदी 11	वैशाख सुदी 14	सम्मेदशिखर
22.	नेमिनाथ	शंख	शौरीपुर	10 धनुष्य	समुद्रविजय	शिवादेवी	1 हजार वर्षायुष्य	कार्तिक सुदी 6	श्रावण सुदी 6	श्रावण सुदी 6	आश्विन सुदी 1	आषाढ़ सुदी 8	गिरनार पर्वत
23.	पार्श्वनाथ	सर्प	बनारस	9 हाथ	अश्वसेन	वामादेवी	100 वर्षायुष्य	वैशाख वदी 2	पौष वदी 11	पौष वदी 11	चैत्र वदी 4	श्रावण सुदी 7	सम्मेदशिखर
24.	महावीर	सिंह	कुण्डलपुर	7 हाथ	सिद्धार्थ	त्रिशला	72 वर्षायुष्य	आषाढ़ सुदी 6	चैत्र सुदी 13	मगसिर वदी 10	वैशाख सुदी 10	कार्तिक अमावस्या	पावापुरी

*** पंचकल्याणक तिथियों के लिये 'वर्त्तमान चतुर्विंशति जिनपूजा' रचियता कविवर श्री वृन्दावनजी को आधार माना गया है।**